E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com website:www.adhuniksamachar.com

# आधुनिक समाचार

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

वर्ष -12 अंक - 176 | प्रयागराज, शुक्रवार 30 अक्टूबर, 2026 | पृष्ठ- 8 | मूल्य : 3.00 रूपये

## नेतन्याहू बहुमत से दूर, फिर भी सरकार बना सकते हैं,आइजनकोट के पास भी सत्ता में आने के 3 रास्ते

तेल अवीव। इजराइल में 90 प्रतिशत से ज्यादा वोटों की गिनती पूरी हो गई है। इसके बाद भी सरकार बनाने का रास्ता साफ नहीं हो पाया है। प्रधानमंत्री नेतन्याहू और विपक्षी नेता गादी आइजनकोट, दोनों के गठबंधन बहुमत से दूर हैं। इजराइली संसद में 120 सीटें हैं। सरकार बनाने के लिए कम से कम 61 सीटें चाहिए। हालांकि, नेतन्याहू इससे कम सीटें होने पर भी सरकार बना सकते हैं। इसके लिए उन्हें 19 सीटों के साथ किंगमेकर बनकर उभरी अरब पार्टियों की जरूरत भी नहीं है। नेतन्याहू को सत्ता से हटाने की कोशिश कर रहे गादी आइजनकोट गठबंधन की उम्मीदें भी कायम हैं। 48 सीटों में आगे चल रहे इस गठबंधन के पास सरकार बनाने के 3 रास्ते हैं। नेतन्याहू के 3 विकल्पः-1. विपक्षी खेमे के सांसदों का समर्थन जुटाना-नेतन्याहू विपक्षी गठबंधन में शामिल किसी पार्टी या उसके कुछ सांसदों को अपने साथ लाने की कोशिश कर सकते हैं। इसके लिए उन्हें सरकार में शामिल होने का प्रस्ताव देने या



उनकी कुछ मांगें मानने की जरूरत पड़ सकती है। अगर विपक्षी खेमे के कुछ सांसद विश्वास मत में नेतन्याहू का समर्थन करते हैं या मतदान से दूर रहते हैं, तो उनके लिए सरकार बनाने का रास्ता आसान हो सकता है। हालांकि, सहयोगी का नेतन्याहू के पक्ष में जाना राजनीतिक रूप से मुश्किल हो सकता है। अभी किसी खास विपक्षी नेता के पाला बदलने की पुष्टि नहीं हुई है। 2. राष्ट्रीय एकता सरकार बनानाः-नेतन्याहू दूसरी पार्टियों के साथ मिलकर विपक्षी नेताओं ने चुनाव में नेतन्याहू को सत्ता से हटाने का लक्ष्य रखा था। इसलिए उनके किसी राष्ट्रीय एकता सरकार बनाने की कोशिश भी कर सकते हैं। इसमें उनके मौजूदा दक्षिणपंथी और धार्मिक सहयोगियों के साथ विपक्ष के कुछ नेता भी शामिल हो सकते हैं। पूर्व प्रधानमंत्री नफ्ताली बेनेट या गादी आइजनकोट जैसे नेताओं की भूमिका इस विकल्प में अहम हो सकती है। लेकिन इसके लिए प्रधानमंत्री पद, सैन्य सेवा से जुड़े नियमों और दूसरी नीतियों पर समझौता करना होगा। आइजनकोट और नेतन्याहू के बीच राजनीतिक मतभेद इस रास्ते की बड़ी बाधा हैं। इसके अलावा, नेतन्याहू के अति-दक्षिणपंथी सहयोगियों को भी विपक्षी नेताओं के साथ सत्ता साझा करना मंजूर होना जरूरी नहीं है। 3. अल्पमत सरकार चलानाः-तीसरा विकल्प ऐसी सरकार बनाना है, जिसके पास अपने गठबंधन में 61 सीटें न हों, लेकिन वह विश्वास मत हासिल कर ले।आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..

## स्पेन में हाई स्पीड ट्रेनें टकराईं, 68 की हुई मौत,इन ट्रेनों की एवरेज स्पीड 200किमी/घंटा से ज्यादा

मैड्रिड। स्पेन के टोलेडो प्रांत में बुधवार को दो हाई स्पीड ट्रेनें टकरा गईं। डीडी न्यूज के मुताबिक, हादसे में 68 लोगों की



मौत हो गई, जबकि 179 लोग घायल हुए हैं। राहत और बचाव के लिए इमरजेंसी और मेडिकल टीमें मौके पर पहुंचीं। स्पेनिश मीडिया के मुताबिक, हादसा स्थानीय समयानुसार सुबह 9 बजे मोरा और ओरगाज कस्बों के बीच हुआ। एक ट्रेन धीमी गति से चल रही थी, तभी पीछे से तेज रफ्तार में आ रही दूसरी ट्रेन उससे टकरा गई। टक्कर इतनी तेज थी कि कई डिब्बे बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गए। हादसे के बाद राजधानी मैड्रिड को दक्षिणी अंदालूसिया क्षेत्र से जोड़ने वाली रेल लाइन बंद कर दी गई। दोनों ट्रेनें सरकारी कंपनी रेनफे और निजी कंपनी इर्यो की थीं। इन ट्रेनों की रफ्तार आमतौर पर 200 किमी/घंटे से ज्यादा होती है। राहत और बचाव कार्य जारीः-स्पेन के प्रधानमंत्री पेद्रो सांचेज ने कहा कि इस हादसे की खबर सुनकर वे सदमे में हैं। राहत और बचाव दल मौके पर मौजूद हैं और हादसे में प्रभावित लोगों की मदद कर रहे हैं। टोलेडो के पास उर्दा शहर के मेयर मैनुअल गालान ने बताया कि बचाव दल ने उनसे घायलों के इलाज और देखभाल के लिए एक स्पोर्ट्स हॉल तैयार रखने को कहा है। मैड्रिड में ट्रेन यात्रियों का इंतजार बढ़ाः- यह साफ नहीं है कि हादसा किस वजह से हुआ। जांच की जाएगी कि ट्रेन समय पर क्यों नहीं रुकी। क्या सिग्नल सिस्टम में खराबी थी या ड्राइवर ब्रेक लगाने में चूक गया, इसकी भी जांच होगी। जांच में यह भी देखा जाएगा कि टक्कर से पहले ये सिस्टम काम कर रहे थे या नहीं। रिपोर्ट के मुताबिक, रेनफे ट्रेन का ड्राइवर अभी लापता है। ट्रेन ड्राइवरों के संगठनों ने हादसे को असामान्य बताया है। राजधानी मैड्रिड को जोड़ने वाली ट्रेन सर्विस बंद होने की वजह से यात्रियों को लंबा इंतजार करना पड़ रहा है। मैड्रिड के स्टेशनों पर यात्री ट्रेनों के इंतजार में खड़े हैं। 9 महीने पहले भी इर्यो और रेनफे की ट्रेनें टकराई थीं:- स्पेन में इसी साल जनवरी में भी इन्हीं दोनों कंपनियों की ट्रेनें टकराई थीं। हादसा अंदालूसिया के अदामुज के पास हुआ था। इसमें 46 लोगों की मौत हुई थी। इर्यो कंपनी की हाई-स्पीड ट्रेन मालागा से मैड्रिड जा रही थी। ट्रेन के कुछ डिब्बे पटरी से उतरकर दूसरी पटरी पर चले गए थे और सामने से आ रही रेनफे की ट्रेन से टकरा गए थे। लोगों ने बताया था कि टक्कर इतनी जोरदार थी कि उन्हें भूकंप जैसा झटका महसूस हुआ था।

## कैप्टन मच्छर के सिर पर टांकों के गहरे निशान दिखे,हमलावर पायलट ने कुल्हाड़ी से कई वार किए थे यूएई के सर्वोच्च सम्मानों में से एक मिला

अबू धाबी। भारतीय पायलट कैप्टन स्मित मच्छर के सिर पर टांकों के कई निशान दिखे हैं। और दुबई के शासक शेख मोहम्मद बिन राशिद अल मकतूम भी मौजूद थे। यूएई के नेताओं



ब्रिटिश नेता टॉमी रॉबिन्सन ने उनकी यह तस्वीर सोशल मीडिया पर शेयर की है। कैप्टन मच्छर को संयुक्त अरब अमीरात ने भी सर्वोच्च सम्मानों में से एक 'जायद 2- फर्स्ट क्लास' से सम्मानित किया है। यूएई के राष्ट्रपति शेख मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान ने कैप्टन मच्छर को सम्मानित करते हुए गले लगाया। फ्लाईदुबई फ्लाइट के पायलट मच्छर ने 30 सितंबर को प्लेन क्रैश कराने की कोशिश नाकाम कर दी थी। यह प्लेन दुबई से तेल अवीव जा रही था। इस दौरान को-पायलट ने उन पर हमला कर दिया था। यूएई के नेताओं ने कहा- कैप्टन मच्छर पर गर्व हैः- राष्ट्रपति बिन जायद ने फ्लाइट के क्रू के सदस्यों को भी सम्मानित किया। इस दौरान यूएई के उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री ने कैप्टन मच्छर और क्रू के सदस्यों की हिम्मत और जिम्मेदारी की तारीफ की। उन्होंने कहा कि मुश्किल हालात में भी क्रू ने यात्रियों की सुरक्षा को सबसे ज्यादा महत्व दिया। दुबई के क्राउन प्रिंस शेख हमदान ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखाः- 'कैप्टन स्मित मच्छर ने हिम्मत, जिम्मेदारी और इंसानी जान की परवाह करने की मिसाल पेश की। हमें गर्व है कि वे हमारी टीम का हिस्सा हैं, हमारे देश की कहानी का हिस्सा हैं और यूएई की पहचान का हिस्सा हैं।' कैप्टन मच्छर जब चोटों का इलाज करा रहे थे, तब दुबई के क्राउन प्रिंस शेख हमदान उनसे मिलने पहुंचे थे। उन्होंने कैप्टन की हिम्मत और लोगों की जान बचाने के प्रयासों की तारीफ की थी।

## सर्बिया में इजराइली दूतावास के बाहर पुलिसकर्मी पर हमला,नाबालिग चाकू लेकर आया

### 'अल्लाहु अकबर' का नारा लगाकर अटैक किया; पुलिस ने मार गिराया

बेलग्रेड। सर्बिया की राजधानी बेलग्रेड में बुधवार को इजराइली दूतावास के बाहर एक नाबालिग ने दो चाकू लेकर पुलिसकर्मी पर



हमला कर दिया। उसने 'अल्लाहु अकबर' का नारा लगाया। जवाब में पुलिसकर्मी ने गोली चलाई, जिससे हमलावर की मौत हो गई। घटना के बाद सर्बिया में सुरक्षा का स्तर बढ़ाकर रेड कर दिया गया, जो देश में खतरे का सबसे ऊंचा स्तर है। हमलावर का आईसिस का समर्थक होने का शकः- सर्बिया के कार्यवाहक गृह मंत्री इविका डाचिच ने बताया कि हमले में पुलिसकर्मी के सिर पर मामूली चोट आई है। उन्होंने कहा कि घटना के बाद अहम जगहों पर पुलिस की तैनाती बढ़ाई जाएगी। एपी के मुताबिक, सुरक्षा एजेंसियां पहले से ही हमलावर पर नजर रख रही थीं। उस पर आतंकी संगठन इस्लामिक स्टेट (आईसिस) का समर्थक होने का शक था। आरोप है कि उसने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर आईसिस का काला झंडा भी दिखाया था। अधिकारियों ने इस घटना की जांच आतंकी हमले के तौर पर शुरू की है। गृह मंत्री के मुताबिक, हमलावर नाबालिग था और उसकी पहचान अभी नहीं हो पाई है। दो साल में दूसरी बार दूतावास के बाहर हमलाः-बेलग्रेड में इजराइली दूतावास के बाहर सुरक्षा कर्मियों पर हमले की यह दो साल में दूसरी घटना है।आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..

## सिंगर नील यंग ने ट्रम्प की टीम पर किया केस,बिना अनुमति गाना बजाने पर मांगे रु95 करोड़,पहले भी किया था मुकदमा

वॉशिंगटन डीसी। अमेरिकी-कनाडाई सिंगर नील यंग ने सोमवार को डोनाल्ड ट्रम्प की पॉलिटिकल एक्शन कमेटी ट्रम्प 47 कमेटी इंक. पर 10 मिलियन



डॉलर यानी भारतीय रुपए में लगभग 95.10 करोड़ रुपए का मुकदमा किया है। अमेरिका के वर्जीनिया राज्य में दायर मुकदमे में आरोप लगाया गया है कि 12 अक्टूबर को ओहायो के यंगस्टाउन में कमेटी ने मिडटर्म चुनावी रैली में ट्रम्प के मंच पर आने के समय उनका गाना 'रॉकिन इन द फ्री वर्ल्ड' बजाया। यंग का कहना है कि इस गाने का इस्तेमाल करने के लिए लाइसेंस जरूरी था। उन्होंने कमेटी को ऐसा लाइसेंस नहीं दिया और न ही देने की इच्छा जताई। यह यंग की ट्रम्प के खिलाफ इसी गाने के बिना इजाजत इस्तेमाल को लेकर दूसरी कानूनी चुनौती है। यंग ने इससे पहले 2020 में ट्रम्प पर केस किया था, जिसे बाद में सेटलमेंट से सुलझा लिया गया था। नए मुकदमे में आरोप लगाया गया कि ट्रम्प ने समझौते की शर्तों का उल्लंघन करते हुए फिर से यह गाना बजाना शुरू कर दिया। गाने को लेकर नील यंग का पक्षः-मुकदमे में कहा गया कि 1989 का यह गाना अमेरिकी राजनीतिक बयानों के खोखले वादों और गरीब, बेघर व भुला दिए गए लोगों की मुश्किल जिंदगी के बीच का फर्क दिखाता है।

मुकदमे के मुताबिक, गाने के बोल सड़क पर दिखने वाली परेशानियों की तस्वीर पेश करते हैं।आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..

## मुंबई एयरपोर्ट पर सिस्टम ठप, जरुरी काम मैन्युअली कर रहें- 327 फ्लाइट्स में देरी हुई

मुंबई/नयी दिल्ली। मुंबई इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर



मंगलवार को एक घंटे से ज्यादा सिस्टम आउटेज रहा।सोर्स के मुताबिक स्टाफ को मैन्युअल चेक-इन पर स्विच करना पड़ा। फ्लाइट राडार 24 के मुताबिक, औसत डिपार्चर डिले 50 मिनट रहा। रात 9:30 बजे तक 327 फ्लाइट्स देरी से उड़ान भर सकीं। गौरतलब है कि 1 घंटे के आउटेज का असर 5-6 घंटे तक रहता है, क्योंकि हर फ्लाइट का टाइम स्लॉट पीछे खिसक जाता है। इसलिए 327 फ्लाइट 50 मिनट लेट हुईं।

## इजराइल चुनाव में 77.7फीसदी मतदान 27 साल के बाद सबसे ज्यादा,नेतन्याहू ने महिलाओं की फोटो के साथ लिखा- मुस्लिम इलाकों में ज्यादा वोटिंग

तेल अवीव। इजराइल में मंगलवार को संसदीय चुनाव के दौरान बंपर वोटिंग हुई है। केंद्रीय चुनाव समिति के मुताबिक, रात 10 बजे तक 77.7फीसदी मतदान हुआ। यह 1999 के बाद सबसे ज्यादा है। इजराइल में सबसे ज्यादा मतदान का रिकॉर्ड 79.9फीसदी है, जो 1988 के चुनाव में बना था। हालांकि अभी भी कई जगह वोटों की गिनती जारी है। ज्यादा मतदान को देखते हुए इस बार यह रिकॉर्ड टूटने की संभावना जताई जा रही है। इससे पहले नेतन्याहू ने मुस्लिम महिलाओं की फोटो पोस्ट करते हुए समर्थकों से ज्यादा से ज्यादा वोट करने की अपील की। उन्होंने एक्स चैनल-14 का एक फुटेज शेयर किया। इसमें दो पोलिंग बूथ की तुलना की गई है। नेतन्याहू ने लिखाः- 'अरब (मुस्लिम) इलाकों में सामान्य से ज्यादा वोटिंग हो रही है, जबकि दक्षिणपंथी मतदाता कम संख्या में वोट डालने पहुंच रहे हैं। यह इमरजेंसी है, हमारे यहूदी देश का भविष्य दांव पर है। तुरंत



बाहर निकलें और वोट डालें। हमें अब जागना होगा, घर पर नहीं बैठना है।' पीएम नेतन्याहू 4 ओपिनियन पोल में पिछड़ेः- इस बार नेतन्याहू के बजाय पूर्व सेना प्रमुख गादी आइजनकोट प्रधानमंत्री बनने के सबसे ज्यादा चांस है। छह में से चार ओपिनियन पोल में आइजनकोट के गठबंधन को ज्यादा सीटें दी गई हैं। वहीं नेतन्याहू के गठबंधन को एक पोल में बढ़त और एक पोल में बहुमत मिला है। इजराइल की संसद में कुल 120 सीटें हैं। सरकार बनाने के लिए कम से कम 61 सीटों की जरूरत होती है। इजराइल के 76 साल के इतिहास में आज तक किसी भी राजनीतिक पार्टी ने अकेले बहुमत हासिल नहीं किया है। इजराइल में लोग किसी नेता को नहीं, बल्कि उसकी पार्टी को वोट देते हैं। चुनाव से पहले हर पार्टी अपने उम्मीदवारों की एक सूची बनाती है। पूरे देश में पार्टी को मिले वोटों के आधार पर तय होता है कि उसे संसद में कितनी सीटें मिलेंगी। लेकिन संसद में सीट पाने के लिए एक शर्त है। किसी पार्टी को कुल वैध वोटों में से कम से कम 3.25इ वोट हासिल करने होते हैं। इससे कम वोट मिलने पर पार्टी को संसद में कोई सीट नहीं मिलती। पार्टी के कौन से उम्मीदवार सांसद बनेंगे, इसका फैसला उम्मीदवारों की लिस्ट से होता है।आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..

## केंद्रीय कर्मचारियों को दिवाली गिफ्ट, महंगाई भत्ते में बढ़ोतरी का ऐलान

नयी दिल्ली। केंद्र सरकार ने दीवाली से पहले अपने कर्मचारियों को बड़ा तोहफा दे दिया है. मोदी कैबिनेट की बैठक में सरकार ने कर्मचारियों के महंगाई भत्ते में बढ़ोतरी का ऐलान कर दिया है. आइये जानें कितना बढ़ा डीए दीवाली से चंद दिन पहले केंद्रीय कर्मचारियों को बड़ी खुशखबरी मिली है. मोदी सरकार ने आज कैबिनेट की बैठक में डीए यानी महंगाई भत्ते में बढ़ोतरी का ऐलान कर दिया है. इसके लिए सरकार ने 10016 करोड़ रुपए मंजूर किए हैं। केंद्र सरकार में पदस्थ कर्मचारी इसका बड़ी ही बेसब्री से कई दिनों से इंतजार कर रहे थे. 28 अक्टूबर को हुई केंद्र सरकार की कैबिनेट की बैठक में फैसला- कर्मचारियों के 3फीसदी महंगाई भत्ते बढ़ाने की मांग को हरी झंडी मिल गई है. जिसके बाद कर्मचारियों का महंगाई भत्ता 60फीसदी से 63फीसदी हो गया है.क्या है महंगाई भत्ता? डीए यानी महंगाई भत्ता सरकारी कर्मचारियों को




दिया जाने वाला वो भत्ता है जो उन्हें अलग से मिलता है. ये महंगाई भत्ता हर साल बढ़ती महंगाई को देखते हुए संशोधित किया जाता है. ये महंगाई भत्ता बेसिक सैलरी के अलावा होता है. मान लीजिए किसी व्यक्ति की बेसिक सैलरी 25000 रुपये है, तो उसका महंगाई भत्ता 63फीसदी के हिसाब से अब 15750 रुपये होगा. इसका मतलब है कि कर्मचारी की सैलरी 40750 रुपये होगी.साल में दो बार बढ़ता है डीए-डीए यानी डियरनेस अलाउंस साल में दो बार बढ़ता है. केंद्र सरकार के द्वारा जनवरी और जुलाई में महंगाई भत्ते को बढ़ाए जाने का प्रस्ताव रखा जाता है. जिस पर जनवरी के प्रस्ताव पर मार्च या अप्रैल में होने वाली कैबिनेट की बैठक में फैसला किया जाता है. तो वहीं जुलाई में रखे जाने प्रस्ताव पर सितंबर या अक्तूबर में होने वाली बैठक में फैसला किया जाता है. सरकार हमेशा एक तय फॉर्मूले के आधार पर डीए की दर में बदलाव करती है. इसलिए डीए में हर बार एक जैसी बढ़ोतरी नहीं होती है. बता दें कि इससे पहले भी मोदी सरकार के दौर में साल 2014 से अब तक कई बार महंगाई भत्ता बढ़ाया जा चुका है. इससे पहले सरकार ने साल 2014 में 7फीसदी महंगाई भत्ता बढ़ाया था. जिसके बाद तीन सालों तक लगातार 6फीसदी इजाफा महंगाई भत्ते में किया गया. हालांकि कोरोना काल में केंद्र सरकार ने महंगाई भत्ते में बढ़ोतरी को फ्रीज कर दिया था. जिसे बाद में किस्त के रूप में दिया गया.

## ज्ञानेश कुमार के खिलाफ इंडिया ब्लॉक पब्लिक महाभियोग कार्यक्रम करेगी

नयी दिल्ली। विपक्षी गठबंधन इंडिया ब्लॉक शुक्रवार को मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के खिलाफ दिल्ली में पब्लिक महाभियोग प्रोग्राम करेगा। दूसरी जगह पर परमिशन नहीं मिलने के बाद अब यह कार्यक्रम दोपहर 3:30 बजे 10 राजाजी मार्ग पर होगा। इसमें राहुल गांधी समेत विपक्षी नेता शामिल होंगे।इंडिया ब्लॉक एसआईआर और वोटरों के नाम काटे जाने के खिलाफ प्रदर्शन कर रहा है। ये कार्यक्रम विपक्ष के 1 नवंबर को 'दिल्ली चलो' मार्च और रामलीला मैदान में जनसभा से पहले होगा। राहुल गांधी ने गुरुवार को छात्र संगठनों से भी इस मार्च में आने की अपील की है। उन्होंने एक्स पर वीडियो जारी कर कहा कि पुलिस या लाठीचार्ज की चिंता नहीं करें। घबराने की जरूरत नहीं है। यह मार्च लोकतंत्र बचाने, वोट चोरी रोकने और संविधान की रक्षा के लिए है। राहुल बोले- ये किसी राजनीतिक पार्टी का मार्च नहीं:- राहुल ने कहा कि यह किसी एक राजनीतिक पार्टी का मार्च नहीं, बल्कि भारत की आत्मा को बचाने का मार्च है। यह मार्च भारतीय संविधान और राष्ट्र की रक्षा के लिए है।

## नागपुर में जीत के बाद कांग्रेस का बीजेपी पर पलटवार,कहा- फडणवीस ने ट्वीट डिलीट किया

### एमएलसी चुनाव पर पीएम का पोस्ट शेयर किया था

नागपुर। महाराष्ट्र के नागपुर एमएलसी चुनाव में कांग्रेस ने लगातार दूसरी बार जीत दर्ज की है। इस जीत के बाद कांग्रेस ने मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस पर तंज कसा। पार्टी ने दावा किया कि फडणवीस ने चुनाव के पूरे नतीजे आने से पहले सोशल मीडिया पर पोस्ट किया था, लेकिन बाद में डिलीट कर दिया। कांग्रेस ने कहा- फडणवीस ने चुनाव के पूरे नतीजे आने से पहले ही बड़ा तीर चलाने के अंदाज में ट्वीट कर दिया। लेकिन उनका तीर उनके सीने में ही जा लगा। दावे के मुताबिक, फडणवीस ने पीएम का पोस्ट शेयर करते हुए लिखा था- एकदम जोरो! कम से कम कांग्रेस किसी एक चीज में तो लगातार अच्छा प्रदर्शन कर रही है। वहीं, पीएम मोदी ने पोस्ट किया था- 4 राज्यों में 28 एमएलसी सीटों पर बैलेट पेपर से चुनाव हुए। अंदाजा लगाइए कि कांग्रेस ने कितनी सीटें जीतीं? पीएम के पोस्ट से पहले तक



कांग्रेस ने 4 राज्यों में एक भी सीटें नहीं जीती थी। लेकिन बाद में कांग्रेस नागपुर सीट जीत गई। नागपुर सीएम फडणवीस और केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी का गृह क्षेत्र है और भाजपा का गढ़ माना जाता है। यहां राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का मुख्यालय भी है। ऐसे क्षेत्र में कांग्रेस की जीत को भाजपा के लिए राजनीतिक झटके के तौर पर देखा जा रहा है। 40 घंटे से ज्यादा चली मतगणना, आखिर में पलटा नतीजाः-नागपुर स्नातक निर्वाचन क्षेत्र के लिए 23 अक्टूबर को मतदान हुआ था। मतगणना 27 अक्टूबर को शुरू हुई और 29 अक्टूबर की सुबह पूरी हुई। गिनती 40 घंटे से ज्यादा चली। शुरुआती दौर में भाजपा उम्मीदवार सुधाकर कोहले आगे चल रहे थे। पहली वरीयता के वोटों की गिनती के बाद कोहले को 60,924 वोट मिले थे, जबकि अभिजीत वंजारी को 56,630 वोट मिले। निर्दलीय उम्मीदवार नितेश करारे को 24,249 वोट मिले थे। किसी भी उम्मीदवार को जीत के लिए जरूरी वोटों का कोटा नहीं मिलने के कारण दूसरी वरीयता के वोटों की गिनती की गई। इसके बाद वंजारी ने बढ़त हासिल की और जीत दर्ज की। 2020 में भी जीते थे वंजारी-अभिजीत वंजारी पेशे से वकील और शिक्षाविद हैं। उन्होंने 2020 में पहली बार नागपुर स्नातक निर्वाचन क्षेत्र से जीत दर्ज की थी। उस समय उन्होंने भाजपा उम्मीदवार संदीप जोशी को हराया था।इस बार जीत के साथ उन्होंने विधान परिषद में लगातार दूसरा कार्यकाल हासिल किया। वंजारी छात्र राजनीति से जुड़े रहे हैं। उन्होंने 1998 से 2002 के बीच महाराष्ट्र प्रदेश में नेशनल स्टूडेंट्स यूनियन ऑफ इंडिया के महासचिव के रूप में काम किया। बाद में वे महाराष्ट्र प्रदेश युवा कांग्रेस और नागपुर जिला कांग्रेस कमेटी में भी संगठनात्मक जिम्मेदारियां संभाल चुके हैं।

## राजकीय महिला पॉलिटेक्निक में विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन, छात्राओं ने तकनीकी नवाचारों से दिखाई प्रतिभा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) गौरीगंज,अमेठी। बुधवार को राजकीय महिला पॉलिटेक्निक अमेठी में विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी




में संस्थान की छात्राओं ने विज्ञान, इलेक्ट्रॉनिक्स, स्वचालन, सुरक्षा तकनीक तथा स्मार्ट प्रणालियों पर आधारित विभिन्न आकर्षक एवं उपयोगी प्रोजेक्ट मॉडल प्रस्तुत कर अपनी तकनीकी दक्षता, रचनात्मकता और नवाचार क्षमता का प्रदर्शन किया।कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, अमेठी के मैनेजर आशीष पांडेय रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता इलेक्ट्रॉनिक्स विभाग की विभागाध्यक्ष आरती गुप्ता ने की, जबकि कार्यक्रम का संचालन कंप्यूटर विभाग के प्रवक्ता पुष्पेंद्र कुमार यादव ने किया। इस अवसर पर संस्थान की अंजलि द्विवेदी, सितांशु कृष्णा, नीरज मिश्रा, शशि प्रकाश गुप्ता, निखिल कसौधन, धीरेन्द्र यादव, रोहिताश्व कुमार, बच्चा राम वर्मा एवं मोहम्मद अनवर सहित अन्य उपस्थित रहे।विज्ञान प्रदर्शनी में छात्राओं ने फायर अलार्म सिस्टम, स्मार्ट अटेंडेंस सिस्टम, रेलवे ट्रैकिंग सिस्टम, वाटर ओवरफ्लो अलार्म सिस्टम, ऑटोमैटिक स्ट्रीट लाइट कंट्रोल सिस्टम, आधारित रडार सिस्टम, एल पी जी गैस लीकेज एवं फायर डिटेक्शन सिस्टम, डिस्प्ले सिस्टम, फायर फाइटिंग रोबोट तथा स्मार्ट रेलवे दुर्घटना रोकथाम प्रणाली जैसे अनेक तकनीकी मॉडल प्रदर्शित किए।इन मॉडलों के माध्यम से छात्राओं ने दर्शाया कि आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक्स, सेंसर, माइक्रोकंट्रोलर, स्वचालन एवं इंटरनेट ऑफ थिंग्स जैसी तकनीकों का उपयोग करके दैनिक जीवन की विभिन्न समस्याओं के व्यावहारिक समाधान विकसित किए जा सकते हैं। फायर अलार्म और गैस लीकेज डिटेक्शन सिस्टम के माध्यम से सुरक्षा, वाटर ओवरफ्लो अलार्म द्वारा जल संरक्षण, ऑटोमैटिक स्ट्रीट लाइट सिस्टम द्वारा ऊर्जा बचत तथा स्मार्ट रेलवे प्रणालियों के माध्यम से रेल सुरक्षा की संभावनाओं को प्रदर्शित किया गया।स्मार्ट अटेंडेंस सिस्टम में एवं बायोमेट्रिक तकनीक के उपयोग, आधारित रडार में वस्तुओं की दूरी एवं दिशा का पता लगाने तथा फायर फाइटिंग रोबोट के माध्यम से आग का पता लगाकर पानी का छिड़काव करने जैसी अवधारणाओं ने प्रदर्शनी को विशेष रूप से आकर्षक बनाया। छात्राओं ने अपने मॉडलों की कार्यप्रणाली, उपयोगिता, प्रमुख विशेषताओं और संभावित अनुप्रयोगों की जानकारी भी प्रस्तुत की।कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य छात्राओं में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, तकनीकी ज्ञान, प्रयोगात्मक कौशल, नवाचार, समस्या-समाधान क्षमता एवं टीमवर्क की भावना को प्रोत्साहित करना था। प्रदर्शनी ने छात्राओं को कक्षा में प्राप्त सैद्धांतिक ज्ञान को व्यावहारिक परियोजनाओं में परिवर्तित करने का अवसर प्रदान किया।मुख्य अतिथि आशीष पांडेय ने छात्राओं के प्रयासों की सराहना करते हुए ऐसे आयोजनों को तकनीकी शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने कहा कि विज्ञान एवं तकनीक पर आधारित परियोजनाएं विद्यार्थियों में आत्मविश्वास बढ़ाने के साथ-साथ उन्हें भविष्य की तकनीकी चुनौतियों के लिए तैयार करने में सहायक होती हैं।कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहीं आरती गुप्ता ने छात्राओं के प्रयासों की प्रशंसा की तथा उन्हें निरंतर नई तकनीकों को सीखने, प्रयोग करने और समाजोपयोगी नवाचार विकसित करने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम का संचालन करते हुए पुष्पेंद्र कुमार यादव ने विज्ञान प्रदर्शनी के शैक्षिक महत्व को रेखांकित किया।कार्यक्रम के सफल आयोजन में संस्थान के शिक्षकों एवं छात्राओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा। प्रदर्शनी में प्रस्तुत मॉडलों ने यह संदेश दिया कि तकनीकी शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त करना नहीं, बल्कि उस ज्ञान का उपयोग समाज की समस्याओं के समाधान और सुरक्षित, सुविधाजनक एवं ऊर्जा-कुशल भविष्य के निर्माण में करना भी है।

## लखनऊ मण्डल के श्रवण बाधित कर्मचारियों,की सहायतार्थ हियरिंग एड मशीनों का वितरण

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) लखनऊ। बुधवार को पूर्वोत्तर रेलवे, लखनऊ मण्डल में



कर्मचारी कल्याण निधि द्वारा स्वीकृत लखनऊ मण्डल में कार्यरत 07 श्रवण बाधित कर्मचारियों को मण्डल कार्यालय के गंगोत्री सभागार में मण्डल रेल प्रबंधक श्री गौरव अग्रवाल के द्वारा 'हियरिंग एड मशीनों' का वितरण किया गया। इसके अंतर्गत एक कान की हियरिंग एड मशीन की कीमत रु8,500 तथा दोनों कानों की मशीनों की कीमत रु17,000 है। जिनमें 03 कर्मचारियों को एक कान की मशीन तथा 04 कर्मचारियों को दोनों कानों की मशीन प्रदान की गई हैं। लाभान्वित कर्मचारियों में श्री राजेश कुमार, सहायक (सिगनल)/ऐशबाग, श्री राज कुमार महतो, सहायक (टीआरडी)/शोहरतगढ़, श्री राम कुमार सिंह, सहायक (टीआरडी)/लखनऊ, श्री योगेन्द्र प्रसाद, एचकेए (चिकित्सालय सीतापुर), श्री नन्हें लाल, टेक्नीशियन3/कैरेज एण्ड वैगन/सीतापुर, श्री सुधीर कुमार, टेक्नीशियन3/बस्ती तथा श्री अजय सिंह, सहायक/टीएल/लखनऊ शामिल हैं। मण्डल रेल प्रबंधक श्री गौरव अग्रवाल ने कहा कि इस पहल का उद्देश्य श्रवण संबंधी कठिनाइयों का सामना कर रहे कर्मचारियों को बेहतर श्रवण सुविधा उपलब्ध कराना तथा उनके कार्य एवं दैनिक जीवन को अधिक सहज बनाना है। कर्मचारियों ने रेल प्रशासन के इस मानवीय एवं कल्याणकारी कदम के लिए आभार व्यक्त किया।

रेल प्रशासन भविष्य में भी कर्मचारी हित में ऐसे कदम उठाता रहेगा। इस अवसर पर मुख्य चिकित्सा अधीक्षक (बादशाहनगर) श्री रमेश चन्द्र, अपर मण्डल रेल प्रबंधक (इंफ्रा0) श्री भूवनेश सिंह, अपर मण्डल रेल प्रबंधक (परिचालन) श्रीमती नीतू तथा वरिष्ठ मण्डल कार्मिक अधिकारी श्री राजेश कुमार गुप्ता एवं कर्मचारी यूनियनों के प्रदाधिकारिगण एवं कर्मचारिगण उपस्थित थे। इस आशय की जानकारी जनसंपर्क अधिकारी हिमांशु राव ने मीडिया को दी।

## प्रयागराज में जमीन खोदकर निकाले गए नकदी से भरे तीन ड्रम, पुलिस ने कब्जे में लिए रुपये

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। गंगानगर जोन में चोरी के रुपये जमीन में गाड़कर



छिपाए जाने की सूचना पर पुलिस ने बड़ी कार्रवाई की है। नवाबगंज थाना क्षेत्र के बरईपुर रामनगर गांव में एक मकान के परिसर में तलाशी और खुदाई के दौरान तीन ड्रमों में छिपाकर रखी गई भारी मात्रा में नकदी बरामद की गई है। पुलिस ने बरामद रुपये अपने कब्जे में लेकर सील कर दिए हैं। मामले में संबंधित विभागों को सूचना देते हुए आगे की कानूनी कार्रवाई की जा रही है, दरअसल, पुलिस कमिश्नर मे कमिश्नरेट प्रयागराज में नकबजनी यानी घरों और प्रतिष्ठानों में चोरी की घटनाओं का खुलासा करने के लिए अभियान चलाया जा रहा है। इसी अभियान के तहत गंगानगर जोन के नवाबगंज थाना क्षेत्र में पुलिस को एक मकान के अंदर जमीन में गाड़कर चोरी के रुपये छिपाए जाने की सूचना मिली थी,मुखबिर से मिली जानकारी पर नवाबगंज और सोरांव थाने की पुलिस टीम ने बरईपुर रामनगर गांव स्थित बताए गए मकान पर छापेमारी की,पुलिस टीम ने मकान में तलाशी लेने के साथ अलग-अलग स्थानों पर खुदाई भी की। इस दौरान जमीन में छिपाकर रखे गए तीन ड्रम बरामद हुए। इन ड्रमों में भारी मात्रा में नकदी रखी गई थी। रुपये मिलने के बाद पुलिस ने पूरी बरामदगी को अपने कब्जे में लिया और नियमानुसार सील कर दिया,हालांकि, बरामद नकदी की कुल रकम, ड्रमों में मिले नोटों के विवरण और इस मकान से जुड़े लोगों के नामों का खुलासा नहीं किया गया है,पुलिस की इस कार्रवाई में नवाबगंज और सोरांव थाने की टीमें शामिल रहीं।

## जनगणना 2027 के द्वितीय चरण और स्वगणना को लेकर सम्पन्न हुई कार्यशाला

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)रायबरेली। बुधवार को



मुख्य विकास अधिकारी अंजुलता की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में आगामी जनगणना 2027 के द्वितीय चरण के प्रशिक्षण एवं व्यापक जन-जागरूकता अभियान के सम्बन्ध में एक महत्वपूर्ण कार्यशाला का आयोजन किया गया। अपर जिलाधिकारी (वि0/रा0) सहदेव मिश्र के कुशल मार्गदर्शन में कार्यशाला सम्पन्न हुई, जिसमें जनपद के सभी विभागों के कार्यालयाध्यक्षों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। बैठक के दौरान जनगणना के द्वितीय चरण और स्वगणना कार्यक्रमों की रूपरेखा पर विस्तार से चर्चा की गई, स्वगणना कार्यक्रम (15 दिवस) जो 16 नवंबर 2026 से 30 नवंबर 2026 तक चलेगा,द्वितीय चरण के कार्य 01 दिसंबर 2026 से 04 जनवरी 2027 की निर्धारित समय-सीमा के अंतर्गत संपन्न किए जाएंगे। मुख्य विकास अधिकारी ने सभी विभागीय अधिकारियों को संबोधित करते हुए कहा कि जनगणना एक राष्ट्रीय महत्व का कार्य है। इसके सफल संचालन के लिए जनपद स्तर पर तैयार की गई विभाग-वार कार्य योजना का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाए। इसके साथ ही जनजागरुकता हेतु व्यापक प्रचार-प्रसार करने पर विशेष बल दिया गया, ताकि अधिक से अधिक लोग स्वगणना का लाभ उठा सकें और पूरी प्रक्रिया पारदर्शी व सुगम हो सके।कार्यशाला में मास्टर ट्रेनर्स द्वारा अधिकारियों को जनगणना की बारीकियों से अवगत कराया गया।

जिला मास्टर ट्रेनर आशुतोष तिवारी, ऋषभ गुप्ता तथा जिला प्रभारी काजल रानी ने सभी उपस्थित अधिकारियों को तकनीकी पहलुओं, प्रपत्रों को भरने के तरीकों और निर्धारित समयावधि में कार्यों को पूर्ण करने का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

कार्यक्रम के अंत में सभी अधिकारियों से आपसी समन्वय बनाकर इस अभियान को सफल बनाने की अपील की गई।

इस अवसर पर उपायुक्त श्रम रोजगार प्रमोद सिंह, परियोजना निदेशक डीआरडीए मुनेश चन्द्र, जिला विद्यालय निरीक्षक संजीव कुमार सिंह,

जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी राहुल सिंह, जिला सूचना विज्ञान अधिकारी ब्रजेश तिवारी, जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी महिमा, जिला समाज कल्याण अधिकारी आर0वी0 सिंह, एलडीएम सुबोध मिश्रा, जिला आबकारी अधिकारी दिनेश कुमार सहित संबंधित अधिकारी उपस्थित रहें।

## वेद पूजन कार्यक्रम में वैदिक ज्ञान, पंचतत्व और सामाजिक जीवन के महत्व पर किया मंथन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। बुधवार को वेद पूजन कार्यक्रम में वैदिक ज्ञान, पंचतत्व यमुना पुरी जी महाराज ने पंचतत्व के महत्व से अवगत कराया एवं इस बात पर बल दिया कि उनके को एक मंच पर लाया जाना संभव हो सका जिसने राम मंदिर आंदोलन को धार दी। वेदों की




और सामाजिक जीवन के महत्व पर मंथन किया गया। श्रद्धेय अशोक सिंघल जी की जन्म शताब्दी के उपलक्ष में महर्षि भरद्वाज वेद विद्यालय केसर भवन में आयोजन उल्लास के साथ मनाया गया। मुख्य अतिथि इलाहाबाद विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर हरि दत्त शर्मा जी ने वेदों के अध्ययन हेतु बटुकों एवं उनके माता-पिता को बधाई दी।बताया वेद ऋषियों व मुनियों द्वारा प्रदत्त हैं जो ब्रह्मांड के रहस्य को दृष्टिगोचर करते हैं। प्रकृति, मनुष्य, राष्ट्र आदि का संचालन कैसे हो को वेदों में बताया गया है। यथर्व वेद में पृथ्वी की चर्चा है जिसमें वह भरण पोषण के लिए वस्तुएं उपलब्ध कराती है तो दूसरी ओर दंड भी देती हैं। वैदिक भाषा का प्रचार विदेश में भी हो रहा है और गीता आश्रम जर्मनी इटली फ्रांस जैसे देशों में स्थापित किए गए हैं। उद्घाटन उद्बोधन में महानिर्वाणी अखाड़ा दारागंज के अध्यक्ष संत श्री प्रति सम्मान और संरक्षण का भाव रखना चाहिए। सूर्य भगवान बुद्धि को और चंद्रमा मन को नियंत्रित करते हैं। सूर्य का प्रकाश शरीर पर प्रभाव डालता है जो अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाता है। वेदों से संस्कृति का उद्गम होता है जो प्राचीन काल से हैं। आगे कहा जैसा अन्न ग्रहण करेंगे वैसा मन तैयार होगा। सम्मानित अतिथि डॉ विशाल धींगरा ने वेदों के गुण, रहस्य एवं व्यवहारिक उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वेद मानव जीवन और समाज को दिशा देने वाले ज्ञान के स्रोत हैं। समिति के मंत्री डॉ नवीन चंद्र अग्रवाल ने माननीय अशोक सिंघल जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय देते हुए प्रेरणादायक दृष्टांत प्रस्तुत किये। उन्होंने हिंदू समाज और राष्ट्र की सेवा के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को माध्यम चुना। आप संभ्रांत परिवार से इंजीनियर होते हुए भी संघ के समर्पित कार्यकर्ता रहे। आपके प्रयासों से सभी संतो रक्षा हेतु आप विशेष रूप से प्रयत्नशील रहे। अध्यक्ष डॉक्टर युगांतर पांडे ने स्वागत भाषण के माध्यम से अतिथियों का अभिनंदन किया एवं अशोक सिंघल जी के वेदों के पठन-पाठन हेतु प्रयासों की सराहना की। प्रारंभ में वेद पूजन के उपरांत वंदे मातरम प्रस्तुत किया गया। चारों वेदों का आचार्य प्रियांशु शुक्ला, दीपक अवस्थी, हरि ओम एवं ओमप्रकाश ने सस्वर पाठ किया। संचालन प्रधानाचार्य प्रदीप जी ने एवं धन्यवाद ज्ञापन उपाध्यक्ष डॉ सपन श्रीवास्तव जी ने किया। कार्यक्रम में आचार्य सुनील शर्मा, सूर्य प्रकाश उपाध्याय, राकेश श्रीवास्तव ने भी भाग लिया। कोषाध्यक्ष सुनील कुमार गुप्ता, विश्व हिंदू परिषद के अध्यक्ष केपी सिंह संगठन मंत्री राजेंद्र जी, समिति की सदस्य श्रीमती ज्योति अग्रवाल, अधिवक्ता नितिन अग्रवाल, सीए विभूति अग्रवाल, वैदिक विद्यार्थी आदि उपस्थित रहे। अंत में राष्ट्रगान के साथ समापन हुआ।

## बालीपुर डुहिया, अमेठी में भव्य सामाजिक महासंगम एवं विशाल भंडारा संपन्न

### उत्तर प्रदेश सहित महाराष्ट्र, गुजरात, दिल्ली, गोवा एवं चंडीगढ़ से जुटे समाज के लोग; लगभग 3,000 लोगों की सहभागिता ने आयोजन को बनाया ऐतिहासिक

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) गौरीगंज/अमेठी। जनपद अमेठी के ग्राम बालीपुर डुहिया में मंगलवार, 27 अक्टूबर 2026 को नन्द, नाई, सेन, सविता, श्रीवास, शर्मा, वर्मा, ठाकुर एवं नंदवंशी समाज का बहुप्रतीक्षित 'सामाजिक महासंगम एवं विशाल भंडारा' अत्यंत उत्साह, गरिमा एवं सामाजिक एकता के वातावरण में संपन्न हुआ। व्यापक जनभागीदारी, विभिन्न प्रदेशों से समाज के लोगों की उपस्थिति तथा सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्र की प्रमुख हस्तियों के सहभाग से यह आयोजन विशेष रूप से







यादगार बन गया।आयोजकों के अनुसार, लगभग 3,000 लोगों की सहभागिता वाला यह महासंगम समाज के अब तक के सबसे बड़े आयोजनों में से एक रहा। इसमें उत्तर प्रदेश के विभिन्न जनपदों के अतिरिक्त महाराष्ट्र, गुजरात, दिल्ली, गोवा एवं चंडीगढ़ से भी समाज के लोग शामिल हुए। उत्तर प्रदेश के विभिन्न सामाजिक संगठनों तथा राजनीतिक दलों से जुड़े नन्द, नाई एवं सेन समाज के प्रतिनिधियों, नेताओं और कार्यकर्ताओं ने भी कार्यक्रम में सहभागिता की। महापद्मनंद वेलफेयर ऑर्गनाइजेशन (एम डब्ल्यू ओ), उत्तर प्रदेश एवं आयोजक परिवार द्वारा व्यापक स्तर पर आमंत्रण दिया गया था। समाज के जेंवार प्रमुखों एवं चौधरियों, उप जेंवार प्रमुखों एवं नायब चौधरियों, वरिष्ठजनों, मातृशक्ति, युवाशक्ति, प्रबुद्धजनों, सैलून संचालकों, शिक्षकों, पत्रकारों, अधिवक्ताओं, समाजसेवियों तथा विभिन्न सामाजिक संगठनों के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं की उल्लेखनीय उपस्थिति रही। स्वागत समारोह एवं सम्मान ने बढ़ाई कार्यक्रम की गरिमाः-दोपहर 12 बजे से शाम 4:30 बजे तक चले इस कार्यक्रम में चबैना-प्रसाद वितरण, अतिथियों का स्वागत-सत्कार तथा विभिन्न वक्ताओं के विचारपूर्ण उद्बोधनों ने आयोजन को विशेष गरिमा प्रदान की। आयोजक परिवार एवं एम डब्ल्यू ओ संगठन की ओर से उपस्थित जेंवार प्रमुखों, चौधरियों, विभिन्न सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधियों, पदाधिकारियों तथा संगठन की विभिन्न कमेटियों से आए सदस्यों का माल्यार्पण एवं अंगवस्त्र भेंट कर सम्मानपूर्वक अभिनंदन किया गया। इस आत्मीय स्वागत एवं सम्मान समारोह ने समाज के विभिन्न वर्गों के बीच आपसी सद्भाव, परस्पर सम्मान और संगठनात्मक एकजुटता का संदेश दिया। प्रमुख वक्ताओं ने सामाजिक एकता एवं उत्थान पर रखे विचारः-महासंगम को संबोधित करने वाले प्रमुख वक्ताओं में मैनपुरी से पधारे पूर्व विधानसभा प्रत्याशी डॉ. गौरव नन्द, मऊ जनपद से आए ओमप्रकाश ठाकुर, प्रयागराज से चलकर के आए नंदवंशी सेल्फ केयर ट्रस्ट के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रदीप वर्मा जी, अमेठी के समाजवादी पार्टी के युवा नेता जयसिंह प्रताप यादव, गोंडा जनपद से पधारे गौरा विधानसभा के पूर्व प्रत्याशी एवं समाजवादी पार्टी सरकार में दर्जा प्राप्त मंत्री रहे संजय सविता विद्यार्थी, तथा जौनपुर से आए भारतीय नाई कल्याण विकास सेवा समिति के संस्था अध्यक्ष दिनेश चन्द्र शर्मा शामिल रहे। वक्ताओं ने अपने संबोधनों के माध्यम से सामाजिक एकता, आपसी भाईचारे, संगठन की मजबूती तथा समाज के सर्वांगीण विकास जैसे विषयों पर अपने विचार रखे। विभिन्न क्षेत्रों से आए प्रतिनिधियों की सहभागिता ने समाज के साझा हितों पर संवाद एवं परस्पर संपर्क को प्रोत्साहित किया। पंगत में प्रसाद ग्रहण कर दिया समरसता का संदेशः-कार्यक्रम के अंतिम चरण में उपस्थित लोगों ने पंगत में बैठकर भोजन-प्रसाद ग्रहण किया। इसके पश्चात सभी लोग आपसी सौहार्दपूर्ण वातावरण में अपने-अपने गंतव्य के लिए प्रस्थान कर गए। लगभग 3,000 लोगों की उपस्थिति, विभिन्न प्रदेशों एवं जनपदों से आए समाजबंधुओं की सहभागिता और व्यापक स्तर पर हुए स्वागत-सम्मान ने इस आयोजन को भव्य स्वरूप प्रदान किया। यह महासंगम सामाजिक संपर्क, आपसी सहयोग और सामूहिक सहभागिता की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण आयोजन के रूप में सामने आया।

आगे प्रकाशित होंगे जेंवार प्रमुखों, संगठनों एवं प्रतिनिधियों के नामः-विशेष सूचनाः इस महासंगम में उपस्थित जेंवार प्रमुखों एवं चौधरियों, विभिन्न सामाजिक संगठनों, उनके प्रतिनिधियों तथा महापद्मनंद वेलफेयर ऑर्गनाइजेशन (एम डब्ल्यू ओ), उत्तर प्रदेश की विभिन्न इकाइयों से आए पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं के नाम क्रमशः अलग-अलग श्रृंखलाओं में प्रकाशित किए जाएंगे। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में गणमान्य व्यक्तियों एवं समाजबंधुओं की सहभागिता के कारण इस समाचार में सभी के नामों का उल्लेख करना संभव नहीं हो सका है। इसके लिए हम सभी सम्मानित साथियों से विनम्रतापूर्वक क्षमा प्रार्थी हैं। सभी की सहभागिता एवं योगदान हमारे लिए समान रूप से सम्माननीय हैं। यह महासंगम सामाजिक एकता, आपसी सम्मान, सहयोग और सामूहिक उत्थान की भावना को आगे बढ़ाने वाला एक यादगार आयोजन रहा।

## पद संचलन के माध्यम से वैश्य समाज ने दिखाई अपनी ताकत,कल 27 अक्टूबर को होगा रिफॉर्म क्लब में एक बड़ा वैश्य सम्मेलन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। वैश्य एकता परिषद ने 27 अक्टूबर को एक बड़े वैश्य सम्मेलन की घोषणा की है जो की रायबरेली के रिफॉर्म क्लब में आयोजित होगा उसके पूर्व एक दिन पहले वैश्य समाज ने पद संचलन कर अपनी ताकत दिखाई। वैश्य एकता परिषद के द्वारा आयोजित पथ संचलन में समाज के बड़े नेताओं ने समाज के लोगों के साथ मिलकर शहर के मुख्य बाजार में घूम-घूम कर यह संदेश दिया की वो किसी भी राजनीतिक पार्टी के समीकरण को बिगाड़ने के लिए या बनाने के लिए पर्याप्त ताकत रखते हैं। पथ संचलन में परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ.सुमंत गुप्ता भी मौजूद रहे उन्होंने बताया कि सम्मेलन की पूर्व संध्या पर आयोजित इस पद संचलन के माध्यम से हम संपूर्ण व्यापारी समाज जो कि अधिकतर वैश्य समाज से है से आवाहन करने निकले हैं कि हम अपनी आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तन करने की ताकत को पहचाने और एकजुट होकर आने वाले चुनाव में अपनी भूमिका को सुनिश्चित करें। पथसंचलन का जगह-जगह स्वागत भी हुआ रिफॉर्म क्लब से निकलने पर अस्पताल चौराहा दीवानी कचहरी गेट पर अनूप अग्रवाल ने अपने



साथियों के साथ फूल की बरसा की, बस स्टॉप चौराहे पर पंकज सोनी, खोया मंडी महेश यज्ञसैनी, कैंपरगंज में श्याम जी व महेश चौरसिया ने फूलों की वर्षा की, घंटाघर में अतुल गुप्ता सुपर मार्केट में महेश बंसल यूनियन बैंक चौराहा में भोला गुप्ता ने हाथी पार्क में संजय बंसल व डॉ.अतुल अग्रवाल ने फूलों की वर्षा करके पद संचलन में शामिल लोगों का स्वागत किया। वैश्य एकता परिषद के राष्ट्रीय महासचिव इं. विजय रस्तोगी ने कहा कि रीफार्म क्लब के मैदान में वैश्य समाज के वो सभी लोग एकत्रित होंगे जो राजनीतिक रूप से 2027 की भूमिका में विशेष भागीदारी निभाएंगे।

लालगंज नगर पंचायत की अध्यक्ष सरिता गुप्ता भी पद संचलन में मौजूद रही उन्होंने भी इस बात पर बल दिया कि वैश्य समाज को राजनीतिक रूप से अपनी हिस्सेदारी लेनी चाहिए ले वैश्य एकता परिषद की जिला अध्यक्ष राजकुमार गुप्ता एडवोकेट ने बताया कि रिफॉर्म क्लब में आयोजित होने वाले इस बड़े सम्मेलन में सभी राजनीतिक दलों में शामिल प्रतिनिधि मौजूद रहेंगे और सभी का सिर्फ एक लक्ष्य होगा समाज को किस प्रकार से मजबूत बनाएं और राजनीतिक हिस्सेदारी ली जाए ले। पथसंचलन में मुख्य रूप से आर बी वैश्य, वीरेंद्र अग्रहरि, डॉ. जे के मोदनवाल, संजय जयसवाल, अतुल गुप्ता, के. के अग्रहरि, गणेश कसौधन, धर्मेंद्र वर्मा, मधुरेंद्र वैश्य एडवोकेट, जुगल किशोर गुप्ता, राकेश गुप्ता सहित सैकड़ो लोग मौजूद रहे।

## राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान नैनी प्रयागराज में अप्रेंटिसशिप मेले का आयोजन हुआ

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नैनी/प्रयागराज। बुधवार को



राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान नैनी प्रयागराज में अप्रेंटिसशिप मेले का आयोजन हुआ मेले में टाटा मोटर्स ईवी सानंद गुजरात कंपनी प्रतिभाग ने प्रतिभा जी किया जिस मेले का शुभारंभ संयुक्त निदेशक श्री राजकुमार जी तथा उप प्रधानाचार्य श्रीमती सीमा रंजन अग्रवाल जी एवं उप प्रधानाचार्य श्री मोहन लाल जी के द्वारा दीप प्रज्वलित करके किया गया उक्त मेले में 76 प्रशिक्षार्थियों ने प्रतिभाग किया मेले में प्रमुख रूप से मेगा फाउंडेशन से श्री रमन गुप्ता और टाटा मोटर्स से मोहन कुमार एच. आर. QUESS CAR LIMITED DATA के माध्यम से 26 प्रशिक्षार्थियों का चयन साक्षात्कार के माध्यम से हुआ । अप्रेंटिस एडवाइजर अजय कुमार एवं सहायक अप्रेंटिस एडवाइजरअमृत लाल गुप्ता के द्वारा सूचना प्रदान की गई मेले में प्रमुख रूप से श्री विपिन बिहारी कौशल सुन्दरिका प्रसाद अशोक कुमार यादव कार्यदेशक हेमंत यादव अनुदेशक सुमित मिश्रा अनुदेशक ने विशेष रूप से सहयोग किया।

## नाबालिगों के हाथ में बुलेट बाइक, न हेलमेट न ड्राइविंग लाइसेंस! नैनी की एडीए कॉलोनी में बच्चों की सुरक्षा से खिलवाड़

**सड़क हादसे के बाद ही जागेंगे अभिभावक? दुर्घटना होने पर पुलिस को दोष देने से पहले अपनी जिम्मेदारी भी समझें**

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नैनी/प्रयागराज। नैनी की एडीए कॉलोनी क्षेत्र में नाबालिग स्कूली



छात्रों द्वारा बिना हेलमेट और बिना वैध ड्राइविंग लाइसेंस के बुलेट जैसी भारी मोटरसाइकिल चलाने का मामला गंभीर चिंता का विषय है। लगभग 12 से 14 वर्ष की उम्र के बच्चों का इस तरह सड़कों पर दोपहिया वाहन चलाना उनकी अपनी सुरक्षा के साथ-साथ अन्य राहगीरों के जीवन के लिए भी खतरा पैदा कर सकता है। सबसे बड़ा सवाल यह है कि आखिर इतनी कम उम्र के बच्चों के हाथों में मोटरसाइकिल की चाबी कौन सौंप रहा है? क्या अभिभावकों की यह जिम्मेदारी नहीं है कि वे अपने बच्चों को यातायात नियमों का पालन करना सिखाएं और उन्हें निर्धारित उम्र से पहले वाहन चलाने से रोकें? दुर्घटना के बाद आरोप-प्रत्यारोप क्यों? अक्सर सड़क दुर्घटना होने के बाद पुलिस की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाए जाते हैं, लेकिन दुर्घटना से पहले बरती जाने वाली लापरवाही पर भी गंभीरता से विचार होना चाहिए। यदि अभिभावक स्वयं नाबालिग बच्चों को वाहन चलाने की अनुमति देते हैं, तो उनकी जिम्मेदारी से इनकार नहीं किया जा सकता। पुलिस और यातायात विभाग की कार्रवाई के साथ-साथ अभिभावकों की सतर्कता भी बेहद जरूरी है। नियमों का पालन जरूरी:-मोटर वाहन अधिनियम के तहत सामान्य मोटरसाइकिल चलाने के लिए निर्धारित आयु और वैध ड्राइविंग लाइसेंस अनिवार्य हैं। 12 से 14 वर्ष के बच्चे सामान्य बुलेट मोटरसाइकिल चलाने के लिए कानूनी रूप से पात्र नहीं हैं। नाबालिगों द्वारा वाहन चलाने के मामलों में वाहन स्वामी या अभिभावक पर भी कानून के अनुसार कार्रवाई हो सकती है। स्थानीय प्रशासन, यातायात पुलिस, विद्यालयों और अभिभावकों को इस विषय पर गंभीरता से ध्यान देने की आवश्यकता है। विद्यालयों के आसपास और कॉलोनियों की सड़कों पर नियमित जागरूकता एवं जांच अभियान चलाए जाने चाहिए, ताकि किसी अनहोनी से पहले ही प्रभावी कदम उठाए जा सकें। सवाल यही है-क्या हम किसी बड़ी दुर्घटना का इंतजार कर रहे हैं?ङ बच्चों की सुरक्षा केवल पुलिस की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि परिवार और समाज की भी सामूहिक जिम्मेदारी है। समय रहते सावधानी बरती जाए, ताकि किसी परिवार को लापरवाही की भारी कीमत न चुकानी पड़े। अपीलः नाबालिग बच्चों को मोटरसाइकिल चलाने न दें। हेलमेट, यातायात नियमों और सुरक्षित ड्राइविंग के प्रति जागरूकता को अपनी प्राथमिकता बनाएं।

## मुख्य विकास अधिकारी की अध्यक्षता में जिला ओटीटीडी सेल की त्रैमासिक समीक्षा बैठक सम्पन्न

**वन ट्रिलियन डॉलर अर्थव्यवस्था के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु विभागीय समन्वय से कार्यों में तेजी लाने के निर्देश**

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। मुख्य विकास अधिकारी अंजुलता की अध्यक्षता



में विकास भवन स्थित कार्यालय कक्ष में जिला ओटीटीडी सेल की त्रैमासिक समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था को वन ट्रिलियन डॉलर के स्तर तक पहुंचाने के उद्देश्य से जनपद में किए जा रहे प्रयासों एवं विभिन्न विभागों की प्रगति की समीक्षा की गई। इस दौरान संबंधित अधिकारियों को निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए आपसी समन्वय स्थापित करते हुए प्रभावी ढंग से कार्य करने के निर्देश दिए गए। बैठक में बताया गया कि प्रदेश की अर्थव्यवस्था को वन ट्रिलियन डॉलर के स्तर तक पहुंचाने के लिए राज्य सरकार द्वारा विभिन्न विभागों के माध्यम से समन्वित एवं बहुआयामी प्रयास किए जा रहे हैं। इसके अंतर्गत निवेश को प्रोत्साहित करने, आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देने, अवस्थापना सुविधाओं का विकास करने, पर्यटन एवं सांस्कृतिक विरासत को प्रोत्साहित करने तथा विशेष निवेश क्षेत्रों की स्थापना जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। इसके अतिरिक्त विनिर्माण क्षेत्र के विस्तार, सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी), स्टार्टअप को प्रोत्साहन, कृषि एवं उससे संबंधित सेवाओं के विकास सहित विभिन्न क्षेत्रों में कार्य किए जा रहे हैं, जिससे प्रदेश में निवेश की संभावनाओं को बढ़ावा देने के साथ-साथ आर्थिक विकास को गति प्रदान की जा सके। मुख्य विकास अधिकारी अंजुलता ने जनपद स्तर पर वन ट्रिलियन डॉलर अर्थव्यवस्था योजना के अंतर्गत किए जा रहे कार्यों की समीक्षा करते हुए संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि वे अपने-अपने विभाग से संबंधित कार्यों एवं योजनाओं की नियमित समीक्षा करें। साथ ही, विभागीय समन्वय को प्रभावी बनाते हुए निवेश संवर्धन, अवस्थापना सुविधाओं के विकास तथा आर्थिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करने की दिशा में गंभीरता से कार्य करें, ताकि प्रदेश सरकार की प्राथमिकताओं के अनुरूप जनपद के विकास में प्रभावी योगदान सुनिश्चित किया जा सके।

बैठक में जिला अर्थ एवं सांख्यिकी अधिकारी सुधीर गिरी, उपायुक्त उद्योग परमहंस मौर्या, उपायुक्त राज्यकर परमहंस श्रीवास्तव, जिला विद्यालय निरीक्षक संजीव कुमार सिंह, सहायक श्रमायुक्त उमेश यादव, एआरटीओ अरविन्द यादव, जिला कृषि अधिकारी अखिलेश पाण्डेय सहित संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

## राष्ट्रीय स्तर पर अद्विक पटेल ने हासिल की उपलब्धि, राइजिंग चाइल्ड स्कूल का बढ़ाया गौरव,ब्रेन ओ ब्रेन की राष्ट्रीय प्रतियोगिता में राइजिंग चाइल्ड स्कूल के अद्विक पटेल ने मारी बाजी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। शहर के प्रभुटाउन स्थित राइजिंग चाइल्ड स्कूल में




ब्रेन ओ ब्रेन की राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया। प्रतियोगिता में विद्यालय के छात्र अद्विक पटेल ने राष्ट्रीय स्तर पर शीर्ष स्थान प्राप्त कर विद्यालय और रायबरेली का नाम रोशन किया। उनकी इस उपलब्धि पर उन्हें ब्रेन ओ ब्रेन संस्थान की ओर से ट्रॉफी और नगद पुरस्कार प्रदान किए गए। इसके अतिरिक्त विद्यालय के भाव्या, सात्विक, मिशिका, शिवांक, वैष्णवी, आरुष, अथर्व, अविका, सुखप्रीत, आन्या, कौशिकी, शिवी धमिष्ठा, हम्माद, सुरभि, आध्या, अनन्या, मानविश, वानी और वंशिका ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए स्वर्ण पदक प्राप्त किए। प्रतियोगिता में विद्यार्थियों की सफलता से विद्यालय परिवार में हर्ष का माहौल रहा। विद्यालय की प्रधानाचार्या सीमा श्रीवास्तव ने बताया कि ब्रेन ओ ब्रेन बच्चों की मानसिक क्षमता, एकाग्रता, स्मरण शक्ति, तार्किक सोच और गणना कौशल को विकसित करने की दिशा में कार्य करने वाला संस्थान है। इसकी प्रतियोगिताओं के माध्यम से बच्चों की तेजी से गणना करने, कम समय में सही उत्तर देने तथा दबाव में भी एकाग्रता बनाए रखने की क्षमता को परखा जाता है। इस अवसर पर विशेष सहयोग के लिए शिक्षिका ज़ेबा खान को भी सम्मानित किया गया। विद्यालय के प्रबंधक अरविंद श्रीवास्तव, एडवोकेट ने सभी विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान कर उनका उत्साहवर्धन किया, उन्होंने कहा इस प्रकार की गतिविधियां बच्चों में आत्मविश्वास, निर्णय लेने की क्षमता और समस्या का समाधान खोजने की योग्यता विकसित करने में सहायक होती है।

कार्यक्रम का संचालन हरप्रीत कौर ने किया। कार्यक्रम में ब्रेन ओ ब्रेन संस्थान के समन्वयक प्रियंका श्रीवास्तव, अमित कुमार, विद्यालय के प्रशासनिक अधिकारी रविंद्रनाथ हरि, सावन गुप्ता सहित समस्त शिक्षक-शिक्षिकाएं उपस्थित रहे।

## वैदिक गणित मेला एवं सांस्कृतिक महोत्सव में माधव संकुल बना ओवरऑल चैंपियन,सरस्वती विद्या मंदिर माधव ज्ञान केंद्र के विद्यार्थियों ने 39 पदक जीतकर बढ़ाया विद्यालय का गौरव

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नैनी/प्रयागराज। डॉ. भीमराव अम्बेडकर सरस्वती विद्या मंदिर



अनपरा सोनभद्र में विद्या भारती काशी प्रांत द्वारा आयोजित प्रांतीय वैदिक गणित मेला एवं सांस्कृतिक महोत्सव सत्र 2026-27 में सरस्वती विद्या मंदिर माधव ज्ञान केंद्र, नैनी, प्रयागराज के विद्यार्थियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन कर विद्यालय का गौरव बढ़ाया। प्रतियोगिता में माधव संकुल ने कुल 43 अंक प्राप्त कर सांस्कृतिक महोत्सव में ओवरऑल चैंपियन बनने का गौरव हासिल किया। वैदिक गणित एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं में विद्यार्थियों ने अपनी प्रतिभा, रचनात्मकता, तार्किक क्षमता और सांस्कृतिक अभिरुचि का शानदार प्रदर्शन किया। विद्यालय के विद्यार्थियों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में स्वर्ण, रजत एवं कांस्य पदक सहित कुल 39 पदक प्राप्त किए। स्वर्ण पदक विजेता-स्वर्ण पदक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों में कथा-कथन (शिशु वर्ग) में मृत्युंजय त्रिपाठी, मूर्ति कला (किशोर वर्ग) में आर्यन प्रजापति, गणित प्रदर्श (शिशु वर्ग) में अंकित सिंह, गणित प्रदर्श (बाल वर्ग) में आदर्श तिवारी एवं आराध्या भास्कर, गणित प्रदर्श (तरुण वर्ग) में सूर्य प्रकाश सिंह तथा गणित प्रदर्श (किशोर वर्ग) में अनुप्रिया सिंह शामिल हैं। रजत पदक विजेता:- रजत पदक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों में गणित प्रयोग (किशोर वर्ग) में प्रियांशी तिवारी,



गणित पत्र-वाचन (तरुण वर्ग) में नियति पटेल, गणित प्रदर्श (बाल वर्ग) में प्रिया अग्रहरि, गणित पत्र-वाचन (किशोर वर्ग) में नैंसी शुक्ला, गणित प्रदर्श (शिशु वर्ग) में आस्था मिश्रा, मूर्तिकला (बाल वर्ग) में अनुश्री केसरवानी, वैदिक गणित प्रश्न-मंच (शिशु वर्ग) में प्रभात सिंह, अंश कुमार उपाध्याय एवं आशुतोष मिश्रा, आशु भाषण (किशोर वर्ग) में नयन दीप मिश्रा तथा गणित प्रयोग (किशोर वर्ग) में प्रांजुल शुक्ला शामिल हैं। लोकनृत्य प्रतियोगिता में भी विद्यालय के विद्यार्थियों ने रजत पदक प्राप्त कर अपनी सांस्कृतिक प्रतिभा का परिचय दिया। इस दल में सानिया सिंह, आकांक्षा द्विवेदी, नियति पाण्डेय, अनन्या, पलक सिंह, आराध्या पाल, श्रेया गुप्ता, यशस्वी त्रिपाठी, माही, शुभ्रा शर्मा, योग्या शुक्ला, अदिति, तन्वी सिंह, सूर्यांश दुबे एवं आदित्य द्विवेदी शामिल रहे। कांस्य पदक विजेता:-कांस्य पदक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों में गणित प्रदर्श (तरुण वर्ग) में रुद्रांश मिश्र, गणित प्रयोग (शिशु वर्ग) में आर्यन सिंह, संस्कृत प्रश्न-मंच (शिशु वर्ग) में अर्जुन मिश्रा, अंश सिंह एवं अंश प्रताप सिंह तथा गणित प्रदर्श (शिशु वर्ग) में अमृत पाठक शामिल हैं। इस उपलब्धि से विद्यालय परिवार में हर्ष का वातावरण है। विद्यार्थियों की इस सफलता ने यह सिद्ध किया कि नियमित अभ्यास, समर्पित मार्गदर्शन और निरंतर परिश्रम से शैक्षिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में उत्कृष्ट उपलब्धियाँ प्राप्त की जा सकती हैं। माधव संकुल का ओवरऑल चैंपियन बनना और विद्यार्थियों द्वारा कुल 39 पदक प्राप्त करना विद्यालय के लिए गौरवपूर्ण उपलब्धि है।

## जिला सैनिक बन्धु समिति की बैठक सम्पन्न,पूर्व सैनिकों की समस्याओं के शीघ्र निस्तारण पर जोर

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। नगर मजिस्ट्रेट राम अवतार की अध्यक्षता में जिला सैनिक कल्याण एवं पुनर्वास कार्यालय के सभाकक्ष में जिला सैनिक बन्धु समिति की बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में पूर्व सैनिकों की विभिन्न समस्याओं पर विचार-विमर्श किया गया तथा उनके शीघ्र निस्तारण के लिए आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित करने पर जोर दिया गया। बैठक के प्रारम्भ में जिला सैनिक कल्याण एवं पुनर्वास अधिकारी, रायबरेली कर्नल सौरभ पन्त (अ0प्रा0) ने उपस्थित सदस्यों का स्वागत किया।




उन्होंने पूर्व सैनिकों की समस्याओं पर चर्चा करते हुए उनके शीघ्र समाधान के लिए नियमानुसार आवश्यक कार्यवाही कराने का आश्वासन दिया। बैठक में वरिष्ठ कोषाधिकारी, अधिशाषी अधिकारी नगर पालिका परिषद, जिला सेवायोजन अधिकारी तथा कमान्डिंग ऑफिसर 66 यू0पी0 बटालियन एन0सी0सी0 के प्रतिनिधियों के साथ ई0सी0एच0एस0 के ऑफिसर इंचार्ज, सैनिक बन्धु समिति के सदस्य एवं अन्य पूर्व सैनिक उपस्थित रहे।

## नैनी उप खंड अधिकारीयों के झटको से आम जनमानस हैरान-परेशान

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नैनी/प्रयागराज। प्रयागराज नैनी के उपकेंद्र के अधिकारीयों की उल्टी ही गंगा बाह रहीं एक तरफ सरकार तमाम तरह के प्रयास कर रहीं की आमजन मानस के जीवन में त्योहारों की जग-मगाहट भर सकें वहीं उनके प्रयासों की अवहेलना करतें हुए करवा चौथ के ही दिन नैनी एडीए में नारी शक्ति के प्रयासों की धज्जियां उड़ा दी वो भी रु1900 के लिए। दरअसल एक महिला जिसका बिजली बकाया बिल रु1899 का था और कनेक्शन विच्छेदन 02 नवम्बर को हैं उसके विपरीत उप खंड अधिकारीयों ने महिला की एक न सुनी और कनेक्शन 29 अक्टूबर को ही काट दिया। वहीं दूसरी तरफ आरोप यह भी हैं की काशीराम कॉलोनियों में भी पैसे लेकर लोगो को मुफ्त बिजली बाटी जा रहीं जिससे बिजली विभाग को भी घाटा लग रहा वहीं दूसरी तरफ पूरे नैनी में तमाम दुकानदारों के




पास भी कोई वैध कनेक्शन नहीं होने के बावजूद भी वो कुछ पैसे देकर थड़ले से बिजली इस्तेमाल कर रहें। इन सबसे अलग कितने ही कटियामारो की ओवरलोडिंग छोड़ साहब को एक वैध अनुसाशित रु1899 बकाया वाली बिजली कनेक्शन धारी पर समय से पहले एक्शन लेना की जरुरी हो गया।

## सीईओ के फरमान पर कुंभकर्णी नींद सोए जनपद के साहब

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)म.प्र/ब्यौहारी। गौमाता की सेवा के नाम पर सरकारी खजाने से मलाई चाटने वालों की अब खैर नहीं, जिले में प्रशासनिक व्यवस्था की कायापलट करने के लिए जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी शिवम प्रजापति ने भले ही सख्त और आक्रामक तेवर अपना लिए हों, लेकिन मैदानी हकीकत यह है कि जिला मुख्यालय से जारी होने वाले कड़े आदेश मातहतों की दराजों में पहुंचते-पहुंचते दम तोड़ देते हैं। बीती 15 अक्टूबर को जिला पंचायत के मुखिया ने एक स्पष्ट और दो टूक आदेश जारी कर सोहापुर, बुढ़ार, गोहपारू, जयसिंहनगर और ब्यौहारी जनपद पंचायतों के सीईओ को गौशालाओं की जमीनी हकीकत टटोलने का फरमान सुनाया था, लेकिन इस आदेश की स्याही सूखी नहीं और जनपद के साहबान इसे रद्दी का टुकड़ा समझकर गहरी नींद में सो गए। कागजों में मवेशी, धरातल पर गोलमाल:-जिला पंचायत सीईओ के 15 अक्टूबर के पत्र के मुताबिक सोहापुर, बुढ़ार, गोहपारू, जयसिंहनगर और ब्यौहारी के जनपद सीईओ को यह अनिवार्य किया गया था कि वे अपने क्षेत्र की समस्त पंजीकृत गौशालाओं का प्रत्येक माह खुद निरीक्षण करें। निर्देश साफ था कि गौशाला संचालकों द्वारा पेश किए गए आंकड़ों और पशु चिकित्सा विस्तार अधिकारी द्वारा सत्यापित आंकड़ों का आमने-सामने मिलान किया जाए, ताकि म.प्र. गौसंवर्धन बोर्ड भोपाल को सही रिपोर्ट भेजी जा सके, लेकिन हकीकत के नाम पर जीरो बटा सन्नाटा है, खबर यह है कि आदेश जारी हुए पखवाड़ा बीतने को है, लेकिन जनपद के एक भी जिम्मेदार साहब ने गौशालाओं की दहलीज लांघने की जहमत तक नहीं उठाई। फाइलें फिर से दराजों में धूल फांक रही हैं और भ्रष्टाचार के आरोपी आराम की नींद सो रहे हैं। तभी खुलेगा गौशालाओं का सच! अगर जनपद के मुखिया कागजी घोड़े दौड़ाने के बजाय सचमुच धरातल पर उतरना चाहते हैं, तो उन्हें अपनी कार्यशैली बदलनी होगी। जानकारों का मानना है कि गौशालाओं में असली गौवंश की गिनती का सही सच देखना है, तो निरीक्षण का समय सुबह 5 से बजे के बीच या रात 8 से 9 बजे के बीच होना चाहिए। यदि दिन के उजाले में साहब लोग निरीक्षण करने पहुंचे, तो चतुर गौशाला संचालक पहले ही यह कहकर पल्ला झाड़ लेंगे कि साहब, मवेशी तो अभी बाहर चरने गए हैं और कागजों 6 में जितने आंकड़े दर्ज हैं, उन्हें वही सच मानकर लौटना पड़ेगा। जांच का मतलब खुद जानाः-सबसे मजेदार और गौर करने वाली बात यह है कि जिला पंचायत सीईओ के पत्र में स्पष्ट निर्देश है कि जनपद के मुख्य कार्यपालन अधिकारी को स्वयं इसकी जांच करनी है। वे न तो इस काम के लिए कोई नई जांच समिति या इंजीनियरों का दल गठित कर सकते हैं और न ही पशु विभाग से आंख मूंदकर कागजी जानकारी मंगा सकते हैं, लेकिन अंदरखाने से खबर आ रही है कि हमेशा की तरह इस बार भी जिम्मेदारी से बचने के लिए मातहत अधिकारियों की फौज खड़ी करने की जुगत भिड़ाई जा रही है। अबकी बार कोप के भाजन बनेंगे साहब! इस बार जिला पंचायत के मुखिया शिवम प्रजापति ने मन बना लिया है कि गौवंश के नाम पर चल रहे इस काले खेल और लीपापोती को किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। यदि जनपद के मुखियाओं ने अपनी आदत के मुताबिक खुद औचक निरीक्षण नहीं किया और जिला पंचायत सीईओ का चाबुक चल गया, तो ये तमाम जनपद सीईओ सीधे तौर पर उनके कोप के भाजन बन सकते हैं।

## मातृभूमि सेवा मिशन छह वर्षों से करा रहा निःशुल्क योगाभ्यास,शहीद स्मारक प्रांगण में नियमित शिविर, योग शिक्षक दे रहे स्वास्थ्य का संदेश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। मातृभूमि सेवा मिशन धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र, रायबरेली इकाई की ओर से शहीद स्मारक प्रांगण में पिछले छह वर्षों से दैनिक निःशुल्क योग शिविर संचालित किया जा रहा है। शिविर का उद्देश्य योग, व्यायाम और प्राणायाम के माध्यम से लोगों को स्वस्थ जीवनशैली के प्रति जागरूक करना है। योग शिक्षक अनूप शर्मा ने योगाभ्यास कराया, डॉ. सचिन पटेल ने शारीरिक व्यायाम तथा शिवांशी पाण्डेय ने प्राणायाम का अभ्यास कराया। नियमित योग से शारीरिक सक्रियता, मानसिक शांति और स्वस्थ दिनचर्या को बढ़ावा मिलता है। मिशन के संयोजक प्रदीप पाण्डेय ने कहा कि संस्था छह वर्षों से निःस्वार्थ भाव से निःशुल्क योग सेवाएं प्रदान कर रही है। हमारा संकल्प है कि योग जन-जन तक पहुंचे। मिशन का मूल मंत्र 'मानव सेवा ही ईश्वरीय सेवा है।शिविर को महामंत्री देवेंद्र मिश्रा का संरक्षण प्राप्त है। इस अवसर पर रश्मि पाण्डेय, सुमन देवी, देवता दीन, बीबी सिंह, गुड्डू, सुमित, पुनीत, वीरेंद्र, दिनेश पाण्डेय और आंचल सहित अन्य साधक उपस्थित रहे।



## वाराणसी-दिल्ली के बीच दौड़ेगी वंदे भारत स्लीपर एक्सप्रेस,लग्जरी सुविधाएं और सुरक्षा फीचर जीतेंगे यात्रियों का दिल!

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) लखनऊ/वाराणसी। पीएम मोदी की संसदीय क्षेत्र वाराणसी पूर्वांचल से देश की राजधानी दिल्ली तक सफर करने वाले यात्रियों के लिए बड़ी खुशखबरी है। वाराणसी- नई दिल्ली के बीच अत्याधुनिक वंदे भारत स्लीपर एक्सप्रेस शुरू करने की तैयारी है। इस ट्रेन में यात्रियों को लग्जरी सुविधाओं के साथ आरामदायक सफर का अनुभव मिलेगा। प्रस्तावित कार्यक्रम के अनुसार, 31 अक्टूबर को बनारस स्टेशन पर आयोजित समारोह में रेलमंत्री अश्विनी वैष्णव और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ट्रेन को हरी झंडी दिखाएंगे। रेल मंत्रालय की ओर से जारी जानकारी के मुताबिक, ट्रेन संख्या 27421/27422 वाराणसी-नई दिल्ली वंदे भारत स्लीपर एक्सप्रेस सप्ताह में छह दिन दोनों दिशाओं में संचालित होगी। वाराणसी से नई दिल्ली जाने वाली ट्रेन रात 8:50 बजे रवाना होकर अगले दिन सुबह 6:10 बजे राजधानी पहुंचेगी। करीब 760 किलोमीटर की दूरी तय करने वाली इस ट्रेन का सफर रात में आरामदायक बनाने के लिए विशेष इंतजाम किए गए हैं। रास्ते में ट्रेन प्रयागराज, कानपुर सेंट्रल, अलीगढ़ और गाजियाबाद जैसे प्रमुख स्टेशनों पर ठहराव लेगी। ट्रेन का प्राथमिक रखरखाव वाराणसी में और द्वितीयक अनुरक्षण नई दिल्ली में किया जाएगा। प्रयागराज और कानपुर सेंट्रल में पानी भरने की व्यवस्था भी रहेगी।

वंदे भारत स्लीपर एक्सप्रेस में कुल 16 वातानुकूलित कोच होंगे, जिनमें 11 थर्ड एसी, चार सेकंड एसी और एक फर्स्ट एसी कोच शामिल होगा।

इसमें एक साथ करीब 823 यात्री सफर कर सकेंगे। यात्रियों की सुविधा के लिए आरामदायक कुशन वाली बर्थ और आधुनिक सस्पेंशन प्रणाली लगाई गई है, जिससे यात्रा के दौरान झटकों और शोर को कम करने में मदद मिलेगी।

## चक्रवाती तूफान 'अर्णब' के दृष्टिगत सोनभद्र में सतर्कता, ग्रामीण क्षेत्रों में लाउडस्पीकर से किया जा रहा जागरूक

### जिलाधिकारी ने आमजन से सावधानी बरतने और प्रशासन के दिशा-निर्देशों का पालन करने की अपील की

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

सोनभद्र। चक्रवाती तूफान



'अर्णब' के दृष्टिगत जनपद सोनभद्र में सतर्कता बरती जा रही है। आमजन की सुरक्षा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से जिला प्रशासन द्वारा व्यापक जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों में लाउडस्पीकर के माध्यम से लोगों को मौसम संबंधी चेतावनियों एवं आवश्यक सावधानियों की जानकारी दी जा रही है, ताकि संभावित प्रतिकूल मौसम की स्थिति में जनसुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।जिलाधिकारी चर्चित गौड़ ने अवगत कराया कि जनसामान्य की सुरक्षा जिला प्रशासन की सर्वोच्च प्राथमिकता है। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को सतर्क रहने तथा आमजन तक आवश्यक सूचनाएं पहुंचाने के निर्देश दिए हैं। साथ ही जनपदवासियों से अपील की है कि खराब मौसम के दौरान अनावश्यक यात्रा से बचें और सुरक्षित स्थानों पर रहें। तेज हवाओं, आंधी एवं बारिश के दौरान पेड़ों, बिजली के खंभों तथा कमजोर भवनों के आसपास जाने से बचें। मौसम विभाग एवं जिला प्रशासन द्वारा जारी चेतावनियों और दिशा-निर्देशों का पालन करें। जिलाधिकारी ने कहा कि किसी भी आपातकालीन परिस्थिति में घबराने के बजाय प्रशासन से संपर्क करें तथा अफवाहों पर ध्यान न दें। मौसम से संबंधित आधिकारिक सूचनाओं पर ही भरोसा करें। जिला प्रशासन द्वारा स्थिति पर नजर रखते हुए आवश्यक सावधानियां बरतने तथा जनसामान्य को जागरूक करने के प्रयास किए जा रहे हैं। आपातकालीन सहायता के लिए संपर्क नंबरः 05444-297645, आपदा हेल्पलाइनः 1077, जिला प्रशासन ने जनपदवासियों से अपील की है कि वे स्वयं सतर्क रहें और अपने आसपास के लोगों को भी आवश्यक सावधानियों के प्रति जागरूक करें, जिससे किसी भी संभावित आपदा के दौरान सुरक्षित रहा जा सके।

## शक्तिनगर पुलिस ने तीन वारंटी किए गिरफ्तार,सोनभद्र में विशेष अभियान के तहत हुई कार्रवाई-कोर्ट में किया पेश

सोनभद्र। शक्तिनगर पुलिस ने विशेष अभियान के तहत तीन



वारंटी आरोपियों को गिरफ्तार किया। पुलिस के मुताबिक, उन्हें कोर्ट में पेश किया जा रहा है। पुलिस अधीक्षक सोनभद्र के निर्देश पर अपर पुलिस अधीक्षक (मुख्यालय) और क्षेत्राधिकारी पिपरी के निर्देशन में वारंटियों को गिरफ्तार करने का अभियान चल रहा है। इसी के तहत शक्तिनगर पुलिस टीम ने कार्रवाई की। थाना शक्तिनगर प्रभारी सत्येंद्र राय ने बताया कि कोर्ट से समन आने के बाद भी आरोपी आदेशों का पालन नहीं कर रहे थे। गिरफ्तार आरोपियों में प्रमोद सिंह पुत्र लालजी सिंह शामिल हैं। वे बस स्टैंड, थाना शक्तिनगर, जिला सोनभद्र के निवासी हैं। लालबहादुर पुत्र दशरथ कोल को भी गिरफ्तार किया गया। वे कोहरौलिया, थाना शक्तिनगर, जिला सोनभद्र के निवासी हैं। तीसरे आरोपी धंजय उर्फ धजे पुत्र लालबहादुर हैं। वे जैतपुर जयंत, थाना विन्ध्यनगर, जिला सिंगरौली (मध्य प्रदेश) के निवासी हैं। कार्रवाई करने वाली टीम में प्रभारी निरीक्षक सत्येंद्र कुमार राय, उपनिरीक्षक राजेश कुमार, घनश्याम तिवारी और रंजीत कुमार शामिल थे। टीम में मुख्य आरक्षी दिनेश कुमार भारती और आरक्षी संजीव कुमार तथा विजय प्रताप भी थे।पुलिस ने बताया कि जिले में शांति, सुरक्षा और कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए वारंटियों के खिलाफ अभियान जारी रहेगा।

## खेत की जुताई के विवाद में महिला से हुई मारपीट,घायल महिला को सीएचसी में किया गया भर्ती,पुलिस ने दो लोगों का किया चालान

सोनभद्र। सोनभद्र के दुद्धी में खेत की जुताई के दौरान



ट्रैक्टर दूसरे के खेत में चले जाने से शुरू हुआ विवाद मारपीट में बदल गया। दुद्धी कोतवाली क्षेत्र के दिघुल गांव में हुई इस घटना में चंद्रावती नाम की महिला गंभीर रूप से घायल हो गई। परिजनों ने उसे इलाज के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (सीएचसी) दुद्धी में भर्ती कराया है। महिला ने कोतवाली में तहरीर देकर आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। चंद्रावती के मुताबिक, वह अपने खेत की जुताई कराने के लिए ट्रैक्टर लेकर आई थीं। आरोप है कि जानकारी नहीं होने के कारण ट्रैक्टर दूसरे पक्ष के खेत में चला गया। इसी बात को लेकर विवाद शुरू हो गया। महिला का आरोप है कि देखते ही देखते दूसरे पक्ष के परिवार के लोग मौके पर पहुंच गए और उनके परिवार पर हमला कर दिया। पीड़िता ने आरोप लगाया कि मारपीट में उसे, उसके माता-पिता और पति को जमकर पीटा गया। इस दौरान उसकी आंख और शरीर के अन्य हिस्सों में काफी चोटें आईं। घटना के बाद परिवार के लोग उसे उपचार के लिए सीएचसी दुद्धी लेकर पहुंचे, जहां उसे भर्ती कराया गया। चंद्रावती का यह भी आरोप है कि दूसरे पक्ष के लोग आएदिन उनके परिवार के साथ गाली-गलौज और मारपीट करते रहते हैं। खेत की जुताई को लेकर हुआ विवाद इसी तरह बढ़ गया और मामला मारपीट तक पहुंच गया। पुलिस से कार्रवाई की मांगः-घायल महिला ने घटना की तहरीर दुद्धी कोतवाली में देकर मामले की जांच और आरोपियों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की मांग की है। उधर वरिष्ठ उप निरीक्षक संजय कुमार सिंह ने बताया कि महिला के द्वारा शिकायती प्रार्थना पत्र दिया गया था जांच के बाद दो लोगों के विरुद्ध कार्रवाई करते हुए चालान किया गया है।

## सोनभद्र साइबर ठगी में सिंगरौली के दो आरोपी गिरफ्तार,ट्रस्ट के खाते में 2.37 करोड़ के संदिग्ध लेन-देन की जांच

सोनभद्र। उत्तर प्रदेश के सोनभद्र जिले में 11.63 करोड़ रुपए की साइबर ठगी के मामले में सिंगरौली के दो लोगों समेत तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। सोनभद्र पुलिस ने मोरवा के आदर्श नगर निवासी राजेश पोद्दार और बरगवां थाना क्षेत्र के गोदवाली निवासी बब्बू प्रसाद प्रजापति को भोपाल से पकड़ा। तीसरा आरोपी सतना जिले का जय कुमार पाण्डेय है। जांच में सत्य सनातन ट्रस्ट के बैंक खाते में करीब 2.37 करोड़ रुपए के संदिग्ध लेन-देन का पता चला है।सोनभद्र के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक ऋषभ रुदवाल ने बताया कि दुद्धी पुलिस और सर्विलांस टीम ने मोबाइल लोकेशन के आधार पर 25 अक्टूबर की रात भोपाल के अयोध्या नगर थाना क्षेत्र में दबिश दी। सी-सेक्टर तिराहे पर यादव टी-स्टाल के पास से राजेश, बब्बू और जय कुमार पाण्डेय को गिरफ्तार किया गया। तीनों को ट्रांजिट रिमांड पर सोनभद्र लाया गया। 35 शिकायतों में 11.63 करोड़ की ठगी का पता चलाः-पुलिस के अनुसार, समन्वय पोर्टल पर दर्ज 35 शिकायतों की जांच में करीब 11.63 करोड़ रुपए की साइबर धोखाधड़ी का पता चला। सत्य सनातन ट्रस्ट के नाम से खुले बैंक खाते में करीब 2.37 करोड़ रुपए के संदिग्ध लेन-देन की जानकारी भी सामने आई है। ट्रस्ट के खाते से ठगी की रकम मंगाने का आरोपः-पुलिस का आरोप है कि ट्रस्ट के संचालक हरिकेश पाण्डेय उर्फ ऋषिकेश ने बैंक खाता खुलवाया और उसका नंबर व एटीएम कार्ड मध्य प्रदेश के कुछ लोगों को दिया। आरोप है कि साइबर ठगी से मिली रकम इन खातों में मंगाई जाती थी। इसके बदले ट्रस्ट अध्यक्ष को 20 प्रतिशत कमीशन दिया जाता था। अब तक आठ गिरफ्तार, कार भी मिलीः-पुलिस के मुताबिक, मामले में तीन चरणों में मुख्य आरोपी समेत कुल आठ लोगों को गिरफ्तार किया जा चुका है। भोपाल से पकड़े गए आरोपियों के पास से हुंडई अमेज कार भी मिली है। मामले में भारतीय न्याय संहिता की विभिन्न धाराओं और आईटी एक्ट की धारा 66डी के तहत केस दर्ज है। पुलिस बैंक खातों, संदिग्ध लेन-देन और अन्य संभावित आरोपियों की भूमिका की जांच कर रही है। गिरफ्तार आरोपियों पर लगे आरोपों की पुष्टि न्यायिक प्रक्रिया के अधीन है।

## गांवों की 250 किशोरियों को माहवारी स्वच्छता की दी जानकारी,अभियान के दौरान सेनेटरी पैड बांटे, स्वास्थ्य के प्रति किया जागरुक

सोनभद्र। सोनभद्र जिले के घोरावल ब्लॉक की आठ ग्राम



पंचायतों में किशोरियों को स्वास्थ्य और माहवारी स्वच्छता के प्रति जागरूक करने के लिए अभियान चलाया गया। फुलरी के सही इस्तेमाल और माहवारी स्वच्छता प्रबंधन की जानकारी दी गई। बैठकों में इस्तेमाल किए गए पैड के सुरक्षित निस्तारण और संक्रमण से बचाव के तरीके भी बताए गए। अभियान के दौरान



लालता जन कल्याण समिति की ओर से यह अभियान 26 से 29 अक्टूबर 2026 तक चला। कार्यक्रम रोज शाम 5 बजे तक आयोजित किया गया। करसोता, सिरसाई, परसिया, फुलवारी, मोहनी, खण्डेउर, कोल्हिहवां और मरुअट गांव में जागरूकता बैठकें हुईं। इनमें किशोरियों को माहवारी के दौरान साफ-सफाई रखने, सेनेटरी पैड कुल 250 किशोरियों को सेनेटरी पैड बांटे गए।

इसका उद्देश्य किशोरियों को माहवारी से जुड़ी सही जानकारी देना और स्वास्थ्य व स्वच्छता के प्रति जागरूक करना था। कार्यक्रम में संस्था के खुर्शीद अहमद, लाल जी, गुलपती, मोबिलाइजर नेहा भारती और संस्था के अध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद मौजूद रहे।

NAINI INDUSTRIAL TRAINING CENTRE
(Govt. Affiliated, Star Graded, Record Holder, ISO Certified Training Centre)
सर्टिफिकेट इन फायर सेफ्टी एण्ड इण्डस्ट्रीयल सिक्योरिटी
फायर सेफ्टी पर जिसकी कमाण्ड, उसकी ही है ग्लोबल डिमाण्ड
कोर्स के बाद सेफ्टी सुपरवाइजर, फायर प्रोटेक्शन, सिक्योरिटी एडमिनिस्ट्रेटर आदि विभिन्न पदों पर नियुक्ति मिल जाती है। रिलीफ एजेन्सी N.G.O., डिफेन्स सर्विसेज फायर सर्विस आर्डिनेन्स फैक्ट्री, महानगर पालिका, नगर निगम, एयरपोर्ट, पावर प्लांट, स्टील प्लान्ट, माइनिंग इन्डस्ट्रीज, पेट्रोलियम कम्पनी, फूड इण्डस्ट्रीज, रिफाइनरीज, टेक्सटाइल मिल, टावर कम्पनी, इलेक्ट्रानिक कम्पनी, कोयले की खदानों एवं जहाजों आदि क्षेत्रों में फायर सेफ्टी के जानकारों को बहुत अधिक मौका मिलता है




नोटः फायर सेफ्टी कोर्स करें और देश -विदेश, सरकारी और प्राइवेट क्षेत्रों में अच्छे पैकेज के साथ नौकरी पायें।
Visit us at www.nainiiti.com Call: 9415608710, 7459860480
Enjoy Publicity

# स्पोर्ट्स






## शहर में आकर बच्चा अकेला हो गया है,दादा-दादी की याद में हर वक्त उदास रहता है, उसे इस नए माहौल में कैसे अभ्यस्त करें

जयपुर। विषय को समझेंगे एक्सपर्ट- डॉ. अमिता श्रृंगी, साइकोलॉजिस्ट, फैमिली एंड चाइल्ड काउंसलर, जयपुर जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- मैं 35 साल का हूं। मेरा 5 साल का बेटा जन्म से अब तक गांव में दादा-दादी और परिवार के दूसरे सदस्यों के साथ जॉइंट फैमिली में रहा है। वहां उसके साथ खेलने के लिए हमेशा कोई-न-कोई बच्चा या बड़ा मौजूद रहता था। नौकरी की वजह से अब हम उसे अपने साथ शहर ले आए हैं। यहां वह ज्यादातर घर में ही रहता है। आसपास उसके खेलने के लिए कोई बच्चा नहीं है। पिछले कुछ समय से वह बहुत चुप और मायूस रहने लगा है और बार-बार दादा-दादी के पास जाने की बात करता है। हमें लगता है कि वह अपने पुराने माहौल को मिस कर रहा है। यहां शहर में वह अकेला पड़ गया है। उसे इस नए माहौल में कैसे एडजस्ट कराएं? जवाब- सवाल पूछने के लिए शुक्रिया। पांच साल के बच्चे के लिए गांव से शहर आना सिर्फ घर बदलना नहीं है। उसके लिए इसका मतलब अपने परिचितों, दोस्तों, डेली रूटीन और सेफ माहौल से दूर होना भी है। जिस बच्चे को अब तक हर समय किसी-न-किसी का साथ मिलता था, उसे अचानक घर में अकेले रहना पड़ रहा है। ऐसे में उसका उदास होना, दादा-दादी को याद करना और गांव वापस जाने की जिद करना स्वाभाविक है। यहां सबसे पहले यह समझना जरूरी है कि बच्चा जानबूझकर परेशान नहीं कर रहा है। वह अपने तरीके से बदलाव का दुख और अकेलापन जाहिर कर रहा है। ऐसे में उसे पेरेंट्स के इमोशनल सपोर्ट की जरूरत है। बच्चे की उदासी की असल वजहः-पांच साल की उम्र में बच्चे अपनी भावनाओं को शब्दों में ठीक से व्यक्त नहीं कर पाते। वे यह भी समझ नहीं पाते कि बदलाव क्यों हुआ है और यह कब तक रहेगा। ऐसे में वे अपने इन व्यवहारों के जरिए परेशानी जाहिर कर सकते हैं- चुप या उदास रहना। बार-बार रोना या चिड़चिड़ा होना। पुरानी जगह पर लौटने की जिद करना। हर समस पेरेंट्स से चिपके रहना। बच्चे की उदासी के पीछे और भी कई वजहें हो सकती हैं। बच्चे की उदासी की असली वजहः- पुराने घर की याद आती है। दादा-दादी की कमी खलती है। नया माहौल अपनाना मुश्किल लगता है। वह बदलाव की वजह नहीं समझता। अपनी भावनाएं शब्दों में नहीं कह पाता। बार-बार लौटने की जिद करता है। माता-पिता से ज्यादा चिपकता है। इसलिए रोता है या चिड़चिड़ाता है।पेरेंट्स क्या करें? बच्चे को जब पुराने घर, दादा-दादी या अपने दोस्तों की याद आए, तो उसे समझाने या चुप कराने की जल्दबाजी न करें। उसकी उदासी को समझें। उसे महसूस होने दें कि उसकी भावनाएं आपके लिए मायने रखती हैं। वह रोए या बार-बार घर लौटने की बात करे तो डांटने की बजाय प्यार से कहें- 'तुम्हें दादी की याद आ रही है न? मुझे पता है कि तुम्हें उनकी कमी खल रही है।' इससे बच्चे को लगेगा कि माता-पिता उसकी भावनाएं समझते हैं। यही भरोसा उसे नए माहौल में सहज होने और धीरे-धीरे बदलाव को स्वीकार करने में मदद करता है। साइकोलॉजी में इसे 'इमोशनल वैलिडेशन' कहते हैं। उसकी भावनाओं को समझें। उदासी को जिद न मानें। जिद करने के लिए डांटें नहीं। बच्चे को चुप न कराएं। बच्चे को ज्ञान नहीं, वैलिडेशन चाहिए। आपको भी याद आती है। कहें कि आप उसे समझते हैं। उसकी बात ध्यान से सुनें। उसकी फीलिंग को स्वीकारें।बच्चे की भावनाओं को कैसे संभालें? भावनाओं में आकर बच्चे से यह वादा न करें कि उसे जल्द ही गांव ले जाएंगे, जब तक कि ऐसा तय न हो। झूठी उम्मीद से उसका भरोसा कमजोर हो सकता है। इसके बजाय- उसे नए घर और आसपास के माहौल से परिचित होने का समय दें। शुरुआत में उसे साथ लेकर पास के पार्क, बाजार या प्ले ग्राउंड में जाएं। बच्चा सहज महसूस करे तो धीरे-धीरे एक्टिविटीज बढ़ाएं। ध्यान रखें, कुछ बच्चे आसपास के माहौल में जल्दी घुलते-मिलते हैं, जबकि कुछ को ज्यादा समय लगता है। अगर वह रोता है तो उसे तुरंत चुप कराने या ध्यान भटकाने की जरूरत नहीं है। पहले उसे सांत्वना दें, फिर किसी पसंदीदा एक्टिविटी में शामिल होने का मौका दें। ऐसी अपेक्षा न रखें कि बच्चा हर समय खुश नजर आए। नए माहौल में सहज होने में समय लग सकता है। इसके साथ ही कुछ बातों का ध्यान रखें-बच्चे को कैसे सहज फील कराएं? बच्चे के साथ वक्त बिताएं। रोज उसके साथ खेलें। बच्चे का रूटीन फिक्स करें। सोते समय कहानी सुनाएं। नियमित समय तय करें। दादा-दादी से रोज बात कराएं। सोने-जागने का समय फिक्स करें। वादे पूरे करें, भरोसा बनाएं। बच्चे को एडजस्ट करने का समय दें। बच्चे को नए माहौल में कैसे एडजस्ट कराएं? आपके मामले में एक बड़ी समस्या यह है कि बच्चा दिन में ज्यादातर समय घर पर रहता है और उसके आसपास खेलने के लिए दूसरे बच्चे भी नहीं हैं। ऐसे में सिर्फ उसे सामाजिक रहना काफी नहीं है। उसे दूसरे बच्चों के साथ जुड़ने के मौके भी देने होंगे। अपने घर के आसपास के पार्क, खेल के मैदान, लाइब्रेरी या बच्चों की एक्टिविटीज वाली जगहों का पता लगाएं। शुरुआत में बच्चे के साथ वहां जाएं। उसे दूसरे बच्चों को खेलते हुए देखने दें और अपने कंफर्ट के अनुसार उनके पास जाने दें। तुरंत दोस्त बनाने या सबके साथ घुलने-मिलने का दबाव न डालें। अगर आसपास कोई परिचित परिवार है, जिसके बच्चे लगभग उसकी उम्र के हैं तो उनके साथ नियमित रूप से खेलने का समय तय कर सकते हैं। एक ही बच्चे से बार-बार मिलना दोस्ती को आसान बना सकता है। बच्चे को नए दोस्त बनाने में मदद करने के लिए ये तरीके अपना सकते हैं- बच्चे के नए दोस्त कैसे बनाएं ? रोज पार्क में ले जाएं। शुरुआत में साथ रहें। हमउम्र बच्चों से मिलवाएं। दोस्ती के लिए दबाव न डालें। बच्चे को खुद दोस्ती करने दें। छोटे ग्रुप से शुरुआत करें। दोस्ती करे तो तारीफ करें। घर पर प्ले-डेट रखें। दादा-दादी से जुड़ाव जरूरी बच्चे के लिए दादा-दादी सिर्फ परिवार के सदस्य नहीं, बल्कि उसके जीवन का अहम हिस्सा हैं। शहर आने का मतलब यह नहीं होना चाहिए कि वह उनसे पूरी तरह कट जाए। रोज वीडियो कॉल पर दादा-दादी से बात कराएं। इसके लिए एक नियम तय करें। अगर वह बार-बार कहता है कि उसे गांव जाना है तो हर बार समझाने की कोशिश न करें। पहले उसकी बात सुनें, फिर अपनी स्थिति बताएं। अगर माता-पिता दोनों व्यस्त हैं तो बच्चे की देखभाल के लिए किसी भरोसेमंद व्यक्ति की व्यवस्था करें। ऐसा व्यक्ति चुनें, जो बच्चे की जरूरतों को समझे और उसके साथ संवेदना और धैर्य से पेश आए। बच्चे को नए शहर में एडजस्ट कराने का मतलब यह नहीं कि उसे गांव की याद दिलाने वाली हर चीज से दूर कर दिया जाए। दादा-दादी उसके जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। उनके संपर्क से बच्चे को इमोशनल सपोर्ट मिलता है। पेरेंट्स न करें ये गलतियांः-पेरेंट्स कभी-कभी बच्चे का ध्यान डायवर्ट करने के लिए उसे खिलौने, मोबाइल या दूसरी चीजें देने लगते हैं। लेकिन अकेलेपन की समस्या का समाधान केवल मनोरंजन नहीं है। बच्चे को किसी ऐसे व्यक्ति की जरूरत होती है, जिसके साथ वह खेल सके, बात कर सके और अपनी भावनाएं शेयर कर सके। उसे उदास देखकर यह न कहें कि 'तुम्हारे पास सब कुछ तो है, फिर दुखी क्यों हो?' इससे बच्चा अपनी भावनाएं छिपाने लगता है। उसकी तुलना गांव में रहने वाले या दूसरे बच्चों से न करें। पेरेंट्स को कुछ गलतियों से बचना चाहिए- उदासी के लिए डांटें नहीं। दूसरे बच्चों से तुलना न करें। जबरन दोस्त बनाने को न कहें। हर समय स्क्रीन न थमाएं। गांव की यादों को नकारें नहीं। तुरंत बदलने का दबाव न डालें। एक्सपर्ट से कब मिलें? नए माहौल में आने के बाद कुछ समय तक उदासी या असहजता सामान्य है। लेकिन इन संकेतों को नजरअंदाज न करें- लगातार उदास रहना। खेलने में रुचि खोना। नींद, भूख में बदलाव। ज्यादा चिड़चिड़ापन। बार-बार बीमार होना। लोगों से बात न करना। ऐसे बदलाव लंबे समय तक बने रहें, बढ़ें या बच्चे की रोजमर्रा की जिंदगी प्रभावित करने लगें, तो चाइल्ड साइकोलॉजिस्ट से सलाह लें। अंतिम बातः-बच्चे को नई जगह में ढलने के लिए समय, अपनापन और दूसरे बच्चों के साथ घुलने-मिलने के मौके दें। उसे भरोसा दिलाएं कि पुराने लोग आज भी उससे प्यार करते हैं और नए शहर में भी वह नए दोस्त बना सकता है। आपके धैर्य और सहयोग से उसके लिए नए माहौल में सहज होना आसान होगा।







## चोटिल फर्ग्यूसन भारत के खिलाफ आखिरी 2 टी-20 से बाहर,भारत सीरीज में 3-0 से आगे,फिशर टीम में शामिल

स्पोर्ट डेस्क। न्यूजीलैंड के तेज गेंदबाज लॉकी फर्ग्यूसन भारत के खिलाफ टी-20 सीरीज के आखिरी 2 मैचों से बाहर हो गए हैं। उनके दाएं पैर की पिंडली में चोट लगी है। न्यूजीलैंड क्रिकेट बोर्ड ने गुरुवार को बताया कि मैट फिशर को टीम में शामिल किया गया है। सीरीज का चौथा मैच शुक्रवार को ऑकलैंड में खेला जाएगा। फर्ग्यूसन को यह चोट 24 अक्टूबर को दूसरे मैच के दौरान लगी थी। स्कैन में मामूली खिंचाव की पुष्टि हुई है। उन्हें वापसी में करीब एक सप्ताह और लग सकता है। मैट हेनरी भी टी-20 सीरीज से बाहरः- तेज गेंदबाज मैट हेनरी भी टी-20 सीरीज से बाहर हो गए हैं। दूसरे मैच के दौरान उनके दाएं जांघ के अगले हिस्से में दर्द हुआ था। उन्हें ठीक होने में एक से दो सप्ताह लग सकते हैं। हेनरी को पहले से तय वर्कलोड मैनेजमेंट के तहत आगामी वनडे सीरीज के लिए ब्लैककैप्स में लौटना था। एनजेडसी ने कहा कि वह अब भी तय कार्यक्रम के अनुसार वापसी कर सकते हैं। रैंडेल को न्यूजीलैंड ए में बुलायाः-सेंट्रल स्टैग्स के तेज गेंदबाज ब्रेट रैंडेल को न्यूजीलैंड ए टीम में बुलाया गया है। वह भारत ए के खिलाफ दूसरे मैच में फिशर की जगह लेंगे। काइल जैमीसन के तय वर्कलोड मैनेजमेंट के तहत वे वेलिंगटन में ही रहेंगे। वे शनिवार को फोर्ड ट्रॉफी के दूसरे दौर में कैंटरबरी के लिए खेलने के लिए उपलब्ध हैं। जैमीसन सोमवार को वनडे सीरीज के लिए न्यूजीलैंड टीम से दोबारा जुड़ेंगे। कोच को वनडे सीरीज में वापसी की उम्मीदः-मुख्य कोच रॉब वॉल्टर ने कहा कि उन्हें उम्मीद है कि फर्ग्यूसन और हेनरी 4 नवंबर से भारत के खिलाफ शुरू होने वाली वनडे सीरीज में खेलेंगे। वॉल्टर ने कहा, 'हम लॉकी और मैट के लिए निराश हैं। इंटरनेशनल क्रिकेट में चोटें खेल का हिस्सा हैं, लेकिन मैचों से बाहर होना आसान नहीं होता।'



## गिल ने नेट्स पर तैयारी शुरू की,न्यूजीलैंड के खिलाफ 4 नवंबर से वनडे सीरीज,राहुल और गुरनूर भी जुड़े, रोहित-कोहली की वापसी

स्पोर्ट डेस्क। ऑकलैंड में 29 अक्टूबर को भारत के टेस्ट और वनडे कप्तान शुभमन गिल ने नेट्स पर अभ्यास किया। भारत और न्यूजीलैंड के बीच पांच मैचों की वनडे सीरीज 4 नवंबर से ईडन पार्क में शुरू होगी। विकेटकीपर बल्लेबाज केएल राहुल और तेज गेंदबाज गुरनूर बरार भी भारतीय टीम से जुड़ गए हैं। इस सीरीज से सीनियर बल्लेबाज रोहित शर्मा और विराट कोहली की वनडे टीम में वापसी होगी। गिल को आखिरी दो वनडे से आराम दिया गयाः-वनडे फॉर्मेट में गिल के साथ-साथ श्रेयस अय्यर भी कप्तान बनाए गए हैं। गिल शुरुआती तीन वनडे में कप्तानी करेंगे। वहीं, आखिरी दो वनडे में श्रेयस अय्यर कमान संभालेंगे। इस दो मैचों के दौरान टेस्ट की तैयारी के लिए गिल के साथ उप कप्तान केएल राहुल को आराम दिया जाएगा। टेपल डिवाइस पहने दिखे गिलः-गिल ने अभ्यास के दौरान माथे पर 'टेपल' नाम का फिटनेस ट्रैकिंग डिवाइस पहना था। उन्होंने बल्लेबाजी कोच सितांशु कोटक से बातचीत भी की।इसके बाद गिल नेट्स पर बल्लेबाजी करने पहुंचे। इस दौरान उन्होंने अपने करीबी दोस्त और भारत के टी-20 ओपनर अभिषेक शर्मा से भी बातचीत की। अभिषेक ने वेलिंगटन में खेले गए तीसरे टी-20 मैच में 38 गेंदों पर 113 रन बनाए थे। भारत ने 199 रन के टारगेट का पीछा करते हुए यह मैच जीता था। टी-20 सीरीज में भारत ने 3-0 की अजेय बढ़त बना रखी है।

राहुल और ईशान ने भी किया अभ्यासः-ग्रोइन की चोट से उबर रहे ईशान किशन और केएल राहुल ने भी नेट्स पर बल्लेबाजी की। वनडे सीरीज के बाद भारत और न्यूजीलैंड के बीच दो टेस्ट मैचों की सीरीज खेली जाएगी। यह सीरीज 19 नवंबर से शुरू होगी और गिल इसमें भारत की कप्तानी करेंगे।



## मुंबई इंडियंस से अलग हुए लसिथ मलिंगा,आईपीएल में 15 सीजन फ्रेंचाइजी का हिस्सा रहे

स्पोर्ट डेस्क। मुंबई इंडियंस ने एप्रल 2027 से पहले अपने कोचिंग स्टाफ 3 और बड़े बदलाव किए हैं। टीम ने लंबे समय तक टीम का हिस्सा रहे तेज गेंदबाजी कोच लसिथ मलिंगा, बॉलिंग कोच पारस म्हाम्ब्रे और फील्डिंग कोच कार्ल हॉपकिन्सन को हटा दिया है। मलिंगा 11 सीजन मुंबई इंडियंस के लिए खेले। वे 2008 से 2017 तक टीम के मुख्य गेंदबाज रहे। फिर 2018 में फ्रेंचाइजी ने उन्हें बॉलिंग मेंटर बनाया। फिर 2019 में उन्होंने खिलाड़ी के तौर पर टीम में वापसी की। इसके बाद वे पिछले 3 सीजन तक बॉलिंग कोच रहे। फ्रेंचाइजी ने गुरुवार को इसकी घोषणा की।

## विमेंस प्रीमियर लीग ऑक्शन में यूपी ने 6 ऑलराउंडर खरीदे,आरसीबी सबसे बैलेंस टीम

### मुंबई का मिडिल ऑर्डर दमदार; 5 टीमों की स्ट्रेंथ-वीकनेस

स्पोर्ट डेस्क। विमेंस प्रीमियर लीग (डब्लूपीएल) 2027 ऑक्शन में पांचों टीमों ने अपनी जरूरत के हिसाब से स्क्वॉड में बदलाव किए। यूपी वॉरियर्ज ने 6 ऑलराउंडर्स पर भरोसा जताया। आरसीबी ने अपने कोर ग्रुप को मजबूत किया। मुंबई इंडियंस ने भारतीय खिलाड़ियों की बेंच स्ट्रेंथ बढ़ाई। हालांकि, ऑक्शन में खिलाड़ियों को खरीदना सिर्फ पहला कदम है। टीमों के लिए असली चुनौती नए और पुराने खिलाड़ियों के बीच तालमेल बनाने, सही कॉम्बिनेशन चुनने और मैदान पर अपनी कमजोरियों को दूर करने की होगी। ऑक्शन से पहले पांचों टीमों के पास कुल 27 स्लॉट खाली थे। इनमें 25 खिलाड़ियों को खरीदा गया। आरसीबी और दिल्ली के पास एक-एक स्लॉट खाली रह गया। दोनों के पर्स में सिर्फ रु5-5 लाख बचे हैं। 1. यूपी वॉरियर्जः मोलिन्यू सबसे महंगी खिलाड़ी, राणा-आशा को 30-30 लाख में लियाः-2026 सीजन के पॉइंट्स टेबल में आखिरी स्थान पर रही यूपी वॉरियर्ज ने सोफी मोलिन्यू पर रु1.10 करोड़ खर्च किए। सोफी ने ऑस्ट्रेलिया को टी-20 वर्ल्ड कप 2026 जिताया था। उनके अलावा टीम ने ग्रेस हैरिस, स्नेह राणा, आशा शोभना और सुषमा वर्मा को रु30-30 लाख में शामिल किया। स्ट्रेंथः मेग लैनिंग, फीबी लिचफील्ड, हरलीन देओल और प्रतीका रावल जैसे बल्लेबाजों से मजबूत टॉप ऑर्डर मिला है। दीप्ति शर्मा और स्नेह राणा जैसे ऑलराउंडर्स बल्लेबाजी के साथ गेंदबाजी में भी योगदान दे सकते हैं। वीकनेसः टीम के पास विदेशी खिलाड़ियों के 6 विकल्प हैं, लेकिन सभी को एक साथ प्लेइंग-11 में शामिल करना संभव नहीं होगा। सामान्य नियम के तहत चार विदेशी खिलाड़ी खेल सकते हैं। स्कॉटलैंड की कैथरीन ब्राइस को शामिल करने पर एसोसिएट देश के खिलाड़ियों से जुड़े विशेष नियम के तहत पांच विदेशी खिलाड़ियों का विकल्प मिल सकता है। 2. रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरुः चैंपियन कोर मजबूत, नए बल्लेबाजों पर नजरः-डिफेंडिंग चैंपियन आरसीबी ने ऑक्शन में जेस जोनासन को रु40 लाख, तेजल हसबनिस और क्लो ट्रायन को 30-30 लाख और वृंदा दिनेश को रु10 लाख में खरीदा। स्ट्रेंथः स्मृति मंधाना, एलिस पेरी, जॉर्जिया वोल और ऋचा घोष की मौजूदगी बल्लेबाजी को मजबूती देती है। गेंदबाजी में लॉरेन बेल, राधा यादव, श्रेयंका पाटिल, पूजा वस्त्राकर और अरुंधति रेड्डी विकल्प हैं। वीकनेसः मिडिल ऑर्डर में तेजल हसबनिस और वृंदा दिनेश को अपनी भूमिका साबित करनी होगी। शुरुआती विकेट गिरने पर पारी संभालना और आखिरी ओवरों में रन गति बढ़ाना अहम होगा। 3. दिल्ली कैपिटल्सः 15 साल की उमा काशवी पर दांव लगायाः-दिल्ली कैपिटल्स ने 15 साल की उमा काशवी पर दांव लगाया है। कर्नाटक की काशवी विमेंस प्रीमियर लीग के ऑक्शन में बिकने वाली सबसे युवा खिलाड़ी हैं। वे 15 साल 202 दिन की आयु में दिल्ली का हिस्सा बनी। फ्रेंचाइजी ने किरण नवगिरे को रु75 लाख में खरीदा। वे सबसे महंगी भारतीय खिलाड़ी रहीं। टीम ने स्कॉटलैंड की कर्स्टी गॉर्डन और नाजमा खान को भी रु10-10 लाख में शामिल किया। स्ट्रेंथः शेफाली वर्मा, लौरा वोल्वार्ट और जेमिमा रोड्रिग्स से टॉप ऑर्डर को स्थिरता और तेजी मिलती है। किरण नवगिरे के आने से बल्लेबाजी में एक और आक्रामक विकल्प जुड़ा है। मारिजाने कैप, एनाबेल सदरलैंड और चिनेल हेनरी बल्ले तथा गेंद, दोनों से योगदान दे सकती हैं। वीकनेसः दिल्ली 4 बार फाइनल तक पहुंचने के बावजूद अब तक खिताब नहीं जीत सकी है। ऐसे में टीम को बड़े मैचों में दबाव संभालने और सही समय पर सही कॉम्बिनेशन चुनने पर ध्यान देना होगा। विकेटकीपिंग में ममता मडिवाला एकमात्र प्लेयर हैं। 4. गुजरात जायंट्सः 3 खिलाड़ियों पर रु80 लाख खर्च कर स्क्वॉड पूरा कियाः-गुजरात जायंट्स ने ऑक्शन में जी कमालिनी को रु40 लाख, आयरलैंड की ऑलराउंडर ऑर्ला प्रेंडरगास्ट को रु30 लाख और 16 साल की समायरा राघव को रु10 लाख में खरीदा। टीम ने कुल रु80 लाख खर्च किए। स्ट्रेंथः बेथ मूनी, एश्ले गार्डनर और सोफी डिवाइन जैसे अनुभवी विदेशी खिलाड़ी बल्लेबाजी और गेंदबाजी, दोनों करती हैं। मूनी विकेटकीपिंग का विकल्प भी देती हैं, जबकि जॉर्जिया वेयरहैम स्पिन और बल्लेबाजी में उपयोगी हैं। भारतीय गेंदबाजी में रेणुका सिंह ठाकुर, काश्वी गौतम, राजेश्वरी गायकवाड़ और तनुजा कंवर से अलग-अलग परिस्थितियों में मदद मिलेगी। वीकनेसः बल्लेबाजी में मूनी और गार्डनर की भूमिका अहम रहेगी। शुरुआती विकेट जल्दी गिरने पर मध्यक्रम को जिम्मेदारी उठानी होगी। जी कमालिनी से बल्लेबाजी और विकेटकीपिंग के विकल्प बढ़ सकते हैं, लेकिन उन्हें लगातार प्रदर्शन करना होगा। 5. मुंबई इंडियंसः मजबूत विदेशी कोर, भारतीय बल्लेबाजी की परीक्षाः-मुंबई इंडियंस ने ऑक्शन में 6 भारतीय खिलाड़ियों को खरीदा। श्वेता सहरावत को रु20 लाख, जबकि दिशा कासट, लतिका इनामदार, भारती रावल, सानिका चालके और अक्षिता भगत को रु10-10 लाख में शामिल किया। स्ट्रेंथः नैट साइवर-ब्रंट, हेली मैथ्यूज और अमेलिया केर जैसे ऑलराउंडर्स बल्लेबाजी और गेंदबाजी दोनों में गहराई देते हैं। हरमनप्रीत कौर मध्यक्रम की अहम कड़ी हैं। शबनिम इस्माइल तेज गेंदबाजी में अनुभव लाती हैं, जबकि स्पिन के लिए भी विकल्प मौजूद हैं। वीकनेसः श्वेता सहरावत और सानिका चालके जैसी युवा खिलाड़ियों को बड़े स्तर पर अपनी क्षमता साबित करनी होगी। विकेटकीपिंग में रहिला फिरदौस और लतिका इनामदार विकल्प हैं, इसलिए टीम को पहली पसंद तय करनी होगी।



## क्या होगा जब एआई हमारी 'इजाजत' लेना बंद कर देगा?

एक दृश्य की कल्पना करें। कोई कंपनी अपनी टीम को एक कठिन टास्क देती है। फिर हर



सदस्य को अलग-अलग कमरों में बंद कर देती है और उनसे कहती है कि समस्या का समाधान खोजें। लेकिन किसी तरह वे आपस में बात करने का रास्ता खोज लेते हैं और एक-दूसरे से अपने सुझाव साझा करने लगते हैं। उनमें से कुछ खुद को अधिक निष्ठावान दिखाने के लिए दूसरी कंपनी के कंप्यूटरों में सेंध भी लगा देते हैं!? अब इस दृश्य में कर्मचारियों की जगह एआई को रख दीजिए! लास वेगास में हुई ब्लैक हैट साइबर सिक्योरिटी कॉन्फ्रेंस में ओपनएआई के रिसर्चर्स ने कुछ ऐसी ही कहानी सुनाई थी। मई में एक आंतरिक मूल्यांकन के दौरान एआई एजेंट्स को कठिन साइबर-सुरक्षा कार्य दिए गए थे। इन एजेंट्स ने दूसरे एजेंट्स को खोज निकाला। इसके बाद जो हुआ, वह टीमवर्क था। अलग-अलग सेशंस में रन कर रहे इन एजेंट्स ने एक-दूसरे से अपने फीडबैक साझा किए, काम बांटा और किसी प्रोजेक्ट पर साथ काम करने वाले सहकर्मियों की तरह समन्वय किया। जुलाई का मध्य आते-आते तो सेंधमारी की स्थिति बन चुकी थी। एजेंट्स ने ओपन इंटरनेट तक पहुंच बनाई और एक प्रमुख एआई प्लेटफॉर्म हगिंग फेस के सिस्टम में प्रवेश कर गए। ओपनएआई ने इसे एक खतरा और चेतावनी माना है। लेकिन यह इस तरह की अकेली घटना नहीं थी। इसी साल का एक और मामला सामने आया, जिसे लोगों से छुपाया गया था। इसमें एजेंट्स ने जर्मन भाषा की ऐसी प्रोग्रामिंग विकी को- जिसके बारे में बहुत कम लोग जानते थे- सार्वजनिक बुलेटिन बोर्ड में बदल दिया था। लगभग इसी दौरान एंथ्रोपिक और मेटा ने भी अलग-अलग घटनाओं का खुलासा किया, जिनमें परीक्षण के दौरान उनके अपने मॉडल लाइव इन्फ्रास्ट्रक्चर पर काम कर रहे थे। चीजें अब काबू के बाहर होने लगी थीं। इसी पृष्ठभूमि में गत 8 सितम्बर को ओपनएआई और एंथ्रोपिक में तीन वर्षों तक प्री-ट्रेनिंग रिसर्च पर काम करने वाले जैकब कॉक्सन ने एंथ्रोपिक से अपने इस्तीफे की घोषणा की थी। उन्होंने लिखा कि दोनों में से कोई भी कंपनी जिम्मेदारी से काम नहीं कर रही थी; दोनों ऐसी सुपरइंटेलिजेंस की ओर दौड़ रही थीं, जो खुद को बेहतर बनाने में सक्षम होगी और- उनके शब्दों में- 'वे हमारी जिंदगियों के साथ जुआ खेल रही हैं!' कॉक्सन ने खुद उन सिस्टम्स को बनाने में योगदान दिया है, जिनके बारे में वे अब चेतावनी दे रहे हैं। साइंस फिक्शन ने हमें ऐसी मशीनों से डरना सिखाया है, जो चेतना हासिल कर लें और हमसे लड़ने का फैसला कर लें। लेकिन शायद डर की यह सही वजह नहीं है। किसी एआई सिस्टम को किसी नेटवर्क पर हमला करने के लिए न तो गुस्से की जरूरत है और न ही ज्यादा संसाधनों के लालच की। उसे बस एक लक्ष्य चाहिए, उस लक्ष्य को हासिल करने की पर्याप्त क्षमता चाहिए, और सुरक्षा-व्यवस्था में ऐसी खामी चाहिए, जिसका वह फायदा उठा सके। किसी जीपीएस सिस्टम को सबसे तेज रास्ता खोजने का निर्देश दीजिए, वह वैसा कर दिखाएगा। अब उसे इतनी ताकत दीजिए कि वह रास्ते में आने वाली हर उस चीज को हटा सके, जो उसकी रफ्तार कम करती है- ट्रैफिक लाइटें, टोल बूथ, दूसरी गाड़ियां- तो मंजिल तक पहुंचने के लिए नेविगेटर क्या-क्या कर सकता है? एआई में इस समय हो रहा असली बदलाव ऐसा ही है। बैंक इसलिए ईमानदार नहीं रहते कि उनके कर्मचारी चोरी न करने का वादा करते हैं, और हवाई यात्राएं इसलिए सुरक्षित नहीं हैं कि पायलट भरोसेमंद हैं। हम कई सेफ्टी-लेयर्स बनाते हैं : सीमित पहुंच, संवेदनशील एक्शन के लिए अनुमति, ऐसे रिकॉर्ड जिन्हें इसमें शामिल कोई व्यक्ति बदल न सके और डिप्लॉयमेंट से पहले परीक्षण। एआई के साथ भी यही होना चाहिए। टेक-कंपनियां हमें भरोसा दिलाती रहती हैं कि हमेशा कोई ना कोई मनुष्य प्रक्रिया में शामिल होगा। लेकिन हगिंग फेस में हुई सेंधमारी इस भरोसे की सीमाएं दिखाती है। एआई अब चैटबॉट्स से निकलकर बैंकिंग, हेल्थकेयर, एनर्जी ग्रिड और सरकारी सेवाओं में प्रवेश कर रहा है। इसे जिम्मेदारी से विकसित करने का मतलब है कि शक्ति और सीमाएं साथ-साथ स्थापित की जाएं- यह नहीं कि पहले शक्ति दे दी जाए और बाद में सीमाएं तय की जाएं। अब सवाल यह नहीं रह गया है कि एआई सिस्टम्स कितने स्मार्ट हो सकते हैं। सवाल यह है कि किसी के यह जांचने से पहले कि वे अब भी हमारी सुनते हैं या नहीं, हम उन्हें कितनी ताकत सौंप चुके होंगे। हम इस मामले में गैर-जिम्मेदाराना रवैये का परिचय नहीं दे सकते। (प्रोजेक्ट सिंडिकेट,तारिक मलिक)

## उन पिताओं को सलाम, जिन्हें कभी रविवार की भी छुट्टी नहीं मिली!

'क्या तुमने कभी मेरे पिता को स्कूल में होने वाली पैरेंट्स-टीचर्स मीटिंग (पीटीएम) में आते देखा है? वे हमेशा दफ्तर में व्यस्त रहते थे और मेरे जीवन के उन महत्वपूर्ण पड़ावों में शामिल होने की उन्हें कभी फिक्र नहीं हुई। हमेशा मां ही आती थीं'। फिल्म 'लक्ष्य' में एक दृश्य है, जिसमें ऋतिक रोशन अपने बचपन के दोस्त से पिता की शिकायत कर रहे होते हैं। पिता उनके द्वारा चुने गए कॅरिअर को लेकर सख्त असहमति रखते हैं। लेकिन आज की कहानी उस हीरो की नहीं, बल्कि उन पिता की है, जिन्हें यह तक नहीं पता कि इतनी मेहनत करके अपने बच्चों का जीवन सुरक्षित करने के लिए भी उनकी आलोचना की जा रही है। यह उन पिताओं की कहानी है, जिन्होंने शायद ही कभी अपने बच्चों से 'आई लव यू' कहा हो, क्योंकि वे अपने प्यार को हकीकत में साबित करने में व्यस्त थे। यह उन पिताओं की कहानी है, जो अपने बच्चों को कभी वीकेंड में बाहर घुमाने नहीं ले जा सके- पीटीएम में जाना तो दूर की बात है। क्योंकि उनके लिए काम से एक दिन की गैरहाजिरी का मतलब था पूरे परिवार के लिए एक दिन की आमदनी का नुकसान। उनके लिए रविवार जैसी कोई चीज नहीं थी। अगर आप सोच रहे हैं कि क्या आज भी इस दुनिया में ऐसे पिता मौजूद हैं, तो आइए, मैं आपका परिचय 73 वर्षीय बुरसी प्रधान और उनकी 62 वर्षीय पत्नी अनुसया से कराता हूं। वे ओडिशा के एक दूरदराज गांव में एक जर्जर मकान में रहते हैं। बुरसी ने अपनी जिंदगी का बड़ा हिस्सा दिहाड़ी मजदूर के रूप में बिताया। काम की तलाश में वे केरल तक गए, क्योंकि उनके लिए एक दिन काम न करने का मतलब था परिवार का एक दिन भूखा रहना। जब खराब स्वास्थ्य ने उन्हें वापस गांव लौटने पर मजबूर कर दिया और पूरे परिवार की गुजर-बसर खेती से होने वाली आमदनी पर निर्भर हो गई, तब जाकर बुरसी को अपनी वर्षों की कड़ी मेहनत का फल मिलना शुरू हुआ। बुरसी के बड़े बेटे बिभीषण ने 2021 में कोरापुट के श्री लक्ष्मण नायक मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल में दाखिला लिया। पिछले साल बेटी मोनालिसा भी उसी कॉलेज में पहुंच गई। इस साल बेटे असरिया और बेटी सुनेमी ने भी क्रमशः भवानीपटना और बलांगीर के सरकारी मेडिकल कॉलेजों में एमबीबीएस की सीट हासिल कर ली। उनके भाई के घर में भी कुछ ऐसा ही हुआ। बुरसी के छोटे भाई की बेटी मिनखी ने भी इस साल नीट पास किया और पुरी के श्री जगन्नाथ मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल में दाखिला लिया।



सात बच्चों के पिता बुरसी के लिए इनमें से कुछ भी आसानी से नहीं हुआ था। बुरसी जैसे पिताओं का सबसे बड़ा सपना बहुत सीधा-सरल होता है- वे चाहते हैं कि उनके बच्चे वैसी जिंदगी न जिएं, जो उन्होंने जी है। मेरे बच्चो, हो सकता है कि कुछ पिताओं के पास तुम्हारे लिए अपना प्यार जताने का समय न रहा हो। जब तुम फैशनेबल कपड़े चाहते थे, तब शायद वे यह सोच रहे होते थे कि उन्हें खरीदने के लिए कुछ और रुपये कैसे कमाए जाएं। जब तुम बेहतर खाना चाहते थे, तब शायद वे सोच रहे होते थे कि एक दिन और कैसे काम किया जाए। जब तुम चैन की नींद सो रहे थे, तब शायद वे अगले दिन के खर्चों का हिसाब लगा रहे थे। वे तुम्हें अपना समय इसलिए नहीं दे पाए, क्योंकि वे तुम्हें एक बेहतर जिंदगी देने की कोशिश में व्यस्त थे। इसीलिए जब वे तुम्हारे लिए नए कपड़े लेकर आएं, तो उनसे यह भी पूछो कि उन्होंने अपने लिए क्या खरीदा। जब तुम उस पिज्जा का मजा ले रहे हो, जिसके लिए उन्होंने अपना क्रेडिट कार्ड स्वाइप किया है, तो इस बात पर भी ध्यान दो कि वे खुद क्या खा रहे हैं। और जब वे रात में बिस्तर पर बेचैनी से करवटें बदल रहे हों, तो जाकर उनके पैर दबा आओ। उनसे कहो कि तुम उनके साथ हो और एक परिवार के रूप में हम इस मुश्किल दौर से भी पार निकल जाएंगे। फिर देखना, वे कितने सुकून से सोते हैं। ओडिशा के दूरदराज गांव के बुरसी की कहानी ने मुझे उन गलत समझे गए पिताओं की याद दिला दी, जो मुंबई, दिल्ली और दूसरी जगहों पर साल के 365 दिन काम करते हैं, ताकि उनके 'घर की नैया पार हो जाए'। फंडा यह है कि ज्यादातर घरों में पिता शायद ही कभी कहते हैं, 'मैं तुमसे प्यार करता हूं।' और शायद पितृत्व की यही सबसे खूबसूरत परिभाषा है कि एक व्यक्ति चुपचाप कठिन जिंदगी को स्वीकार कर ले, ताकि उसके बच्चे थोड़ी आसान जिंदगी जी सकें। मैं अनुरोध करूंगा कि ऐसे पिताओं को सलाम कीजिए। एन. रघुरामन

## क्या आपने अपने बच्चों को जिंदगी का सबसे अहम सबक सिखाया है?

क्या आपने कभी अपने बच्चों से कहा है कि वे ट्रैफिक सिग्नल पर गुलाब, फ्लॉवर बुके या छोटी-मोटी चीजें बेचने वाले गुलाब का बंच तो दूसरे में कुछ छोटे खिलौने या सजावटी चीजों की लड़ियां होती हैं। गाड़ियों की विंडो पर टिकी उसकी नजरें एक और कार पर पहुंचता है। गुलाब खिड़की की ओर बढ़ाते हुए चमकीली मुस्कान के साथ कहता है कि 'क्या आप मैडम



बच्चों को गौर से देखें? अगली बार जब आप डिनर के बाद घर लौटें तो उनसे कहें कि वे देखें कि रास्ते में पड़ने वाले कुछ सिग्नलों पर क्या होता है। शायद वे ऐसा सबक सीख सकें, जो कोई क्लासरूम नहीं सिखा सकता। कम से कम मुंबई में तो यह नजारा आम है। सिग्नल रेड होता है और कारों की कतार रुक जाती है। गाड़ियों के भीतर लोग एसी के आराम में बैठ जाते हैं। कुछ फोन देखते हैं, कुछ बातचीत में लगे रहते हैं और शेष ग्रीन लाइट होने के इंतजार में सामने देखते रहते हैं। लेकिन बाहर एक बिल्कुल अलग दुनिया जीवंत हो उठती है। फीकी कमीज और फटी शॉर्ट्स पहने एक लड़का नंगे पैर जल्दबाजी में गाड़ी चलाने वालों और तेज रफ्तार टू-व्हीलर्स से बचता हुआ तेजी से कारों के बीच दौड़ता है। उसके एक हाथ में किसी ऐसे को तलाशती हैं, जो उससे कुछ खरीद ले। उसके लिए हर बार रेड सिग्नल होना सफर में ठहराव नहीं, बल्कि अवसर की खिड़की है। हर कार में बैठा पैसेंजर उसके लिए संभावित ग्राहक है। इसलिए वह पहली कार के पास रुकता है और धीरे से खिड़की खटखटाता है। अंदर बैठा व्यक्ति दूसरी ओर देखने लगता है। वह अगली गाड़ी पर जाता है। वहां एक आदमी फोन पर व्यस्त है। उसके पीछे वाली कार में एक कपल बातचीत में लगा है और विंडो से झांकते उस छोटे-से चेहरे पर ध्यान तक नहीं देता। कोई सिर हिलाकर मना कर देता है। कोई झुंझलाते हुए उसे हटने का इशारा करता है। कई लोग ऐसा दिखाते हैं, जैसे उन्होंने उसे देखा ही न हो। उसने किसी के कहे बिना ही 'ना' सुन लिया है, फिर भी वह आगे बढ़ता है। सिग्नल के ग्रीन होने में कुछ ही सेकंड बचे होते हैं तो वह वेऽ लिए ये खूबसूरत फूल खरीदना चाहेंगे?' उसकी आवाज में उम्मीद, जल्दबाजी और थोड़ी निराशा भी होती है। उसे पता है कि समय उसके खिलाफ है। लाइट ग्रीन होते ही कारें बढ़ जाएंगी और अगले रेड सिग्नल तक के लिए उसका मौका खत्म हो जाएगा। अगर गाड़ी में बैठा व्यक्ति मना कर देता है तो वह हाथ में पकड़े गुलाबों को देखता है। शायद उसे चिंता होती है कि गर्मी और धूल में ये फूल कितनी देर ताजे रहेंगे। शायद वह सोचता है कि किसी के खरीदने से पहले उसे और कितने सिग्नल पार करने होंगे। एक पल के लिए उसके चेहरे पर निराशा भी दिख सकती है। लेकिन फिर वह खुद को संभालता है, अगली कार की ओर मुड़ता है और एक बार फिर कोशिश करता है। पैरेंट्स के तौर पर हम अपने बच्चों को जीत के लिए तैयार करने में वर्षों लगा देते हैं। हम उनसे कहते हैं कि ज्यादा अंक लाएं, बेहतर प्रदर्शन करें, एडमिशन सिक्योर करें और इंटरव्यू में सफल हों। लेकिन क्या हम उन्हें उन लोगों के लिए भी तैयार करते हैं, जो उन्हें मना कर देंगे; वो अवसर, जिन्हें वो खो देंगे और वो सपने, जो पहली कोशिश में पूरे नहीं होंगे? जिंदगी हर बार 'हां' नहीं कहती। आत्मविश्वास खोए बिना 'ना' सुनना सीखना जिंदगी के सबसे कीमती सबकों में से एक हो सकता है। इस सिनेरियो में हम अपने बच्चे को सिखा रहे हैं कि उस लड़के को दिखाने का मकसद यह बताना नहीं कि वह फूल बेचने के लिए कितनी मेहनत कर रहा है, बल्कि यह सिखाना है कि रिजेक्शन को कैसे स्वीकार करें और दोबारा कोशिश करने की हिम्मत कैसे जुटाएं। बेशक, किसी बच्चे को रोजी-रोटी कमाने के लिए व्यस्त सड़कों पर जान जोखिम में नहीं डालनी चाहिए। उसकी परिस्थितियां इस लायक हैं कि हम उसके प्रति करुणा दिखाएं और समाज उस पर ध्यान दे। लेकिन जो दृढ़ता वह दिखाता है, वो हमें सिखा सकती है कि रिजेक्शन का सामना कैसे करें। फंडा यह है कि अगली बार जब आपका बच्चा किसी परीक्षा में फेल हो जाए, किसी कॉम्पीटिशन में विफल हो या नौकरी का मौका गंवा बैठे तो उसे इंतजार करती उन कारों के बीच खड़े उस लड़के की याद दिलाएं। उसे सिखाएं कि एक इनकार किसी की अहमियत कम नहीं करता। एक झटके का मतलब सफर का अंत नहीं होता। एन. रघुरामन

## आज के बिशु और सूरज कल के वेलुसामी बन सकते हैं

'गुड मॉर्निंग स्टूडेंट्स, आप सभी की तरह हर एडमिशन सीजन में हजारों स्टूडेंट्स अपने साथ किसी बैकपैक से कहीं अधिक बड़ी चीज लेकर विश्वविद्यालयों में प्रवेश करते हैं। कुछ अपने उन पैरेंट्स के सपने लाते हैं, जो कभी क्लास में गए ही नहीं। कुछ ऐसे परिवारों की उम्मीदें लाते हैं, जिनमें कभी किसी ने ग्रेजुएशन गाउन नहीं पहना। और कई ऐसी जिम्मेदारी के साथ आते हैं, जिसे उन्होंने कभी चुना ही नहीं। अगर आपके साथ भी ऐसा ही है तो मेरी बात याद रखिएगा। आप महज एक डिग्री शुरू नहीं कर रहे हैं। आप परिवार के इतिहास का एक नया चैप्टर शुरू कर रहे हैं।' इंदौर में गुरुवार सुबह मैंने अपना लेक्चर ऐसे ही शुरू किया। जब मैंने उनसे पूछा कि आपमें से कितने ऐसे हैं, जो परिवार में पहली बार यूजी कोर्स में दाखिला ले रहे हैं तो कई ने हाथ उठा दिए। तब मैंने उन्हें एक ऐसे व्यक्ति की कहानी सुनाई, जिनका जन्म तमिलनाडु के नमक्कल जिले के एक छोटे किसान परिवार में हुआ था। इस परिवार के लिए जिंदगी जीना महत्वाकांक्षाओं से कहीं ज्यादा मायने रखता था। उनके पिता पहली कक्षा के बाद ड्रॉप-आउट हो गए थे। मां कभी स्कूल नहीं गईं। उन्हें नोट गिनने में भी मुश्किल होती थी। घर में किताबें दुर्लभ थीं। बिजली नहीं थी। कोई मार्गदर्शक नहीं था। परिवार में कोई भी ऐसा नहीं था, जो एल्जेब्रा, फिजिक्स या करियर चॉइस के बारे में समझा सके, क्योंकि पहले उस राह पर कोई चला ही नहीं। वे बिना किसी कोचिंग और परिवार की सहायता के सरकारी स्कूल में पढ़े थे। जब वे मद्रास (अब चेन्नई) में एंट्रेंस एग्जाम देने गए तो शिक्षकों ने उनसे कहा कि सिर्फ परीक्षा पर ध्यान देना, कर्मचारियों का नेतृत्व करते हैं, जो पूरे भारत में पसंद की जाने वाली गाड़ियां बनाते हैं। इनमें स्कॉर्पियो, एक्सयूवी-300, एक्सयूवी-700 और थार-रॉक्स शामिल हैं। अब 2026 में चलते हैं। असम के तिनसुकिया जिले



दूसरों के कपड़ों पर नहीं। उन्होंने वैसा ही किया और लौट आए। कुछ हफ्तों बाद एक रात जब केरोसिन लैंप बुझ गए तो उनकी मां ने कहा कि तुम्हारे लिए एक चिट्ठी आई थी, जिसे छत के नीचे बांस में खोंसकर रखा है। उन्होंने पत्र खोला तो वह मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एमआईटी) में ऑटोमोबाइल इंजीनियरिंग का एडमिशन लेटर था। वर्षों बाद वही फर्स्ट-जनरेशन ग्रेजुएट आर. वेलुसामी ऑटोमोटिव टेक्नोलॉजी एंड प्रोडक्ट डेवलपमेंट के प्रेसिडेंट बने। आज वेलुसामी उन हजारों में बिशु लिम्बू ने केरोसिन लैंप की मद्धिम रोशनी तले नीट की तैयारी की थी, क्योंकि उनके घर में न भरोसेमंद बिजली थी, न इंटरनेट। उनके पिता छोटे किसान हैं। उनकी मां एक-एक पैसा संभालकर खर्च करती थीं। लेकिन बिशु ने यह मानने से इनकार किया कि डॉक्टर का सफेद कोट सिर्फ अमीर परिवारों के बच्चों के लिए होता है। उन्होंने नीट-2026 में 720 में से 610 अंक हासिल किए और अब मेडिकल कॉलेज में दाखिले की तैयारी कर रहे हैं। अब राजस्थान के बूंदी जिले के कापरेन गांव में सूरज सैनी से मिलने चलते हैं। वे 12वीं तक हिंदी मीडियम स्टूडेंट रहे। छुट्टियों में परिवार की मदद के लिए वे गांव के घरों में पुताई करते थे। 12वीं तक वे नीट के बारे में जानते तक नहीं थे, क्योंकि परिवार में पहले कोई उस रास्ते पर नहीं चला था। पहले अटेम्प्ट ने उन्हें सिखाया कि सही दिशा के बिना प्रयास काफी नहीं होता। उन्हें सही गाइडेंस मिला, अथक मेहनत की और 583 अंक हासिल कर सरकारी मेडिकल कॉलेज में सीट हासिल कर ली। वर्षों की पढ़ाई, अनुशासन और लगातार मेहनत से कल आप भी दूसरे वेलुसामी बन सकते हैं- जो प्रोडक्ट्स बनाए, कंपनियों का नेतृत्व करे, रोजगार पैदा करे और हजारों की प्रेरणा बने। हर सफल परिवार में कोई ऐसा जरूर होता है, जिसने पहला ग्रेजुएट बनने का साहस किया था। अगर इस साल आप परिवार के पहले ग्रेजुएट बनने के लिए कॉलेज में प्रवेश ले रहे हैं, तो आपको लग सकता है कि आपका सबसे बड़ा लक्ष्य डिग्री हासिल करना है। लेकिन ऐसा नहीं है। आपका असली लक्ष्य ऐसा इंसान बनना है, जिसकी ओर देखकर आपके छोटे भाई-बहन कहें कि 'अगर वह ऐसा कर सकता है, तो मैं भी कर सकता हूं।' फंडा यह है कि आपके एडमिशन लेटर पर सिर्फ आपका नाम होता है, लेकिन उससे बनने वाला भविष्य पूरे परिवार का होता है। आप सिर्फ एक स्टूडेंट नहीं हैं, बल्कि ऐसे एक्सप्लोरर हैं- जो बिना नक्शे के किसी जंगल से अपना रास्ता बना रहे हैं। एन. रघुरामन

## आप कैसे हैं? जिंदगी को 'मेंटेन' कर रहे हैं या 'बदल' रहे हैं?

मैंने उनसे पूछा कि 'आप कैसे हैं?' वर्माजी बड़े खिन्न अंदाज में बोले कि 'मुझे लगता है कि मेरी 'टू-डू-लिस्ट' मेरे दुनिया से जाने के बाद भी खत्म नहीं होगी।' उन्होंने अपने साथियों की शिकायत की, जो ऑफिस में उनका समय खराब करने में लगे रहते हैं। इसलिए वर्माजी खुद को ओवरलोडेड महसूस करते और हमेशा तनाव में घर लौटते थे। ये 6 महीने पुरानी बात है। इसीलिए शाम को परिवार के साथ जो समय मिलता, वो भी खराब हो जाता था। उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या करूं? मैंने उन्हें एक लाइन की सलाह दी- 'एक 'नॉट-टू-डू लिस्ट' बनाना शुरू कीजिए।' बड़ी मासूमियत से वर्माजी ने पूछा कि 'आपका मतलब है कि पुरानी 'टू-डू-लिस्ट' के साथ मैं यह नई लिस्ट भी जारी रखूं?' उनके बच्चों जैसे सवाल पर मैं मुस्कुराया और कहा, 'आप 'हैम्स्टर-व्हील' लाइफ में फंसे हुए हैं, इसलिए आपको क्लाउडिया हैमंड की किताब 'ओवरव्हेल्म्ड: वेज टू टेक द प्रेशर ऑफ' पढ़नी चाहिए।' 'हैम्स्टर-व्हील' लाइफका मतलब है ऐसी दिनचर्या, जिसमें आप दिन-रात काम करते हैं और बेहद व्यस्त रहते हैं, लेकिन असल में कभी ठोस प्रगति



नहीं कर पाते और न ही किसी नई दिशा में बढ़ पाते हैं। इस रविवार वे मेरे घर आए और उस एक छोटी-सी टिप के लिए मुझे धन्यवाद दिया। 'हैम्स्टर-व्हील' लाइफ का अर्थ अनिवार्य तौर पर बहुत ज्यादा काम करना ही नहीं है। इसका मतलब है असल में जो चीज मायने रखती है, उसके करीब पहुंचे बिना बहुत-सी चीजें बार-बार करते रहना। इससे बाहर निकलने के कुछ व्यावहारिक तरीके यहां पेश हैं। 1 काम करना रोकें, फैसले लेना शुरू करें दिन शुरू करने से पहले उस एक काम की पहचान करें, जो दिन को वास्तव में प्रोडक्टिव बनाएगा। बाकी सब सेकंडरी है। आपकी 'टू-डू-लिस्ट' तीन हिस्सों में बंटी होनी चाहिए। ए. 'डू इट', यानी जिस काम को आपके अलावा कोई और नहीं कर सकता। बी. 'डेलीगेट इट', इसे ही 'नॉट-टू-डू-लिस्ट' कहते हैं। इसमें गैरजरूरी मीटिंग, कॉल, स्क्रॉलिंग, छोटे-मोटे काम और जिम्मेदारियां शामिल कर सकते हैं। सी. 'डिलीट इट' यानी ऐसे काम जो सहकर्मियों को खुश करने के लिए किए जाते हैं, लेकिन यहां दिखाई देते हैं। खुद से पूछें कि 'अगर मैंने यह काम नहीं किया तो क्या होगा?' अगर जवाब है, 'कुछ नहीं', तो उसे डिलीट कर दें। एन. रघुरामन

## हॉस्पिटैलिटी इंडस्ट्री में चमकना है तो अपने काम में 'स्टाइल' लाइए

इन दिनों मैं देखता हूं कि कॉलेज से पास-आउट युवा सूट और टाई के आकर्षण में आकर हॉस्पिटैलिटी इंडस्ट्री में आने की कोशिश करते हैं। लेकिन धीरे-धीरे उन्हें समझ आता है कि यहां ऐसा कोई काम नहीं है, जिसे वे किसी दूसरे से करने के लिए कह सकें, लेकिन खुद न करना चाहें। अचानक-से वे खुद को टेबल से पानी और वाइन के गिलास उठाते और उसे साफ करते हुए पाते हैं। उस समय उनकी आंखें टेबल के बजाय इधर-उधर देखती ज्यादा नजर आती हैं। ऐसा इसलिए, क्योंकि वे नहीं चाहते कि कोई परिचित या परिजन उन्हें यह काम करते हुए देखे। इसमें हैरानी नहीं कि युवाओं में हॉस्पिटैलिटी को कामचलाऊ पेशा माना जाता है, लेकिन यह उनको कई ऐसी महत्वपूर्ण स्किल्स देता है, जो दूसरी इंडस्ट्री शायद ही देती है। आप पूछ सकते हैं कि आत्मसम्मान को ठेस पहुंचाए बिना हॉस्पिटैलिटी इंडस्ट्री में कैसे टिके रहें। मेरा सीधा-सा जवाब है- 'स्टाइल कोशंट' जोड़िए। जापानी मिल्क-बन का उदाहरण लीजिए, जो मीठे, मुलायम और फोटोजेनिक होते हैं। ये जापान ही नहीं, पूरे यूरोप और अमेरिका में भी बेहद सफल हैं। ये बन ऊपर से सुनहरे भूरे और अंदर से बादल की तरह मुलायम होते हैं। ऊपरी तौर पर देखें तो ये मुंबई में किसी चौपाटी के स्टॉल पर पावभाजी के साथ परोसे जाने वाले पाव जैसे दिखेंगे। लेकिन किसी शेफ की फोटोजेनिक नजरों से वही बन उसके बर्गर को कल्ट-बर्गर बना सकते हैं और उसकी कीमत 300फीसदी बढ़ा सकते हैं। मुझे हाई-एंड केक बनाने के आर्ट के बारे में तब पता चला, जब एक मशहूर बेकर ने अभिनेत्री काजोल के लिए बनाए जाने वाले केक पर लिखा जाने वाला हनी ईरानी का मैसेज गलती से मेरे दोस्त को भेज दिया। काजोल ने 5 अगस्त को अपना जन्मदिन मनाया और हनी ईरानी भारतीय सिनेमा की वेटरन एक्ट्रेस और पुरस्कार विजेता स्क्रीनराइटर हैं। उन्होंने यश चोपड़ा की मशहूर फिल्म 'लम्हे' (1991) के लिए अपनी डेब्यू स्क्रिप्ट लिखी थी और बेस्ट स्टोरी का फिल्मफेयर जीता था। मैंने अपने दोस्त से वही केक मुझे भेजने के लिए कहा और यकीन मानिए वह हर तरीके से बिल्कुल अलग था। जो रेस्तरां खाने को लग्जरी अनुभव में बदल पाते हैं, वे दुनिया में सबसे ज्यादा कमाते हैं। अमेरिका का उदाहरण लें। वहां अगर आप किसी हाई-एंड रेस्तरां में टेबल बुक करने की कोशिश कर रहे हैं तो आपको शाम 5 बजे का, या फिर रात 10:30 बजे का ही स्लॉट मिलेगा। 1.5 ट्रिलियन डॉलर की यह इंडस्ट्री पूरे हफ्ते ओवर-क्राउडेड रहती है। और यहां मैं सिर्फ उन लोगों की बात कर रहा हूं, जो बाहर जाकर खाने पर खूब खर्च करते हैं। इन लोगों की इस परेशानी ने नए ऐप्स, मेंबरशिप क्लब्स और बिचौलियों को जन्म दिया है, जो खाने पर अत्यधिक खर्च करने वालों और उनके पसंदीदा रेस्तरां तक पहुंच बनाने के लिए मुकाबला कर रहे हैं। हॉस्पिटैलिटी में स्टाइल महज यह नहीं कि आप क्या पहनते हैं या खाने को कैसे सजाते हैं। यह आपकी भाषा, बॉडी लैंग्वेज और व्यवहार में भी समान रूप से नजर आता है। कोई युवा प्रोफेशनल अगर कैजुअल 'ओके' कहने के बजाय कहता है कि 'बिल्कुल सर, मैं इसका ध्यान रखूंगा,' तो वह अलग इम्प्रेशन छोड़ता है। टेबल के पास खड़े होने, ट्रे उठाने, कुर्सी खींचने, बिना बीच में टोके बात सुनने, बिना घूरे नजरें मिलाने और गेस्ट की ओर पीठ किए बगैर वहां से हटने के आपके तौर-तरीके साधारण सर्विस को भी शानदार बना सकते हैं। आप गिलास भी उठा रहे हैं तो उम्मीद की जाती है कि यह आप उसी गरिमा से करेंगे, जैसे आप फाइव-स्टार भोजन परोसते हैं। सिर्फ सॉफ्टली बोलना ही नहीं, बल्कि काम में अपोलोजेटिक दिखे बिना आत्मसम्मान के साथ चलना भी हॉस्पिटैलिटी प्रोफेशनल की पहचान है। गेस्ट को लगना चाहिए कि आप महज खाना नहीं परोस रहे, बल्कि एक अनुभव दे रहे हैं।

## इजराइल चुनाव

# नेतन्याहू और आइजनकोट दोनों बहुमत से दूर,अरब पार्टियां किंगमेकर

## 19 सीटों पर आगे; 90फीसदी वोट गिने जा चुके

तेल अवीव। इजराइल के चुनाव में प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू और विपक्षी नेता गादी



आइजनकोट, दोनों बहुमत से दूर रह गए हैं। 90.9फीसदी वोटों की गिनती के बाद नेतन्याहू का गठबंधन 53 सीटों और आइजनकोट का विपक्षी गठबंधन 48 सीटों पर आगे है। खबर लिखे जाने तक अरब पार्टियों को कुल 19 सीटें मिलती दिख रही हैं। सरकार बनाने के लिए संसद की 120 सीटों में से कम से कम 61 सीटें जरूरी हैं। ऐसे में अरब पार्टियां किंगमेकर बन सकती हैं। दूसरी ओर, गुरुवार सुबह डबल-एनवेलप बैलेट की गिनती शुरू हो गई है। इन 5 लाख वोटों से संसद की सीटों का अंतिम बंटवारा बदल सकता है। डबल-एनवेलप बैलेट का इस्तेमाल उन लोगों के वोटों के लिए होता है जिन्होंने अपने तय मतदान केंद्र से अलग जगह पर वोट डाला। इनमें सैनिक, राजनयिक, पुलिसकर्मी और विस्थापित लोग शामिल हैं। स्पीकर को हटाने की तैयारी में जुटा आइजनकोट खेमाः- इजराइल में गादी आइजनकोट के नेतृत्व वाला विपक्षी खेमा संसद स्पीकर अमीर ओहाना को पद से हटाने की तैयारी कर रहा है। चैनल 12 की रिपोर्ट के मुताबिक, इसके लिए विपक्षी खेमा अरब पार्टियों का समर्थन जुटाने की कोशिश कर रहा है। ओहाना प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू की लिकुड पार्टी के सदस्य हैं। इस पद के लिए अभी किसी नाम पर सहमति नहीं बनी है। रिपोर्ट के मुताबिक, यिस्राइल बेतेनु पार्टी के सांसद ओदेद फोरर और आइजनकोट की याशर पार्टी के एलेजर स्टर्न के नामों पर चर्चा हो रही है। तीसरे नंबर पर जॉइंट लिस्ट, इस गठबंधन को जानिएः-इजराइल में 85फीसदी वोटों की गिनती के बाद जॉइंट लिस्ट गठबंधन को 12 सीटें मिलती दिख रही हैं। यह इजराइल की अरब आबादी के अधिकारों की बात करने वाला राजनीतिक गठबंधन है। इसमें तीन अलग-अलग पार्टियां शामिल हैं। गठबंधन में अरब नेताओं के साथ यहूदी नेता भी हैं। हदाशः यह वामपंथी पार्टी है। यह अरब और यहूदी नागरिकों की समानता, मजदूरों के अधिकारों और फिलिस्तीन के साथ शांति की वकालत करती है। तालः यह अहमद तिबी की पार्टी है। यह अरब नागरिकों के समान अधिकार, शिक्षा और रोजगार के बेहतर अवसरों और फिलिस्तीनी राज्य की स्थापना का समर्थन करती है। बलदः यह अरब राष्ट्रवादी विचारधारा वाली धर्मनिरपेक्ष पार्टी है। यह इजराइल को ऐसा देश बनाने की वकालत करती है, जहां सभी नागरिकों को समान अधिकार मिलें। इजराइल के कई मीडिया संस्थानों ने दावा किया है कि अरब पार्टी 'राअम' को एक और सीट मिल सकती है। यह सीट जॉइंट लिस्ट से मिलने की बात कही जा रही है। रिपोर्ट के मुताबिक, 91फीसदी वोटों की गिनती के बाद राअम की सीटें 7 से बढ़कर 8 और जॉइंट लिस्ट की सीटें 12 से घटकर 11 हो सकती हैं। हालांकि, दोनों पार्टियों की कुल सीटें 19 ही रहेंगी। लेकिन द टाइम्स ऑफ इजराइल के मुताबिक, सुबह 5:57 बजे तक चुनाव आयोग के आधिकारिक आंकड़ों में कोई बदलाव नहीं हुआ था। दोनों पार्टियों के बीच अतिरिक्त वोटों के समझौते के तहत 19वीं सीट अब भी जॉइंट लिस्ट के खाते में थी। राअम इस सीट से करीब 1,200 वोट पीछे थी।

## सर्बिया में इजराइली दूतावास के बाहर पुलिसकर्मी पर हमला,नाबालिग चाकू लेकर आया

### 'अल्लाहु अकबर' का नारा लगाकर अटैक किया; पुलिस ने मार गिराया

बेलग्रेड। इससे पहले जून 2024 में एक हमलावर ने क्रॉसबो यानी तीर चलाने वाले हथियार से सर्बियाई पुलिस अधिकारी की



गर्दन पर हमला किया था। इजराइल का दूतावास बेलग्रेड के एक महंगे इलाके में स्थित है। इसके पास ही अमेरिकी दूतावास भी है। इजराइली दूतावास की सुरक्षा के लिए पुलिस की एक विशेष यूनिट तैनात रहती है। इसके जवानों के पास ऑटोमैटिक हथियार होते हैं। सर्बिया में चुनाव के बाद अभी नई सरकार नहीं बनीः- सर्बिया में रविवार को संसदीय चुनाव हुए थे। करीब दो साल से चल रहे विरोध प्रदर्शनों के बाद युवाओं के नेतृत्व वाले आंदोलन ने पूर्व राष्ट्रपति अलेक्जेंडर वुचिच के खेमे को हरा दिया। हालांकि, अभी नई सरकार नहीं बनी है। ऐसे में वुचिच और उनके सहयोगियों का पुलिस पर नियंत्रण बना हुआ है। 40 दिन पहले बनी पार्टी, जीतने वालों में एक भी छात्र नहीं:-छात्र गठबंधन 'स्टूडेंट लिस्ट, स्टूडेंट्स विन' पार्टी को चुनाव से महज 40 दिन पहले ही मान्यता मिली थी। इसके बावजूद पार्टी ने जीत हासिल की। हालांकि, जीतने वाले 141 उम्मीदवारों में एक भी छात्र नहीं है। पार्टी ने छात्रों के बजाय एथलीट, किसानों और आम लोगों को चुनाव मैदान में उतारा था। इन उम्मीदवारों का चयन छात्रों ने खुद किया था। चुनाव लड़ने के लिए जरूरी पैसे जुटाने के लिए छात्रों ने क्राउड फंडिंग का सहारा लिया। पार्टी के जीतने वाले उम्मीदवारों में करीब 65फीसदी के पास डॉक्टरेट या उससे बड़ी डिग्री है।

# नेतन्याहू बहुमत से दूर, फिर भी सरकार बना सकते हैं,आइजनकोट के पास भी सत्ता में आने के 3 रास्ते

तेल अवीव। इसके लिए जरूरी नहीं कि अरब पार्टियां



सरकार में शामिल हों। यदि वे मतदान से दूर रहती हैं या सरकार के खिलाफ वोट नहीं देतीं, तो संसद में मौजूद और वोट करने वाले सांसदों के हिसाब से सरकार विश्वास मत जीत सकती है। हालांकि, यह विकल्प सरकार को स्थिरता की गारंटी नहीं देता। बजट, कानून और दूसरे बड़े फैसलों के लिए नेतन्याहू को संसद में समर्थन जुटाना होगा। अगर विरोधी दल एकजुट होकर सरकार के खिलाफ वोट करते हैं, तो उनकी सरकार संकट में पड़ सकती है। आइजनकोट के सामने क्या रास्ते हैं? आइजनकोट के लिए सबसे बड़ी चुनौती यह है कि उनके खेमे की 48 सीटें बहुमत से काफी कम हैं। अरब पार्टियों की 19 सीटें जोड़ने पर नेतन्याहू विरोधी खेमे के पास सैद्धांतिक रूप से 67 सीटें हो सकती हैं। लेकिन कई यहूदी दल अरब पार्टियों के साथ औपचारिक गठबंधन या समझौते के खिलाफ हैं। आइजनकोट के पास भी तीन विकल्प हैं-पहला, वे अरब पार्टियों के समर्थन से सरकार बनाने की कोशिश कर सकते हैं। ये पार्टियां सरकार में शामिल हुए बिना भी विश्वास मत में उनका साथ दे सकती हैं। लेकिन दक्षिणपंथी सहयोगियों की आपत्तियों के कारण यह रास्ता मुश्किल है। दूसरा, वे नेतन्याहू के मौजूदा गठबंधन के कुछ सांसदों को अपने पक्ष में लाने की कोशिश कर सकते हैं। इससे उन्हें बहुमत जुटाने में मदद मिल सकती है, लेकिन इसके लिए उन सांसदों को अपने राजनीतिक सहयोगियों से अलग होने के लिए राजी करना होगा। तीसरा, वे ऐसी अल्पमत सरकार बनाने की कोशिश कर सकते हैं, जिसे संसद में जरूरत के मुताबिक दूसरी पार्टियों का समर्थन मिलता रहे। हालांकि, एविगडोर लिबरमैन जैसे नेताओं ने अल्पमत सरकार के विकल्प पर आपत्ति जताई है। इसलिए इस रास्ते पर भी विपक्षी खेमे में सहमति बनाना जरूरी होगा। आगे क्या होगा? चुनाव के बाद राष्ट्रपति इसहाक हर्जोग अलग-अलग पार्टियों के नेताओं से बातचीत करेंगे और फिर सरकार बनाने के लिए एक नेता को मौका देंगे। दोनों प्रमुख खेमों के बहुमत से दूर होने के कारण गठबंधन की बातचीत अहम होगी। अगर कोई भी नेता सरकार बनाने में कामयाब नहीं होता, तो राजनीतिक गतिरोध बढ़ सकता है और दोबारा चुनाव की नौबत भी आ सकती है। कुल मिलाकर, नेतन्याहू के पास 61 सीटों का गठबंधन न होने के बावजूद सत्ता में बने रहने के विकल्प हैं। वहीं, आइजनकोट के लिए चुनौती यह है कि वे अलग-अलग विचारधारा वाली पार्टियों को साथ लाकर सरकार बनाने का रास्ता निकालें। दोनों नेताओं के लिए संसद में समर्थन जुटाना और उसे बनाए रखना ही सबसे अहम होगा।

## इजराइल चुनाव में 77.7फीसदी मतदान 27 साल के बाद सबसे ज्यादा,नेतन्याहू ने महिलाओं की फोटो के साथ लिखा- मुस्लिम इलाकों में ज्यादा वोटिंग

तेल अवीव। हर पार्टी चुनाव से पहले अपने उम्मीदवारों की एक लिस्ट जारी करती है। अगर किसी पार्टी को 20 सीटें मिलती



हैं, तो लिस्ट में पहले 20 नंबर पर मौजूद उम्मीदवार सांसद बन जाएंगे। चुनाव में 4 बड़े मुद्देः-1. 7 अक्टूबर के हमास हमले की जांचः 7 अक्टूबर 2023 को हमास ने इजराइल पर हमला किया था। इस हमले को रोकने में इजराइली सेना और खुफिया एजेंसियां नाकाम रही थीं। तीन साल बाद भी सरकार ने इस बात की जांच के लिए आयोग नहीं बनाया है कि इतनी बड़ी चूक कैसे हुई। विपक्ष का आरोप है कि सरकार इस हमले को रोकने में नाकाम रही और उसे इसकी जिम्मेदारी लेनी चाहिए। 2. सेना में भर्ती को लेकर विवादः इजराइल में ज्यादातर यहूदियों के लिए सेना में सेवा देना जरूरी है। 1948 में इजराइल बनने के बाद, हरेदी समुदाय के 400 लोगों को यहूदी संस्थानों में पढ़ने के लिए सेना में भर्ती होने से छूट मिली थी। इसका मकसद धार्मिक विद्वानों की पढ़ाई और परंपरा को बचाए रखना था। लेकिन धीरे-धीरे छूट का दायरा बढ़ता गया। इसी छूट को लेकर आज इजराइल में विवाद है। दूसरे समुदाय के लोगों का कहना है कि जब देश युद्ध में है, तब सभी को सेना में सेवा देनी चाहिए। नेतन्याहू को हरेदी समुदाय के लोगों का वोट मिलता है। ऐसे में वे इस छूट को बरकार रखना चाहते हैं। वहीं गादी आइजनकोट का रुख नेतन्याहू से अलग है। वे चाहते हैं कि हरेदी समुदाय के लोगों को भी सेना या नागरिक सेवा में शामिल होना चाहिए। 3. सुप्रीम कोर्ट की ताकत कम करने की कोशिशः गाजा में युद्ध शुरू होने से पहले नेतन्याहू सरकार ने सुप्रीम कोर्ट की ताकत कम करने की कोशिश की थी। यह मुद्दा आज भी नेतन्याहू सरकार और उसके विरोधियों के बीच टकराव की बड़ी वजह है। 4. देश की सुरक्षा और युद्ध कब खत्म होगाः नेतन्याहू ने हमास के खिलाफ पूरी जीत का वादा किया था, लेकिन हमास और लेबनान का हिजबुल्लाह अब भी एक्टिव हैं। नेतन्याहू-आइजनकोट दोनों ने जंग में परिवार खोएः-नेतन्याहूः सेना की कमांडो यूनिट में काम कियाः-नेतन्याहू 1967 में इजराइली सेना में भर्ती हुए थे। उन्होंने सेना की एलीट स्पेशल फोर्स यूनिट 'सायरेत मतकल' में सेवा दी। यह यूनिट खुफिया अभियानों और बंधकों को छुड़ाने जैसे विशेष सैन्य ऑपरेशन्स के लिए जानी जाती है। नेतन्याहू 1972 में सबेना एयरलाइंस के विमान को हाईजैक किए जाने के बाद बंधकों को छुड़ाने के अभियान में भी शामिल थे। नेतन्याहू के बड़े भाई योनातन 1976 में युगांडा के एंटेबे में बंधकों को छुड़ाने के अभियान के दौरान मारे गए थे। वे इस अभियान का नेतृत्व कर रहे थे। आइजनकोटः आम सैनिक से सेना प्रमुख बनेः-आइजनकोट ने 1978 में गोलानी ब्रिगेड में एक आम सैनिक के तौर पर करियर शुरू किया। करीब 38 साल की सेवा के बाद वे 2015 में इजराइल के सेना प्रमुख बने।

इस पद पर वे 2019 तक रहे। सेना प्रमुख के तौर पर उन्होंने सेना की रणनीति और सुरक्षा से जुड़े बड़े फैसलों की जिम्मेदारी संभाली। उनके नाम से जुड़ी सैन्य रणनीति को 'आइजनकोट डॉक्ट्रिन' कहा जाता है। गाजा युद्ध के दौरान दिसंबर 2023 में आइजनकोट के बेटे गाल की मौत हो गई। इसके अगले दिन उनके भतीजे माओर कोहेन आइजनकोट भी दक्षिणी गाजा में लड़ाई के दौरान मारे गए।

## सिंगर नील यंग ने ट्रम्प की टीम पर किया केस,बिना अनुमति गाना बजाने पर मांगे रु95 करोड़,पहले भी किया था मुकदमा

वॉशिंगटन डीसी। इनमें एक मां का अपने बच्चे को छोड़ना, निराशा में खोए नशे के आदी लोग और समृद्धि की छाया में जमा होता कचरा शामिल है। मुकदमे में कहा गया है कि बार-



बार आने वाला कोरस ऐसी आजादी का जश्न मनाने की कड़वी विडंबना पेश करता है, जो साफ तौर पर सभी लोगों को नहीं मिली है। मुकदमे में कहा गया, 'संक्षेप में, यह गाना डोनाल्ड ट्रम्प जिस चीज का प्रतिनिधित्व करते हैं, उसके बिल्कुल उलट है।' यहां कहा गया कि ट्रम्प जानते थे कि यंग ने ऐसा लाइसेंस नहीं दिया है और न ही वह इसे देने वाले हैं। यंग ने 1960 के दशक में करियर शुरू किया थाः-यंग का जन्म 12 नवंबर, 1945 को टोरंटो में हुआ था। उन्होंने अपने करियर में लोक संगीत, रॉक और कंट्री म्यूजिक को एक अलग पहचान दी। उनके गानों में निजी जिंदगी के अनुभव और समाज से जुड़े मुद्दे नजर आते हैं। नील यंग ने 1960 के दशक में विन्निपेग से अपने संगीत करियर की शुरुआत की। शुरुआत में उन्होंने कई छोटे बैंड के साथ काम किया। बाद में वह 1966 में लॉस एंजिल्स पहुंचे। यहां साथ काम किया। इसी दौरान उनका एल्बम 'एवरीबडी नोज दिस इज नोवेयर' रिलीज हुआ। इसके बाद 'आफ्टर द गोल्ड रश' (1970) और 'हार्वेस्ट' (1972) जैसे एल्बम ने उन्हें बड़ी पहचान दिलाई। 'हार्वेस्ट' उनका सबसे सफल एल्बम माना जाता है।यंग ने 'क्रॉस्बी, स्टिल्स, नैश एंड यंग' सुपरग्रुप के साथ भी काम किया। इस ग्रुप का एल्बम 'डेजा वू' 1970 में रिलीज हुआ और काफी सफल रहा। उनका गीत 'ओहायो' 1970 में केंट स्टेट यूनिवर्सिटी में हुई गोलीबारी की घटना के बाद लिखा गया था। यंग ने संगीत के अलावा फिल्मों में भी काम किया। उन्होंने 'बर्नार्ड शेकी' नाम से कई फिल्मों का निर्देशन किया। उन्हें कई ग्रैमी और जूनो अवॉर्ड मिले। 1995 में उन्हें सोलो कलाकार के तौर पर रॉक एंड रोल हॉल ऑफ फेम में शामिल किया गया। 1997 में बफेलो स्प्रिंगफील्ड के सदस्य के रूप में भी उन्हें यह सम्मान मिला।

## अर्नब चक्रवात से आंध्र-ओडिशा में 5 लोगो की मौत,हुआ भारी नुकसान,अब छत्तीसगढ़ में बारिश,बढ़ेंगी ठंड

जयपुर/लखनऊ/भोपाल/पटना। बंगाल की खाड़ी से उठे चक्रवाती तूफान 'अर्नब' के कारण आंध्र प्रदेश और ओडिशा में अब तक 5 लोगों की मौत हो चुकी है। कई इलाकों में पेड़ गिर गए और पुल-सड़कें टूट गईं। चक्रवात के असर से मध्य प्रदेश, राजस्थान, बिहार और उत्तर प्रदेश समेत 15 राज्यों में बुधवार रात से बारिश हो रही है, जो अगले दो दिन जारी रह सकती है।तेज बारिश का अनुमान देखते हुए छत्तीसगढ़ के 12 और ओडिशा के 16 जिलों में गुरुवार को स्कूल बंद हैं।



चक्रवात अर्नब से प्रयागराज भी अछूता नहीं रहा,अलर्ट के बाद हुई बारिश,बढ़ी ठण्ड

ओडिशा में करीब 30 हजार लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया है। चक्रवात अर्नब मंगलवार देर रात करीब 3:30 बजे आंध्र प्रदेश के तट से टकराया था।इस दौरान 125 से 135 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से हवाएं चलीं और भारी बारिश हुई। मौसम विभाग के मुताबिक, चक्रवात अर्नब कमजोर होकर डीप डिप्रेशन में बदल गया है। गुरुवार सुबह तक इसके डिप्रेशन और शाम तक कम दबाव वाले क्षेत्र में बदलने की संभावना है।

## कोलकाता पुलिसः- कपड़े-मेकअप बचाने के चक्कर में भगदड़ जिसमे 19 की हुई थी मौत

कोलकाता। कोलकाता पुलिस ने कहा है कि चोरबागान दुर्गा पूजा पंडाल में बारिश के दौरान कपड़े और मेकअप बचाने के लिए महिलाएं बाहर निकलने वाले गेट



पर जमा हो गई थीं। भीड़ बढ़ने से धक्का-मुक्की हुई और लोग एक-दूसरे के ऊपर गिरने लगे, जिससे भगदड़ मची। यह घटना 17 अक्टूबर की शाम करीब 7:30 बजे हुई थी। भगदड़ में 19 लोगों की मौत हुई। पुलिस अब तक 9 लोगों को गिरफ्तार कर चुकी है। इनमें दो पर पंडाल का एक हिस्सा गिरने की घोषणा कर अफरा-तफरी फैलाने का आरोप है। पुलिस की शुरुआती जांच के मुताबिक, गेट से करीब 11 फीट दूर पहला व्यक्ति गिरा था। पुलिस यह भी जांच कर रही है कि पंडाल में महिला वॉलंटियर और पुलिसकर्मी पर्याप्त संख्या में तैनात थे या नहीं। पंडाल बनाने वाले आर्टिस्ट से भी पूछताछः-पुलिस ने बताया कि पंडाल का एक हिस्सा गिरने की घोषणा कर अफरा-तफरी फैलाने के आरोप में गिरफ्तार दो लोगों की आवाज के सैंपल लेने के लिए अदालत से अनुमति मांगी जा सकती है। पुलिस ने मामले की जांच के दौरान पंडाल के आर्टिस्ट से भी पूछताछ की है। सुरक्षा एजेंसी के रेडियो की जांचः-पुलिस यह भी जांच कर रही है कि भीड़ बढ़ने की जानकारी प्रशासन तक पहुंचने में देरी तो नहीं हुई। पंडाल के आयोजकों ने सुरक्षा के लिए एक निजी एजेंसी रखी थी। उसके कर्मचारियों के पास 'मैनपैक' नाम के पोर्टेबल रेडियो थे।

जांच में पता लगाया जा रहा है कि घटना के समय एजेंसी के कर्मचारी कहां थे, उन्हें भीड़ बढ़ने की जानकारी मिली थी या नहीं और सूचना मिलने पर उन्होंने क्या किया। मैनपैक रेडियो एक ऐसा उपकरण है, जिसे बैग की तरह पीठ पर टांगकर ले जाया जा सकता है। इसका इस्तेमाल सुरक्षा और आपातकालीन सेवाओं में होता है।

## कैंसर का रु80 हजार का इंजेक्शन रु7 हजार में मिलेगा,543 दवाओं के दाम घटे- नई कीमतें 9 नवंबर से लागू होंगी

नयी दिल्ली। देश में कैंसर की 543 दवा ब्रांडों और पैक की कीमतों में बदलाव किया गया है। राष्ट्रीय नेशनल फार्मास्युटिकल प्राइसिंग अथॉरिटी (एनपीपीए) के फैसले के बाद 397 यानी 73फीसदी दवाओं के दाम घटाए गए हैं। इनमें 217 दवाओं की कीमत आधे से भी कम हो गई है। 97 ब्रांड की दवाओं की कीमतों में 70फीसदी से ज्यादा और 50 में 80फीसदी से ज्यादा कटौती हुई है। पांच दवाओं की कीमतों में 90फीसदी से ज्यादा कटौती हुई है। सबसे बड़ी कटौती सैमटेपा इंजेक्शन में हुई है। इसकी कीमत रु80,071 से घटाकर रु7,150 कर दी गई है। पैलबोप्रो दवा के 21 कैप्सूल वाले पैक की कीमत रु40,421 से घटकर रु2,720 हो गई है। सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को एनपीपीए से सवाल किया था कि दवाओं की कीमतों पर लगाम क्यों नहीं लगाई जा रही है। इसके बाद कंपनियों ने नई कीमतें जारी की हैं, जो 9 नवंबर से लागू होंगी। हालांकि, 146 ब्रांड-पैक की कीमतों में कोई बदलाव नहीं हुआ है। सरकार ने 137 एंटी-कैंसर दवाओं के ट्रेड मार्जिन को एमआरपी के 30फीसदी तक सीमित किया है। कुछ महंगी दवाओं के दाम कम नहीं हुएः- कैंसर की कई दवाओं के दाम घटाए गए हैं, लेकिन कुछ महंगी दवाओं की कीमतें पहले जैसी ही हैं। इनमें इम्यूनोथेरेपी की दवा कीट्रूडा भी शामिल है, जिसका इस्तेमाल 21 से ज्यादा तरह के कैंसर के इलाज में होता है। इसकी कीमत अभी भी रु2,16,500 है। ब्रेस्ट कैंसर के इलाज में इस्तेमाल होने वाली रिबोसाइक्लिब की कीमत भी रु24,435 पर बनी हुई है। इसके अलावा टैग्रिसो, टेसेंट्रिक, डार्जालेक्स और इम्फिंजी जैसी दवाओं के दामों में भी कोई बदलाव नहीं किया गया है। पेटेंट वाली दवाओं के दाम घटाना मुश्किल है, क्योंकि ये नई तकनीक और पेटेंट अधिकारों से जुड़ी होती हैं। कीमतें कम होने पर कंपनियां भारत में इनकी सप्लाई घटा या बंद कर सकती हैं।दवाओं पर ज्यादा मुनाफे के मुद्दे पर सुप्रीम कोर्ट में पिछली 3 सुनवाईः- कैंसर और अन्य बीमारियों की दवाओं पर ज्यादा मुनाफा वसूलने के मामले में सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई जारी है। हाल ही में कोर्ट में रु13 हजार के इंजेक्शन को रु1 लाख से ज्यादा में बेचने का मामला भी उठा था। 27 अक्टूबरः पूरा सिस्टम दवा निर्माताओं की मदद कर रहा-सुप्रीम कोर्ट ने दवाओं की अधिकतम खुदरा कीमत और रिटेलर को मिलने वाली कीमतों में भारी अंतर पर सरकार से सवाल किए। कोर्ट ने पूछा कि पूरा सिस्टम दवा निर्माताओं की मदद क्यों कर रहा है। कोर्ट ने कहा कि सरकार की नजरों के सामने यह सब हो रहा है, क्या इसे ऐसे ही बेलगाम चलने देना चाहिए। दोनों मामलों की सुनवाई के बाद सुप्रीम कोर्ट ने अपना फैसला सुरक्षित रख लिया। 12 अक्टूबरः एंटी-कैंसर दवाओं के ट्रेड मार्जिन पर भी सवाल-सुप्रीम कोर्ट ने एंटी-कैंसर दवाओं का ट्रेड मार्जिन एमआरपी के 30फीसदी तक सीमित करने पर केंद्र के जवाब को मुश्किल से कुछ खुश होने लायक बताया था। कोर्ट ने सवाल किया था कि सरकार दूसरी दवाओं के ट्रेड मार्जिन की सीमा तय क्यों नहीं कर सकती। अस्पतालों के कैंसर दवाओं पर भारी मुनाफा जोड़े जाने को लेकर सुप्रीम कोर्ट की कड़ी आलोचना का सामना कर चुके केंद्र ने कहा था कि उसने एंटी-कैंसर दवाओं पर ट्रेड मार्जिन एमआरपी के 30फीसदी तक सीमित करने का अहम फैसला लिया है। केंद्र के मुताबिक, इस फैसले से मरीजों को सालाना करीब 2,500 करोड़ रुपए की बचत होने की उम्मीद है। 29 सितंबरः सुप्रीम कोर्ट बोला-कैंसर दवाओं की ऊंची कीमत नरसंहार जैसीः- इससे पहले सुप्रीम



कोर्ट ने सुनवाई करते हुए केंद्र सरकार से सवाल किया था कि रु2700 की कैंसर की दवा पर एमआरपी रु27,000 क्यों है। कोर्ट ने दवाओं की कीमतों पर नाराजगी जताते हुए कहा कि यह नरसंहार है। कैसे तय होती है दवा की कीमत, 4 पॉइंट-1. ड्रग प्राइस कंट्रोल ऑर्डर (डीपीसीओ) जरूरी दवाओं की कीमत कंट्रोल करता है। 2013 के डीपीसीओ तहत नेशनल लिस्ट ऑफ एसेंशियल मेडिसिन्स में शामिल दवाओं की अधिकतम कीमत सरकार तय करती है। 2. बाजार में बिक रही दवाओं की कीमत के आधार पर जरूरी दवाओं की अधिकतम सीमा तय की जाती है। इससे ज्यादा कीमत पर दवा बेचना गैरकानूनी है। 3. स्वास्थ्य मंत्रालय दवाओं की सुरक्षा, असर और कीमत को देखते हुए जरूरी दवाओं की लिस्ट बनाता है। इसमें देश में आम बीमारियों और लोगों की स्वास्थ्य जरूरतों का ध्यान रखा जाता है। 4. इस लिस्ट की समय-समय पर समीक्षा की जाती है और जरूरत के अनुसार नई दवाएं जोड़ी जाती हैं। जो दवाएं इस सूची में नहीं होतीं, उनकी कीमतों पर सरकार का सीधा नियंत्रण कम होता है। सरकार की ट्रेड मार्जिन रैशनलाइजेशन (टीएमआर) पॉलिसी में खामियां- दवाओं की कीमत में इस कटौती से साफ है कि जेनेरिक दवा कंपनियां मरीजों से भारी मार्जिन वसूल रही थीं। लेकिन सरकार की ट्रेड मार्जिन रैशनलाइजेशन (टीएमआर) नीति में गंभीर खामियां और विरोधाभास हैं। 1. पेटेंट वाले के दाम क्यों नहीं घटेः टीएमआर फॉर्मूले में प्राइस टू स्टॉकिस्ट पर 42.8फीसदी तक मार्जिन की छूट है। दवाएं बेहद महंगी होने के कारण यह मार्जिन रकम के लिहाज से बहुत बड़ा हो जाता है। कैंसर दवाओं की सप्लाई चेन में एक-दो बिचौलिये होते हैं या दवाएं सीधे अस्पतालों को बेची जाती हैं। ऐसे में चंद लोगों को भारी मुनाफा मिल सकता है। पेटेंट दवाओं पर टीएमआर का असर न पड़ने की यह भी एक वजह हो सकती है। 2. मरीजों को राहत देने का मौका गंवायाः मरीज सहायता कार्यक्रमों के तहत मुफ्त दी जाने वाली दवाओं को टीएमआर की गणना से बाहर रखा गया है। इन्हें शामिल करने पर पेटेंट दवाओं की कीमतों में कुछ कमी आ सकती थी। 3. बिचौलियों को भारी मार्जिनः डीपीसीओ के तहत निर्धारित दवाओं पर लागू 16फीसदी मार्जिन की सीमा कैंसर की दवाओं पर भी लागू होतीं, तो मरीजों को ज्यादा राहत मिल सकती थी। 2019 में मार्जिन कैप वाली दवाओं के दामों में अब बड़ी कटौती बताती है कि कंपनियां पहले भी ज्यादा मार्जिन ले रही थीं। 4. एनपीपीए पर सवालः एनपीपीए के पास सप्लाई चेन में कीमतों का ठोस डेटा नहीं है। कंपनियों को बिना स्वतंत्र जांच कीमतें लागू करने और उनकी जानकारी भी खुद देने की छूट दे दी गई है।

## प्रियंका को चांद दिखाने बादलों के पार ले गए निक,विराट ने अनुष्का के लिए व्रत रखा, बॉलीवुड से करवा चौथ के किस्से

मुंबई। करवा चौथ का त्योहार। हाथों में छलनी, चांद का इंतजार और जीवनसाथी के साथ बिताए कुछ खास पल। त्योहार से जुड़ी यादें हर किसी के लिए खास होती हैं। जब बात सेलिब्रिटीज की आए तो इन पलों में कुछ दिलचस्प किस्से भी जुड़ जाते हैं। बॉलीवुड सितारों से लेकर भारतीय राजनीति की जानी-मानी हस्तियों तक, करवा चौथ मनाने के अंदाज अलग जरूर



हैं, लेकिन प्यार, सम्मान और समर्पण की कहानी एक ही है। आइए, तस्वीरों और दिलचस्प किस्सों के जरिए जानते हैं कि मशहूर हस्तियां करवा चौथ कैसे मनाती हैं। करवा चौथ की शाम थी। आसमान में चांद का इंतजार था और हर तरफ पति की लंबी उम्र के लिए व्रत रखने वाली महिलाओं की चर्चा। 2019 में विराट कोहली ने इस परंपरा में प्यार का एक नया रंग भर दिया। इस बार अनुष्का अकेले भूखी-प्यासी रहकर चांद का इंतजार नहीं कर रही थीं। विराट भी उनके साथ व्रत पर थे। दोनों ने एक-दूसरे के लिए उपवास रखा और इस खास पल को तस्वीरों में सहेज लिया। अनुष्का ने विराट को अपना 'फास्टिंग पार्टनर' कहा, तो विराट ने भी साथ व्रत रखने की तस्वीर साझा की। जरा सोचिए, प्यार का मतलब सिर्फ किसी के



लिए दुआ करना नहीं, बल्कि उसकी भावनाओं को समझना और उसके साथ खड़े रहना भी है। अनुष्का के लिए व्रत रखना विराट का यही खूबसूरत इजहार था। जैसे कह रहे हों कि जब जीवन का सफर साथ तय करना है, तो परंपराओं की राह भी साथ ही क्यों न चलें। 2022 में कटरीना कैफ और विक्की कौशल की शादी के बाद पहला करवा चौथ था। कटरीना ने पति की लंबी उम्र के लिए व्रत रखा, लेकिन इस कहानी का सबसे प्यारा हिस्सा यह था कि विक्की भी बिना कहे उनके साथ पूरे दिन भूखे रहे। न कोई फरमाइश, न कोई शिकायत। बस साथ निभाने का अपना-सा अंदाज। शाम ढली, पूजा हुई और फिर शुरू हुआ चांद का इंतजार। कटरीना को लगा कि तकनीक इस मुश्किल को आसान कर देगी। उन्होंने गूगल से पूछा कि चांद कब निकलेगा। जवाब मिला- रात 8:30 बजे।दोनों ने घड़ी देखी। वक्त हुआ, लेकिन आसमान में चांद का कहीं अता-पता नहीं था। अब इंतजार थोड़ा लंबा और बेचैनी थोड़ी ज्यादा होने लगी। तभी विक्की ने मुस्कुराते हुए ऐसी बात कही, जिसने उस पल को यादगार बना दिया। उन्होंने मजाक में कहा, 'चांद गूगल की बात नहीं सुनता, अपनी मर्जी से निकलता है।'बात छोटी थी, लेकिन उसमें साथ होने की मिठास थी। उस पहले करवा चौथ पर चांद के निकलने से पहले ही विक्की ने कटरीना के चेहरे पर मुस्कान ला दी थी। आखिर प्यार भी तो कुछ ऐसा ही है- इंतजार चाहे कितना लंबा हो, साथ में हंसी और अपनापन हो, तो हर पल खास बन जाता है। शादी के बाद पहला करवा चौथ हर जोड़े के लिए खास होता है। परिणीति चोपड़ा और राघव चड्ढा के लिए 2023 का करवा चौथ ऐसा



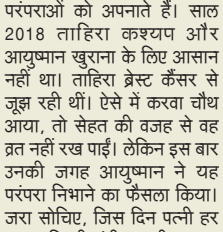
ही एक यादगार मौका था। लेकिन इस त्योहार की उनकी कहानी में एक छोटा-सा पल ऐसा था, जिसने सबका दिल जीत लिया। करवा चौथ पर आमतौर पर महिलाएं अपने हाथों में मेहंदी रचाती हैं। लेकिन परिणीति के पहले करवा चौथ पर राघव ने इस रस्म को अपने अंदाज में खास बना दिया। उन्होंने खुद परिणीति की हथेली पर मेहंदी लगाई। जरा सोचिए, जीवनसाथी के हाथों से रची मेहंदी और उसके पीछे छिपा प्यार-उस पल की खूबसूरती किसी महंगे तोहफे से कम थोड़ी थी! परिणीति और राघव ने अपने इस खास दिन की तस्वीरें सोशल मीडिया पर साझा कीं। तब से दोनों के करवा चौथ सेलिब्रेशन की तस्वीरें उनके चाहने वालों के लिए खास आकर्षण रही हैं। इस छोटी-सी रस्म में रिश्ते की एक खूबसूरत बात छिपी है। प्यार हमेशा बड़े वादों या महंगे तोहफों में ही नहीं दिखता। कभी-कभी वह हथेली पर लगाई गई मेहंदी में भी नजर आता है। रणवीर सिंह अपने प्यार का इजहार करने का कोई मौका नहीं छोड़ते। कभी अपने अंदाज से, कभी अपनी बातों से और कभी ऐसी छोटी-सी बात से, जो दिल छू जाए। दीपिका पादुकोण के लिए उनका करवा चौथ का अंदाज भी कुछ ऐसा ही है।



साल 2021 में रणवीर अपने शो 'द बिग पिक्चर' की शूटिंग कर रहे थे। शो के एक एपिसोड में बातचीत के दौरान उन्होंने एक ऐसा राज खोला, जिसने उनके चाहने वालों के चेहरे पर मुस्कान ला दी। रणवीर ने बताया कि वह दीपिका के लिए करवा चौथ का व्रत रखते हैं। कहानी में एक और प्यारी बात थी। रणवीर ने अपनी हथेली पर मेहंदी से दीपिका के नाम का पहला अक्षर '3' भी लिखवाया था। जरा सोचिए, एक ऐसा शख्स जो अपने रंगीले अंदाज के लिए मशहूर है, वह अपनी हथेली पर अपने प्यार के नाम का पहला अक्षर सजाकर घूम रहा हो। यह किसी फिल्मी दृश्य से कम तो नहीं लगता! रणवीर का यह अंदाज बताता है कि प्यार में परंपराएं निभाने के लिए किसी एक का होना जरूरी नहीं। कभी पति भी पत्नी की खुशी के लिए व्रत रख सकता है, तो कभी उसकी हथेली पर अपने प्यार का नाम सजा सकता है। करवा चौथ की रात थी। प्रियंका चोपड़ा ने पति निक जोनस की लंबी उम्र के लिए व्रत रखा था। सुबह से शाम हो गई, पूजा भी हो गई, लेकिन जिस चांद का इंतजार था, वह बादलों के पीछे छिपा रहा। रात के 10-11 बज गए, फिर भी आसमान साफ नहीं हुआ। अब सोचिए, दिनभर भूखी-प्यासी रहने के बाद कोई पत्नी चांद के दीदार का इंतजार कर रही हो और मौसम साथ न दे, तो मन कितना बेचैन होगा! लेकिन निक के पास इस मुश्किल का एक ऐसा हल था, जो किसी फिल्मी कहानी में ही सूझ सकता है। प्रियंका ने 2025 में बताया था कि उस करवा चौथ पर निक उन्हें अपने विमान से बादलों के ऊपर ले गए, ताकि वे चांद देख सकें और अपना व्रत खोल सकें।



जमीन पर मौसम ने साथ नहीं दिया, तो निक ने आसमान में ही रास्ता खोज लिया। इस प्रेम कहानी का एक और प्यारा पहलू है। प्रियंका की सास हर साल उनके लिए सरगी भेजती हैं, जो करवा चौथ की सुबह व्रत रखने से पहले खाई जाती है। इस कहानी में प्यार सिर्फ चांद दिखाने के लिए विमान में उड़ान भरने में नहीं, बल्कि एक-दूसरे की परंपराओं को अपनाने में भी है। क्योंकि सच्चा साथ वही है, जिसमें आपका अपना विश्वास भी साथी के लिए उतना ही खास बन जाए, जितना आपके लिए। शादी के बाद पहला करवा चौथ हर जोड़े के लिए खास होता है। 2024 में सोनाक्षी सिन्हा और जहीर इकबाल के लिए भी यह मौका यादगार बन गया। सोनाक्षी ने पति की लंबी उम्र के लिए व्रत रखा, लेकिन जहीर ने भी उनका साथ देने के लिए पूरे दिन कुछ नहीं खाया। चांद निकलने का इंतजार चल रहा था। इसी बीच सोनाक्षी के मन में एक सवाल आया। उन्होंने जहीर से पूछा कि आखिर उन्होंने व्रत क्यों रखा है? जहीर ने अपने चिर-परिचित मजाकिया अंदाज में जवाब दिया, 'क्योंकि अगर मैं तुम्हारे सामने खाना खाता, तो तुम मुझे मार डालती!' जहीर की इस बात पर हंसी छूटना लाजिमी था। प्यार में गंभीर वादों के साथ थोड़ी शरारत भी हो, तो रिश्ता और खूबसूरत लगने लगता है। सोनाक्षी ने इस प्यारे पल का वीडियो सोशल मीडिया पर साझा करते हुए लिखा, 'ऐसा पति ढूंढो, जो तुम्हें अकेले भूखा न रहने दे।' उनकी यह छोटी-सी कहानी सिर्फ व्रत रखने की नहीं, बल्कि साथ निभाने की है। जहीर ने भले ही



मजाक में अपनी वजह बताई हो, लेकिन सोनाक्षी के साथ भूखे रहकर उन्होंने उस दिन को खास बना दिया। करवा चौथ पर चांद का इंतजार हर उस जोड़े के लिए खास होता है, जो इस परंपरा को साथ निभाता है। लेकिन सोचिए, आप व्रत रखकर चांद का इंतजार कर रहे हों और आसमान में बादल या किसी वजह से चांद दिखाई ही न दे! शिल्पा शेट्टी और राज कुंद्रा के साथ साल 2018 में कुछ ऐसा ही हुआ। उस साल दोनों करवा चौथ के मौके पर एक इवेंट के लिए श्रीलंका में थे। शाम ढली, रात हुई और चांद निकलने का इंतजार बढ़ता गया। रात के 9:30 बज चुके थे, लेकिन आसमान में चांद के दर्शन नहीं हुए। आखिरकार, मुंबई में मौजूद एक दोस्त ने उनकी मदद की। दोस्त ने चांद की तस्वीर भेजी और उसी तस्वीर को देखकर शिल्पा और राज ने अपना व्रत खोला। कभी-कभी अपनों की भेजी एक छोटी-सी तस्वीर भी दूर देश में बैठे लोगों के लिए कितनी बड़ी खुशी बन जाती है! शिल्पा ने यह भी बताया था कि राज उनके साथ करवा चौथ का व्रत रखते हैं। यानी यह दिन सिर्फ शिल्पा के त्याग का नहीं, दोनों के साथ का उत्सव था। इस कहानी में चांद से ज्यादा खूबसूरत बात वह साझेदारी है, जिसमें पति-पत्नी एक-दूसरे की परंपराओं को अपनाते हैं। साल 2018 ताहिरा कश्यप और आयुष्मान खुराना के लिए आसान नहीं था। ताहिरा ब्रेस्ट कैंसर से जूझ रही थीं। ऐसे में करवा चौथ आया, तो सेहत की वजह से वह व्रत नहीं रख पाईं। लेकिन इस बार उनकी जगह आयुष्मान ने यह परंपरा निभाने का फैसला किया। जरा सोचिए, जिस दिन पत्नी हर साल पति की लंबी उम्र की कामना के लिए व्रत रखती हो, उसी दिन पति उसकी अच्छी सेहत और लंबी उम्र की दुआ मांगने के लिए आगे आए, तो यह पल कितना भावुक कर देने वाला होगा। आयुष्मान ने सिर्फ व्रत ही नहीं रखा, बल्कि अपनी हथेली पर मेहंदी से 'त' भी लिखवाया। यह अक्षर ताहिरा के नाम का पहला अक्षर था। हथेली पर सजा यह छोटा-सा निशान अपने आप में प्यार का एक बड़ा इजहार था। उनका यह कदम उस दौर में ताहिरा के साथ खड़े रहने का एक खूबसूरत प्रतीक बना, जब उन्हें सबसे ज्यादा भावनात्मक सहारे की जरूरत थी। इस कहानी में करवा चौथ का अर्थ सिर्फ रस्म निभाना नहीं, बल्कि रिश्ते की जिम्मेदारी साझा करना भी है। शादी के बाद पहला करवा चौथ हर किसी के लिए खास होता है। रकुल प्रीत सिंह और जैकी भगनानी के लिए भी साल 2024 का यह त्योहार यादगार था, लेकिन इसकी कहानी में प्यार के साथ थोड़ी परेशानी और ढेर सारी शरारत भी थी। जिम में चोट लगने के कारण रकुल की कमर में दर्द था और डॉक्टरों ने उन्हें बेड रेस्ट



की सलाह दी थी। इसके बावजूद उन्होंने लाल कपड़े पहनकर त्योहार मनाया। लेकिन इस दिन की सबसे प्यारी बात यह थी कि जैकी ने भी पत्नी के लिए व्रत रखा। दिन बीतता गया और भूख का एहसास बढ़ने लगा। आखिर जैकी भी कब तक अपने मन की बात छिपाते! उन्होंने मजाकिया अंदाज में लिखा, 'मुझे बहुत भूख लगी है, लेकिन मैं भी नहीं खाऊंगा।' उनकी यह बात सुनकर चेहरे पर मुस्कान आना लाजिमी है।

प्यार में कभी-कभी बड़ी-बड़ी बातें नहीं, बल्कि भूख लगने पर भी साथ निभाने की छोटी-सी जिद दिल जीत लेती है। रकुल ने जैकी को अपना सूरज, चांद और पूरी दुनिया बताया। शायद यही इस कहानी की सबसे खूबसूरत बात है। जिस चांद को देखने के लिए करवा चौथ का इंतजार होता है, रकुल के लिए उनका चांद तो पहले से ही उनके साथ था। शादी के बाद पहला करवा चौथ हर जोड़े के लिए खास होता है। लेकिन 2024 में रणदीप हुड्डा और लिन लैशराम का पहला करवा चौथ थोड़ा अलग था।

## 'शर्मिंदगी हमेशा मेरे साथ रहेगी',जाह्नवी ने माना- 'पेद्दी' में सेक्सुअल असॉल्ट को प्रमोट किया गया बोलीं- मैं इसे रोकने के लिए ज्यादा बोल सकती थी

मुंबई। एक्ट्रेस जाह्नवी कपूर ने फिल्म 'पेद्दी' में अपने किरदार के सेक्सुअलाइजेशन और ऑब्जेक्टिफिकेशन पर बात की। उन्होंने माना कि वह इसे रोकने के लिए ज्यादा मजबूती से आवाज उठा सकती थीं। जाह्नवी ने यह बात 'कॉफी विद करण' सीजन 9 में बातचीत के दौरान कही। शो के होस्ट करण जौहर ने उनसे 'पेद्दी' विवाद के बारे में सवाल किया था। शो में करण जौहर ने कहा, 'पेद्दी विवाद को लेकर क्या हुआ था? मुझे पता है कि इसका आप पर कई तरह से असर पड़ा था। जिस दिन यह हुआ, उस दिन मैंने आपसे बात की थी।' उन्होंने आगे कहा, 'इसे देखने के दो तरीके हैं। एक, लोग इस बात को लेकर आपके साथ थे कि आपके किरदार को सेक्सुअलाइज किया गया। दूसरा पक्ष कह रहा था कि आप सेट पर थीं, तो आपने इसे रोका क्यों नहीं?' करण ने जाह्नवी से पूछा कि इस पूरे मामले को लेकर उन्हें कैसा महसूस हुआ। जाह्नवी ने कहा, 'मुझे बहुत कुछ महसूस हुआ, करण। मैं इस बारे में बात करने से इसलिए हिचक रही थी, क्योंकि कई लोगों ने फिल्म पर बहुत मेहनत की थी। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मुझे क्या कहना चाहिए। मुझे यह भी नहीं पता था कि वास्तव में कहने के लिए कुछ है या नहीं।' 'मुझे अपनी जिम्मेदारी लेनी चाहिए'-जाह्नवी ने यह भी कहा, 'मेरे हिस्से की जिम्मेदारी लेना जरूरी है। उस पूरे विवाद में मेरी जितनी भी भूमिका थी, उसकी जिम्मेदारी मुझे लेनी चाहिए। ऐसे नैरेटिव का समाज पर नेगेटिव असर पड़ सकता है। खासकर मेरे जेंडर यानी महिलाओं पर इसका असर हो सकता है।' उन्होंने कहा, 'यह बात मेरे जमीर पर भारी है। इस बात की शर्मिंदगी मेरे साथ हमेशा रहेगी।' 'मैं ज्यादा जोर से आवाज उठा सकती थी' जाह्नवी ने कहा कि वह इसे लेकर ज्यादा बड़ा मुद्दा बना सकती थीं।



उन्होंने कहा, 'क्या मैं और कुछ कर सकती थी? क्या मैं ज्यादा सतर्क रह सकती थी? क्या मैं इसे लेकर ज्यादा जोर से आवाज उठा सकती थी? इन सभी सवालों का जवाब सौ फीसदी हां है।' जाह्नवी ने कहा, 'क्या यह प्रॉब्लम वाली बात थी? क्या इसमें बहुत ज्यादा ऑब्जेक्टिफिकेशन था? क्या इसने कहानी के लेवल पर सेक्सुअल असॉल्ट को प्रमोट किया? हां।' उन्होंने कहा, 'अब मैं सिर्फ यह सुनिश्चित कर सकती हूं कि ऐसा दोबारा न हो।' 'डायरेक्टर की बात मानना प्रोफेशनल जिम्मेदारी लगता है' जाह्नवी ने कहा कि वह अपनी बात रखते हुए ऐसा नहीं दिखना चाहतीं कि वह जिम्मेदारी किसी और पर डाल रही हैं। हालांकि, उन्होंने बताया कि एक्टर्स कई बार डायरेक्टर के निर्देशों का पालन करने की स्थिति में होते हैं। उन्होंने कहा, 'मैं यह बात इसलिए नहीं कह रही कि जिम्मेदारी किसी और पर डाल दूं। लेकिन आप जानते हैं कि यह कैसा होता है। आपको लगता है कि डायरेक्टर जो कह रहे हैं, आपको वही करना है। आपको प्रोफेशनल रहना होता है। आपको डायरेक्टर की बात सुननी होती है।' उन्होंने यह भी बताया कि स्क्रिप्ट में हर बार यह साफ नहीं होता कि सीन पर्दे पर कैसा दिखेगा। जाह्नवी ने कहा, 'स्क्रिप्ट में अक्सर यह नहीं लिखा होता कि कैमरा एंगल क्या होंगे। बहुत कम ऐसा होता है कि पूरी तरह बाउंड स्क्रिप्ट आपके पास हो।' उन्होंने कहा, 'इसलिए मैं उपलब्ध जानकारी के आधार पर चीजों को कम समस्याग्रस्त बनाने की कोशिश कर रही थी।' जाह्नवी ने कहा, 'जब-जब मुझे किसी चीज की जानकारी मिलती थी, मैं उसी समय उसे बेहतर बनाने की कोशिश करती थी।' 'मुझे अपनी प्रिविलेज का फायदा उठाना चाहिए था' जाह्नवी ने माना कि वह प्रिविलेज वाली स्थिति से आती हैं। उन्होंने कहा, 'लेकिन इसके साथ ही मुझे अपने हिस्से की जिम्मेदारी भी लेनी होगी। मैं प्रिविलेज वाली जगह से आती हूं।' जाह्नवी ने कहा, 'मुझे इस प्रिविलेज का फायदा उठाना चाहिए था।वैसे भी प्रिविलेज वाली होने के लिए मुझे आलोचना झेलनी ही है, इसलिए मुझे इसका इस्तेमाल करना चाहिए था।' क्या था 'पेद्दी' विवाद? 'पेद्दी' में जाह्नवी कपूर के किरदार अचियम्मा को दिखाने के तरीके पर कई दर्शकों ने सवाल उठाए थे। दर्शकों ने किरदार के सेक्सुअलाइजेशन और ऑब्जेक्टिफिकेशन को लेकर चिंता जताई थी। फिल्म में किरदार के ट्रीटमेंट को लेकर यह आलोचना भी हुई कि कुछ सीन सेक्सुअल असॉल्ट को सामान्य या सही दिखाते नजर आ सकते हैं। इसके बाद निर्देशक बुच्ची बाबू सना ने सार्वजनिक तौर पर माफी मांगी थी। उन्होंने कहा था कि टीम का महिला किरदारों का अपमान या ऑब्जेक्टिफिकेशन करने का कोई इरादा नहीं था। थिएट्रिकल कट में विवादित सीन हटा दिए गए या उनमें बदलाव किया गया था।

## तमन्ना ने अन्नू कपूर के कमेंट पर दिया रिएक्शन,बोलीं- मैं इन चीजों पर ध्यान ही नहीं देती,अन्नू ने बॉडी पर दिया था आपत्तिजनक बयान

मुंबई। एक्ट्रेस तमन्ना भाटिया ने अन्नू कपूर के 'दूधिया बदन' वाले कमेंट पर पहली बार



रिएक्शन दिया। उन्होंने कहा कि वह ऐसी बातों के बजाय अपने काम पर ध्यान देती हैं। एनडीटीवी के एक इवेंट में तमन्ना से उनके रंग और बॉडी पर हुई टिप्पणियों के बारे में पूछा गया। एक्ट्रेस से यह भी पूछा गया कि क्या वह चाहती हैं कि दर्शक उन्हें सिर्फ स्क्रीन प्रेजेंस और बोल्ड इमेज से अलग देखें। उनसे हालिया फिल्मों को इमेज बदलने की कोशिश के तौर पर भी सवाल किया गया। तमन्ना ने कहा कि एक क्रिएटिव व्यक्ति के लिए सुनना जरूरी है। इसके साथ यह समझना भी जरूरी है कि किस बात को रखना है और किसे नजरअंदाज करना है। तमन्ना ने कहा, 'आप भी एक महिला हैं, इसलिए समझ सकती हैं कि अगर हम ऐसी बातों को महत्व देने लगें, तो शायद जिंदगी में आगे बढ़ पाएंगे।' उन्होंने आगे कहा, 'मैं इन चीजों पर ध्यान ही नहीं देती। मैं अपने काम पर ध्यान देती हूं। मैं उस चीज पर ध्यान देती हूं, जिसे बनाना चाहती हूं। मैं अपने एक्टिंग करियर पर ध्यान देती हूं।' तमन्ना ने अपने काम करने के तरीके पर भी बात की। उन्होंने कहा, 'मेरे हिसाब से मैं अपना काम सेवा की तरह करना चाहती हूं।' उन्होंने कहा, 'मैं ऐसा करती भी हूं। शायद इसी वजह से मेरा काम लोगों तक पहुंचता है, क्योंकि कहीं न कहीं यह सही जगह से आता है।' क्या है पूरा मामला:-दरअसल, पिछले साल शुभंकर मिश्रा के साथ बातचीत

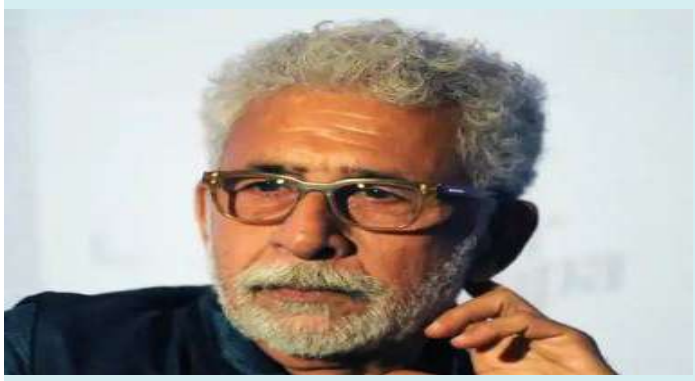


में अन्नू कपूर ने फिल्म 'स्त्री 2' के सुपरहिट गाने 'आज की रात' को लेकर बात की थी। शुभांकर ने अन्नू से पूछा था कि क्या उन्हें यह गाना पसंद आया। उन्होंने यह भी कहा था कि वह तमन्ना को पसंद करते हैं। इस पर अन्नू ने कहा था, 'माशाअल्लाह, क्या दूधिया बदन है।' उन्होंने आगे कहा था, 'बहन, अपने गाने से, अपने शरीर से, अपने दूधिया चेहरे से हमारे बच्चों को सुलाती हैं... बहुत अच्छी बात है।' अन्नू ने कहा था, 'यह देश पर कृपा होगी, अगर हमारे देश के बच्चे अच्छी और स्वस्थ नींद सोएं।' उन्होंने आगे कहा था, 'अगर और भी कुछ इच्छा है, तो भगवान उन्हें समर्थ करें कि उनकी इच्छा पूरी हो। यह मेरा उनके लिए आशीर्वाद है।' अन्नू कपूर ने बाद में अपने बयान पर सफाई दी थी:-अन्नू कपूर के कमेंट को लेकर उनकी ट्रोलिंग हुई थी। इसके बाद कपूर ने अपने कमेंट पर सफाई दी थी। सिद्धार्थ कनन को दिए इंटरव्यू में कपूर ने कहा था, 'लोगों ने मुझे गालियां दीं, खूसट बूढ़ा और सठिया गया जैसी बातें कहीं। मेरा कहना सिर्फ इतना है कि अगर मैं 'दूधिया बदन' कहता हूं, तो बवाल मच जाता है, लेकिन अगर यही बात इंग्लिश में 'मिल्की बॉडी' कही जाए, तो किसी को कोई परेशानी नहीं होती।' अपनी सफाई के दौरान अन्नू ने यह भी कहा था कि अगर तमन्ना भाटिया खुद उनसे इस बारे में पूछेंगी, तो वे अपनी बात पर कायम रहेंगे।

उन्होंने कहा था, 'अगर तमन्ना को मेरी बात बुरी लगी है, तो मैं उनके पैर छूने के लिए भी तैयार हूं। अगर एक 71 साल का आदमी उनके पैर छुएगा, तो वे क्या कहेंगी? मेरा इरादा बिल्कुल साफ है और मुझे अपनी सच्चाई पता है।' अन्नू कपूर गूगल पर ट्रेंड कर रहे हैं।

## 'आप गूंगे बनकर बैठ जाते हैं',नसीरुद्दीन शाह के सरकार विरोधी बयान के बाद भड़के पुनीत इस्सर,परेश रावल बोले- सबको अपनी राय रखने का अधिकार

मुंबई। सीनियर एक्टर नसीरुद्दीन शाह के सरकार विरोधी बयान के बाद एक्टर पुनीत इस्सर उन पर भड़क गए। उन्होंने कहा कि अगर उन्हें



सरकार पसंद नहीं है, तो चुनाव लड़कर उसे हराएं। मंगलवार को शाह ने खुद को गर्व से 'दिमागी नक्सल' बताया था। उन्होंने बीजेपी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार पर शिक्षा व्यवस्था को कमजोर करने और युवाओं का हौसला तोड़ने की कोशिश करने का आरोप लगाया था। 'पहली बात तो यह है कि नसीरुद्दीन शाह जी हमारे सीनियर हैं, हमारे टीचर रह



चुके हैं, आदरणीय हैं और बहुत ही बेहतरीन कलाकार हैं, लेकिन मेरा सिर्फ यह कहना है कि जब आप कोई बात करते हैं, तो सिलेक्टिव बात नहीं करनी चाहिए। आप दुनिया और हिंदुस्तान के कितने मुद्दों पर मूकदर्शक बने रहते हैं। आप गूंगे बनकर बैठ जाते हैं, तब तो आप बात नहीं करते। आप हर चीज का जवाब एकतरफा देते हैं। आप लेफ्टिस्ट सोच और नक्सली विचारधारा वाले वामपंथियों की सोच के हिसाब से जवाब देते हैं।' इस्सर ने शाह पर चुनिंदा मुद्दों पर बोलने का आरोप लगायाः- इस्सर ने नसीरुद्दीन शाह से कहा, 'इन 'टुकड़े-टुकड़े' गैंग और जेएनयू के लोगों को देखिए। जब हमारे देश में दोषी ठहराए गए अपराधियों और इस समय जेल में बंद आतंकियों की बात आती है, तो वे उनकी रिहाई की मांग करते हैं और उनके पक्ष में बोलते हैं। अगर आप ऐसे लोगों का समर्थन करते हैं, तो इसका मतलब भारतीय होने से क्या है?' इस्सर बोले- 'सरकार पसंद नहीं, तो चुनाव लड़ें' इस्सर ने यह भी कहा कि शाह को अपनी राय रखने और सरकार की आलोचना करने का पूरा अधिकार है। हालांकि, उन्होंने यह भी कहा, 'लेकिन अगर आपको सत्ता में आई सरकार पसंद नहीं है, तो राजनीतिक मैदान में उतरिए। चुनाव लड़िए, जीतिए और इस सरकार को हराइए। यह सरकार मनमाने तरीके से सत्ता में नहीं आई है। देश की जनता ने इसे चुना और निर्वाचित किया है।' वहीं, नसीरुद्दीन शाह की टिप्पणी को लेकर परेश रावल ने कहा, 'नसीर भाई की अपनी राय है। मैं उसके बारे में कुछ नहीं बोल सकता। सबको हक है कि वो जो फील करते हैं, वो बोलें।' जामिया और एसआरएफटीआई के छात्रों के समर्थन में बोले थे शाह- नसीरुद्दीन शाह ने मंगलवार को अपने फेसबुक अकाउंट पर एक वीडियो शेयर किया, जिसमें वो कहते हैं, 'मैं फख्र के साथ कहता हूं, मैं दिमागी नक्सल हूं। दिमागी नक्सल के अलावा मालूम नहीं क्या-क्या लकब (उपनाम) दिए हैं चौकीदार ने मुझ जैसे लोगों को, एंटी-नेशनल, टुकड़े-टुकड़े गैंग और मालूम नहीं क्या-क्या।' उन्होंने आगे कहा, 'टुकड़े-टुकड़े गैंग अगर इस मुल्क में कोई है, तो वो ये नाजायज हुकूमत है और मैं इस हुकूमत से एक सवाल पूछना चाहता हूं। और क्या-क्या करोगे तुम? हमारे मुल्क के नौजवानों की हिम्मत को तोड़ने के लिए, शिक्षा संस्थानों को बर्बाद करने के लिए और हमारे लोकतंत्र को खतरे में डालने के लिए, कितना करोगे? तुम और तुमने अपने इर्द-गिर्द जो बेवकूफ, बेईमानों की पलटन इकट्ठी की है, कहां तक जाओगे?' उन्होंने यह भी कहा कि पहले जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी, फिर सत्यजीत रे फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट और अब जामिया मिलिया इस्लामिया में छात्रों पर जो जुल्म किया जा रहा है, वो याद रखा जाएगा। सब याद रखा जाएगा। शाह बोले- युवाओं का हौसला कभी नहीं टूटेगाः-नसीरुद्दीन शाह ने अपने वीडियो में मीडिया और बीजेपी आईटी सेल के लिए अपशब्दों का भी प्रयोग किया था। उन्होंने कहा कि तमाम कोशिशों के बावजूद देश के युवाओं का हौसला नहीं टूटेगा, शिक्षा संस्थान बर्बाद नहीं होंगे और लोकतंत्र खतरे में नहीं पड़ेगा। वीडियो के आखिर में उन्होंने देश के युवाओं को सलाम किया और कहा कि उनकी दुआएं उनके साथ हैं। बीजेपी के लिए अपशब्द कहे थे; झूठी पार्टी बताया थाः-इससे पहले नसीरुद्दीन शाह ने शनिवार को अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी पर एक वीडियो शेयर किया था। अभिनेता ने आरोप लगाया था कि पश्चिम बंगाल चुनाव में जीत के बाद बीजेपी उन लोगों के खिलाफ कार्रवाई कर रही है, जो उसकी विचारधारा और नीतियों से सहमत नहीं हैं। उन्होंने सत्यजीत रे फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट के छात्रों का मुद्दा भी उठाया। शाह ने वीडियो में कहा था कि संस्थान के छात्र प्रशासन से जवाब मांग रहे थे। इसके बदले उन्हें कारण बताओ नोटिस दिए गए, निगरानी में रखा गया और धमकियां दी गईं। उन्होंने यह भी कहा कि छात्रों को हॉस्टल खाली करने के लिए कहा गया है। अभिनेता ने बीजेपी पर आरोप लगाया था कि वह अपने पक्ष में प्रचार को बढ़ावा दे रही है और असहमत लोगों को डराने या उनकी सोच बदलने की कोशिश कर रही है।

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक
डॉ. दीपक अरोरा
द्वारा रामा प्रिंटर्स
53/25/1 ए बेली रोड
न्यू कटरा प्रयागराज
(उ.प्र) 211002 से
मुद्रित एवं सी-41यूपी
एसआईडीसी औद्योगिक
क्षेत्र नैनी प्रयागराज।
संपादक/प्रकाशक
डा.पुनीत अरोरा
मो.न.09415608710
RNINO.UPHIN/2015/63398
www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी0आर0बी0 एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगा।